सोवियत
जन-शिक्षा
का
स्वरूप

हमारा यह मत है कि इस जागरण के
कहीं अधिक यह आवश्यकता हो चली है कि
चलें ।

गत चौदह वर्षों से हमने अपना निर्माण
बहुत अच्छा है और उस पर हमें गर्व है
करने की हम सदैव ही सोचते है ।

यह सर्वविदित है कि सोवियत रूस तथा
जा रहे हैं । हमारे और उनके औसत मानवों में
से पहिले, एक बर्बर देश था और अमेरिका एक
के पास वह सांस्कृतिक बल नही था जो हमारे
रह गये । विज्ञान की असीम शक्ति ने उन्हे
वैज्ञानिक बना लेने में वह कहीं आगे हैं ।

अतः शिक्षा-क्षेत्र के किये गये वैज्ञानिक प्र
समझने की सभी वैज्ञानिक परम्पराएँ—जो
पेस्तालॉजी, हरबार्ट, फ्रौबेल, ड्यूई, मैकरेन्को त
व्यक्त हुईं, हमे समझनी हैं और देखना है कि उ
सकता है ? मूल्यों को अस्पृश्य मानकर त्यागना

हमारी इस द्वितीय पुस्तक के प्रकाशन के
रहे हैं, यथा, "इस बड़े कार्य, मे, जहाँ दूसरे देश
के सहयोग की अपेक्षा है, वहाँ यह भी अत्यन्त
अपने बदलते समाज की बदलती आवश्यकताओं
के व्यक्तित्व के वैज्ञानिक ज्ञान के सहारे, शिक्ष
को आगे रखें । शिक्षा का वैज्ञानिक होना परम
शिक्षा संस्थाएँ, देश-निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण

"शिक्षा में नए प्रयोगों के लिए उत्साही शि
आवश्यक है । अत्यन्त प्रगतिशील देशों के शिक्षा-
वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना और देश की आ
योग को समझा जाना, प्रोत्साहन-वृद्धि का महत्वपू
लिखने का प्राथमिक उद्देश्य, इसी प्रेरणा से अनुप्रा
(

सोवियत शिक्षा पर लिखते समय अनेकों कठिनाइयाँ आईं। पुस्तकें भी आशा से कहीं कम ही मिली और फिर मार्क्सवाद पर लिखना भी कोई सरल कार्य न था। वस्तुतः तीव्रगामी सोवियत शिक्षा का स्वरूप, केवल सौ पृष्ठों में सीमित करना अनुचित लगता है—जैसे गला घोंटने का प्रयत्न किया गया हो। पाठक, पुस्तक को केवल एक संक्षिप्त परिचय-मात्र ही समझें।

प्रस्तुत पुस्तक, शिक्षा-प्रेमियों, विशेषतः अध्यापकों तथा विद्यालयों को प्रेरणादायक सिद्ध होगी और नए पाठकों को अवश्य ही रुचिकर लगेगी, यह हमारा विश्वास है।

पुस्तक-लेखन में हमारा ही श्रम नहीं है वरन् इसमें वह, विमर्श, सहयोग, प्रोत्साहन तथा पुस्तक सहायता भी सम्मिलित है जो अनेकों ही साथियों तथा महानुभावों से मिले। विशेष उल्लेखनीय हैं—प्रो० कैलाशचन्द्र मिश्र, प्रो० ब्रजमोहन दीक्षित, प्रो० ब्रजमोहन चतुर्वेदी, श्री हरिश्चन्द्र देव वर्मा 'चातक', श्री निगम शर्मा, श्री रमेश चन्द्र शर्मा श्री शिवसिंह, श्री गोपालदास तथा श्री राजेन्द्र कुमार।

पुस्तक-प्रकाशन में उसकी सुन्दर सज्जा, छपाई और कार्य में लग्न पर हम विनोद-पुस्तक मन्दिर के आभारी हैं।

सरस्वती मन्दिर
कारवाँ, लोहामण्डी, आगरा
१ मई, १९६१

—नरेन्द्र
—राजेन्द्र

सोवियत जनशिक्षा का स्वरूप

विषय-सूची

प्रथम भाग

द्वितीय
शिक्षा का पूर्व वि

तृतीय भ
शिक्षा का विद्या

चतुर्थ भ
शिक्षा का विशि

पंचम भा
शिक्षा का प्रयु

षष्ठम् भाग
शिक्षा के विशेष

सप्तम् भाग

सोवियत जनशिक्षा का स्वरूप

(तुलनात्मक अध्ययन)

लेखक

प्रो० नरेन्द्र सिंह चौहान

एम० ए० दर्शन, एम० ए० मनोविज्ञान (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

एल० टी०, रिसर्च स्कॉलर (मनोविज्ञान)

मनोविज्ञान प्राध्यापक, आगरा कालेज, आगरा

पूर्व प्राध्यापक, बलवन्त राजपूत कालिज ऑफ एजूकेशन तथा

बलवन्त राजपूत कालिज, आगरा

तथा

प्रो० राजेन्द्र पाल सिंह 'राघव'

एम० ए० अंग्रेजी, एम० ए० एजूकेशन (लन्दन विश्वविद्यालय)

एम० एड० (इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

शिक्षा प्राध्यापक, मेरठ कालिज, मेरठ

पूर्व प्राध्यापक, बलवन्त राजपूत कालिज ऑफ एजूकेशन, आगरा

विनोद पुस्तक मन्दिर

हॉस्पिटल रोड, आगरा

प्रथम भाग

सोवियत देश और उसकी शिक्षा

रूपरेखा—

१—सोवियत जनता का देश।
  (अ) भौगोलिक स्थिति।
  (आ) इतिहास और संस्कृति।

२—शिक्षा की मार्क्सवादी परम्पराएँ।
  (अ) भूमिका।
  (आ) शिक्षा और समाज।
  (इ) शिक्षा और सिद्धान्त।
  (ई) शिक्षा और नैतिकता।

३—सोवियत शिक्षा का विकास।
  (अ) प्राक् क्रान्तीय।
  (आ) उत्तर क्रान्तीय।

४—मार्क्सवादी शिक्षा का प्रयुक्त रूप।
  (अ) लेनिन-तरुण पायोनियर-संगठन।
  (आ) तरुण कम्यूनिस्ट-लीग।

५—सोवियत शिक्षा की व्यवस्था।

हॉस्पिटल रोड, आगरा

प्रथम संस्करण
१९६१

मूल्य : ४.००

मुद्रक :
[illegible] प्रेस आगरा

१

सोवियत जनता का देश

(अ)

म भू-उपग्रह (स्पूत्निक) जहाँ के प्रयोग क्षेत्रों से उड़े, पृथ्वी की आक-
र्ष जिन्हें रोक न सकी; अन्तरिक्ष के असीम वक्ष को चीरते हुए जो
मों की अनवरत यात्रा के पश्चात् चन्द्र और सूर्य लोक में मानव-
। ध्वजा फहरा आए। गत विश्वयुद्ध की अमानवीय धरोहर, हिरोशिमा
ासाकी को ध्वस्त करने वाली अणुशक्ति जहाँ मानव-विकास हेतु
ा प्रबल हस्त पसारती हुई आई और फलस्वरूप महान् हिम विध्वंसक
विश्व में सर्व प्रथम, जिसके श्वेत सागरीय वक्ष पर उतरा। अनेकों
: चालित पनडुब्बियाँ जिनकी विस्तृत सागर जल-राशि में शक्ति क्रीड़ा
उतर गई। असीम मानव-शक्ति के परिचायक जिस देश के विलक्षण
चन्द्रलोक के अब तक अदृष्ट अर्ध भाग का सफल चित्र लिया और
े अनेकों दूरस्थ लोकों में भेजने और लौटाने की सम्भावना साफ्ता
ा दी। जीवनदायिनी, जहाँ की सैकड़ों मित्र-नदियाँ, लाखों साल से
े निर्जल-निर्जन मरुस्थलों की दीर्घ प्यास बुझाने दौड़ पड़ीं और श्रम-
ोन उद्यानों में सिहरता हुआ बसन्त प्रथम बार हँसा। कोटि-कोटि

मार्क्सवादी शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं[1]—

१—जीवन की पूर्णता।
२—मार्क्सवादी दर्शन प्रशिक्षण।
३—वस्तु के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
४—विश्व के प्रति निश्चित दृष्टिकोण।
५—समाज जन्य नैतिकता प्रशिक्षण।
६—मानसिक और शारीरिक विकास।
७—साहस और ईमानदारी पर आधारित भाईचारे वाली सामूहिक प्रवृत्ति का पालन और संवर्धन।
८—श्रम से प्यार और उसकी पूजा।
९—क्रान्तिकारी दृष्टिकोण।

उपर्युक्त उद्देश्यों की स्थापना तथा उनके समुचित प्रकाशन के लिए, हम विशिष्ट विद्वानों के मत रखना चाहेंगे। कम्युनिस्ट शिक्षा पर विचार प्रकट करते हुए कालिनिन ने कहा है, "जिन्दगी बहुत दिलचस्प चीज है और लोगों को सीखने के लिए अनेक विषय हैं। आपको इतना ही करना है कि युवकों की दिलचस्पी उन विषयों में बढ़ा दें जो बहुमूल्य हैं ताकि उनका चौमुखी विकास हो।"[2] आगे चल कर उन्होंने कहा है, "समाजवाद के निर्माण के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता है। लेकिन वे, जो सिर्फ पढ़ते रहते हैं, शिक्षित नहीं समझे जा सकते। शिक्षित वे हैं जो भौतिकवादी दर्शन का पूरा अध्ययन करते हैं, विज्ञान पर अधिकार प्राप्त करते हैं, जो पढ़ा है उस पर मनन करते हैं और यह समझते हैं कि क्रान्तिकारी विचारधारा को क्रान्तिकारी अमल में कैसे लाया जाय।"

सामूहिक भावनाओं और प्रवृत्तियों के सृजन के महत्त्व को समझते हुए ही किशोर पायोनियरों, तथा तरुण कम्युनिस्ट संघ की स्थापनाएँ की गईं। इस विषय में न. क. क्रुप्स्काया[3] का मत विशेष रूप से द्रष्टव्य है, 'किशोर पायोनियर संगठन अपने सदस्यों में सामूहिक भावनाओं का सृजन करना है,

---

१ अ. इ. कालिनिन : कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में।
न. क. क्रुप्स्काया : शिक्षा।
२ अ. इ. कालिनिन : कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में, पृष्ठ १८।
३ न. क. क्रुप्स्काया : शिक्षा।

श्रमवीर देश के लिए जहाँ, विश्व में सबसे कम समय में सबसे अधिक उत्पादन करते हैं, वह रूस देश है।

८६४७५५८ वर्ग मील भूखण्ड पर, विश्व में सबसे विशाल इस देश की सीमाएँ तनी हुई हैं। विस्तृत सीमा की सबसे छोटी दूरी जहाँ उत्तर से दक्षिण २८०० मील तथा पूर्व से पश्चिम ५६०० मील है। २६२०० मील पर्यन्त प्रसरत जिसके विशाल चरणों को अटलान्टिक, आर्कटिक तथा प्रशान्त जैसे महासागर, अपनी दीर्घ ऊर्मियों से नतमस्तक होकर धोया करते हैं। सभी प्रकार की भूमि—पर्वत, मैदान, वन, मरुस्थल—वाले इस विशाल भू-प्रदेश में सभी प्रकार की जलवायु भी उपलब्ध है।

देश में बड़ी बड़ी झीलें हैं। दो झीलें—कैस्पियन और अरल तो इतनी बड़ी हैं कि उन्हें सागर कहा जाता है। १५२००० वर्ग मील पर्यन्त तना हुआ कैस्पियन सागर, विश्व की झीलों में सबसे अधिक विस्तृत है। स्वादिष्ट जल के लिए विश्व प्रसिद्ध बैकाल झील, ५७१० फीट गहरी होने से विश्व की सबसे अधिक गहरी झील है। देश में १५०००० नदियाँ बहती हैं जिनका कुल बहाव १८६१००० मील है। इस विस्तृत बहाव परिमाण में ३१०५०० मील तक जल पोत चलाये जा सकते हैं। सबसे बड़ी तीन नदियाँ हैं—ओब, येनिसी और लेना। सर्वाधिक लम्बी नदी लेना का बहाव २६६१ मील है।

रूस की वन-सीमाओं में अत्यन्त समृद्ध वनस्पति-जगत लहराता है। १५५ परिवारों के पौधों और बीजों की १७००० जातियों से इस जगत की समृद्धि का अनुमान किया जा सकता है। जीव-संसार भी कम समृद्ध नहीं है। इसमें १०० जाति के दुग्धधारी पशु हैं, ७०० जाति के पक्षी हैं, और १५०० जाति की मछलियाँ हैं।[1]

खनिज पदार्थों के परिमाण के अनुसार भी यह देश विश्व में सबसे अधिक समृद्ध है। कोयला, तेल, कच्चा लोहा, पोटाश, कच्चा मैंगनीज, टिन और अन्य खनिज के उत्पादन में रूस विश्व के सर्वश्रेष्ठ देशों में से है यद्यपि इन खनिजों का कई जगह अभी सर्वेक्षण तक नहीं हुआ है।[2]

देश में १५ राज्य हैं और १०० भाषाएँ बोलने वाले, १९५९ की जन-गणनानुसार २०८८२६००० व्यक्ति रहते हैं। चीन तथा भारत के बाद,

1 M. Serone. Facts & Figures About USSR
2 Hewlett Johnson. The Socialist Sixth of the World, p. 124

या यहाँ की है जो विश्व की सम्पूर्ण जनसख्या का
१९१३ मे केवल १७·६% होने वाली नागरिक
ग्रामीण जनता की तुलना मे, ४३ ४% हो गई।
मिकों मे ४५% नारी श्रमिक हैं। अतः देश निर्माण
त्वपूर्ण योग है।

(आ)

न्म प्राचीन रूस मे ही हुआ[1]। यही राष्ट्र आगे
। बायलोरूसी राष्ट्रों में विभक्त होकर विकसित
रूस, सबसे बड़े और शक्तिशाली राष्ट्रों में से था।
मे विकास हुआ। कथा और कहानियों के रूप मे
। दसवीं शती के आसपास तक लेखनकला तथा
हो चला था। ग्यारहवीं शती के लिखे गये बर्च-
बड़े पुस्तकालय वर्तमान थे और धर्म मठो में विद्या-
कला मे भी आशातीत उन्नति हुई। कीव के सेन्ट
नोवोगोरोद तथा पोलोत्सक की चित्रकारी इसके

न एक राज्य बन चुका था। ईवान पेरेस्वीतोव तथा
न्थ प्रकाशित किये। ईवान फ्योदोरोव ने १५६४
प्रकाशित की। १५५३ में छापेखाने का प्रारम्भ

म्भ मे, देश की अर्थव्यवस्था, स्थल तथा जल-
शिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता हुई। महान् पीटर
विशिष्ट प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजे। विदेशों से
७१५ मे जलीय सेना (मेरीन) अकादमी स्थापित की
तथा संग्रहालय खोले गए। १७०० मे एक नया
१७२५ मे विज्ञान अकादमी स्थापित की गई।
इसके व्यक्तिगत सहयोग और अभिरुचि ने देश मे
न समय मे पिछड़ा रूस विश्व के प्रगतिशील देशों

) : Outline History of the USSR.

इस तथ्य का स्पष्ट प्रतिपादन किया है। वह लिखते हैं, "....इन्सान, जाने या अनजाने अंततः अपने नैतिक विचार अपनी वर्ग स्थिति पर आधारित व्यावहारिक सम्बन्धों से ग्रहण करता है, उत्पादन और विनिमय द्वारा बनने वाले आर्थिक सम्बन्धों के कारण.......नैतिकता सदैव ही वर्ग-नैतिकता रही है, नैतिकता या तो शासकवर्ग के प्रभुत्व और हितों के पक्ष में रही है या जैसे ही शोषित वर्ग शक्तिशाली हो गया, वह शोषितों के भावी हितों का प्रतिनिधित्व करने लगी।"

इसीलिए, "इल्यीच ने कहा था कि नई पीढ़ी को एक ऐसी नयी साम्यवादी नैतिकता का निर्माण करना चाहिए जो निजी हितों को सामाजिक हितों से नीचे का दर्जा दे और लोगों को शिक्षा दे कि वे जागरूक अनुशासित निर्माता तथा संघर्षरत प्राणी बनें।"[1]

शिक्षा में प्राण फूंकना नैतिकता का कार्य है, किन्तु सभी नैतिक मानदण्ड शिक्षा को सजीव नहीं कर पाते। वर्गभेद मुक्त, समाजवादी नैतिकता अत्यन्त जागरूक नैतिकता है। लेनिन की यह धारणा है कि उच्च स्तर तक उठने और श्रम के शोषण से मुक्त होने के लिए मानव समाज की सेवा का उद्देश्य, नैतिकता पूरा करती है।[2]

इसीलिए, समाजवादी नैतिकता की सुरक्षा तथा उसके संवर्द्धन के लिए, शिक्षा में निम्न कार्यक्रम रखा गया है।

१—समाजवादी समाज के लिए उन साहसी नागरिकों को प्रशिक्षित करना जो मातृभूमि को अत्यधिक प्यार करते हैं और दुश्मनों के विरुद्ध उसे सुरक्षित रखने में समर्थ हैं।

२—नागरिक कर्त्तव्यों से भली-भांति विज्ञ कराने को जनता का उचित प्रशिक्षण।

३—सामान्य अधिकारों को पाने के लिए, श्रमिकों को लड़ने में समर्थ बनाना।

४—अनुशासित, सुदृढ़, प्रबल इच्छा शक्ति वाले, ईमानदार साम्यवाद के सक्रिय और पक्के पोषक तैयार करना।

---

१ न. क. क्रुप्स्काया : शिक्षा।
2 Y. N. Medinsky : Public Education in the USSR.

उन्नीसवीं शती के प्रथम चरण में, देश में सामन्तशाही छिन्न-भिन्न होने लगी। पूंजीवादी परम्पराएं विकसित हुईं। १७५५ में मास्को विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था। इस शती के प्रारम्भ में सेन्ट पीटर्स बर्ग, कजान, खारकोव, दोरपत (तार्तू) में विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। १८२८ में, सेन्ट पीटर्स बर्ग में, टेक्नोलॉजी-विद्यालय खोला गया। हर्जन और बेलिन्स्की के भौतिकवादी दृष्टिकोण से प्रभावित रूसी साहित्य यथार्थवादी हो चला। पुश्किन, ग्रीबोयेदोव, लर्मोन्तोव तथा गोगोल के लेखों में, फेदोतोव और इवानोव के चित्रों में, ग्लिन्का के संगीत और शेप्किन की नाट्यकला में, वही यथार्थवाद उभरा और परिपक्व हुआ। द्वितीय चरण में रूसी समाज के विचार तत्व का विकास चेर्नीशेव्स्की और दोब्रोल्युबोव के लेखों में प्राप्त होता है। प्लेखानोव ने मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित सर्वप्रथम ग्रन्थ लिखे। तुर्गनेव, गोन्चारोव, तोल्स्तोय, दोस्तोयेव्स्की, साल्तिकोव, ऊस्पेन्स्की तथा नेक्रासोव की रचनाओं में आलोचनात्मक यथार्थवाद के दर्शन हुए।

बीसवीं शती में एक नए युग का समारम्भ हुआ। १९०५ में प्रथम जन-क्रान्ति हुई। निरंकुश राजशाही को उखाड़ना, सामन्तशाही-अवशेषों को नष्ट करना, कृषक और सामाजिक क्षेत्रों में शोषण के उत्पीड़न को समाप्त करना, इस क्रान्ति के उद्देश्य थे। इसके दो महत्वपूर्ण परिणाम निकले; यद्यपि क्रान्ति असफल रही। प्रथम तो, दबे राष्ट्रों में चेतना आई। भाषा और संस्कृतियों को दबाने वाले नियमों का विरोध आरम्भ हो गया। द्वितीय इससे फारस (१९०५-११), तुर्की (१९०८), चीन (१९११), भारत (१९०५-०८), इण्डोनेशिया (१९०८-१३) में हुई क्रान्तियों को अपूर्व प्रेरणा मिली।[1]

१९१७ में महान् अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति हुई। भूस्वामियों और पूंजीपतियों की सत्ता उखाड़ दी गई। सर्वहारा समाज की सरकार स्थापित हुई और विश्व के छठे भाग में पूंजीवाद को विदा कर दिया गया। मानव का शोषण समाप्त हुआ और मानववाद का मार्ग प्रशस्त किया गया। विश्व साम्राज्यवाद की दीवार में दरार पड़ी और मानव इतिहास में एक नये युग का आरम्भ हुआ। राजनीति और अर्थनीति में मूल परिवर्तन हुए। [illegible] होने लगे। [illegible] में [illegible] और [illegible] के [illegible]। सरकार ने जनता के लिए विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों और

1. George H. Hanna (Ed.): Outline History of the USSR.

ग्रोर निरक्षरता को समूल उखाड़ने का कठोर
की ग्रावश्यकता पूर्ति के लिए तथा श्रमिक
, साहित्य, कला, विज्ञान तथा संस्कृति की
ग्रोर उन्मुख किया गया।

विजय करने के लिए शान्ति ग्रौर रचना की
गई। सारे देश का विद्युतीकरण ग्रौर बड़े-
नई ग्रर्थ नीति[2], पंचवर्षीय योजनाएं[3] ग्रादि
ग्रौर नई शिक्षा के प्रकाश मे, ग्रल्प समय में
ग्रभीष्ट की ग्रोर बढ़ चला।

Dec. 1920.
nomic Policy—March 1921.
(1929-32)—completed in 4 Years and
ve Year Plan (1933-1937).

उपस्थित हुआ। दम घोंटने के लिए, शिक्षा-संस्थानों की स्वाधीनता संकुचित कर दी गई। सरकार पूरी तरह छा गई। शिक्षा तथा जन-संगठनों पर प्रतिबंध लग गए। कर्कश स्वरों में चार्टर कहता रहा, "राजनीति में सक्रिय भाग लेना प्रोफेसरों और विद्यार्थियों के हित में नहीं है।"[1]

गति में मन्द सही, फिर भी शिक्षा के माध्यम से जन-जागरण हो चला था। उसमें इन गतिविधियों के प्रति घोर असन्तोष सक्रिय होना चाहता था। विद्यालयों की अल्प संख्या, शिक्षा की नित्य बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने में एकदम असफल सिद्ध हो चली थी। देश के सांस्कृतिक विकास को भी, सरकार ने, यथासाध्य रोकने का प्रयत्न किया था। उन्नीसवीं शती की परिसमाप्ति के समय तक जन चर्चाएँ होने लगीं और १८८४ के चार्टर को बदलने के लिए जनस्वर सशक्त हो उठा।

बीसवीं शती की प्रथम लाल क्रान्ति (१९०५-०७) सरकार पलटने में असफल रही। जनता पर दबाव और दमन बढ़ चले। ज़ार के अत्याचारों से जनता काँप उठी। बड़े-बड़े वैज्ञानिक सेवा-मुक्त कर दिए गए। शिक्षा को बाजार की सस्ती चीजों में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया। फलस्वरूप शिक्षा का स्तर नीचे गिरा। ऐसे लुटे देश के विषय में लेनिन ने १९१३ में लिखा, "यूरोपीय देशों में रूस ही शेष रहा है जो इतना असभ्य है तथा जहाँ जनता की सुविधाओं—शिक्षा, जागरण तथा ज्ञान—का इतना अधिक अपहरण होता है। जन-जागरण पर व्यय के विषय में वह सदैव निर्धन तथा भिखारी रहेगा जब तक कि भूस्वामित्व के भार को फेंक देने को लोग पर्याप्त जाग्रत नहीं होते ?"[2]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शिक्षा जनता से दूर ही रखी गई। पानी और वायु की भाँति जीवन के लिए आवश्यक न माने हुए, अधिकार के रूप में जनता को नहीं सौंपा गया। इसे सरलता से वही पा सके जो स्वामी के अनन्य भक्त थे। शिक्षा का यह पुष्टिमार्गीय रूप वर्ग हितों से ओतप्रोत था।[1]

इस सब से यह अनुमान लगा लेना कि इस काल में वैज्ञानिक, शिक्षाविद, साहित्यकार तथा कलाकार नहीं रहे होंगे, गलत होगा। मिच्यूरिन, लोमोनोसोव

1 Gallin : Training of the Scientists in the USSR.
2 Lenin V. I. : Works, Vol. 19, p. 115.

२

शिक्षा की मार्क्सवादी परम्पराएँ

(अ)

अभी तीन साल पूर्व, इस नवम्बर में मास्को के मैत्री विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में श्री निकिता ख्रुश्चेव ने कहा था, "इस महान शिक्षा को—मार्क्सवाद को—प्रकट हुए कोई सौ साल से ज्यादा समय हो चुका है। तब से यह कामयाबी से आगे बढ़ता जा रहा है और आज आधी से ज्यादा मानव जाति इस शिक्षा के परचम के नीचे जीवन यापन कर रही है। कोई सौ साल से ज्यादा समय से मार्क्सवादी शिक्षा से मतभेद रखने वाले लोग इस "रोग" के निवारण की औषधि ईजाद करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करते आये हैं ताकि इस विस्मयकारी वस्तु को—मार्क्सवादी विचारों के प्रसार को—रोक सकें, जिसे वे खतरनाक मानते हैं। पर हमारी जानकारी के मुताबिक ऐसी रोग निवारक औषधि का अब तक आविष्कार नहीं हो पाया है।"[1]

---

१. निकिता ख्रुश्चेव : मनुष्य उत्पीड़न से जनगणों की मैत्री दृढ़तर हो! (उद्घाटन भाषण) मैत्री विश्वविद्यालय मास्को (१७ नवम्बर '६०) सोवियत भूमि सं० २३ दिसम्बर '६०, पृ० १०।

अकोनिग्रीकोव, विनोग्रादोव, पोपोव, कोटेल्नीकों
चर्नीशेवस्की जैसे उच्चकोटि के वैज्ञानिक,
विशारद, समाज में जीने और उसमें प्राण प्
सरकार से, समाज सेवा का फल, कारावास
निरन्तर ऊर्ध्वगामी जन शक्ति के ये लोग स
निर्माण की सुविधाओं का परिवेश जो इन्हें
नही था।

(आ)

इंगलैण्ड, फ्रान्स और अमेरिका की
स्वाधीनता क्रान्तियों से, गुणात्मक परिमाण
नए युग का सूत्रपात करने वाली, १९१७
मार्क्सवादी चेतना से ओतप्रोत, वर्ग-भेद-ना
और जागरूक जनता को राज्य-शक्ति मिली
के कार्यों में, शिक्षा शक्ति को पहिचानते हुए,
स्थान दिया गया। तत्वों में समाजवादी औ
राष्ट्र के नव जीवन का सन्देश लेकर आई।

शिक्षा का नूतन युग, नई प्रशिक्षण प्र
लेकर आया। संस्कृति के इस पुनरुत्थान
खोल दिए। शिक्षा का माध्यम मातृभाषाएँ
क्षरता समाप्त कर दी गई और अनिवार्य
और नव निर्माण की बड़ी सम्भावनाएँ लेकर
प्रधान संस्कृति ने मस्तिष्क और हाथ के श्र
कर दिया था, समाप्त कर दिया गया। विज्ञा
की गति अत्यन्त तीव्र कर दी फलतः कार्य को
क्रमशः कम और अधिक होती चली गई। आ

---

1 Ref. Hans Nicholas : Comparat
2 Medinsky, Y. N. : Public Educa
"The Soviet system of education
the USSR. The condition that
a culture that is socialist in cont

द के संघर्षरत दृष्टिकोण तथा उसकी सक्रियता
: करते हैं। चवालीस वर्ष के अल्प समय में ही
आधार पर शिक्षा जगत में अपूर्व प्रगति की
ना० ए० जी० ज्वेरेव ने स्पष्ट शब्दों मे इस प्रकार
उच्च स्कूलो के छात्रों की संख्या ब्रिटेन, फ्रान्स,
 छात्रों के जोड़ से लगभग चार गुनी अधिक है।
की अपेक्षा लगभग तीन गुने अधिक इन्जीनियर

कल्पना की उड़ान नहीं है और न यह अनुमान
सकता है कि जन कल्याण से इस शिक्षा का कोई
विज्ञान अकादमी के प्रोफेसर केरोव ने[२] १६४० ई०
े मे कहा था कि हम शिक्षानुसार हम साम्यवादी
त मानव की शिक्षा चाहते हैं। अर्थात् साम्यवादी
धिक से अधिक विकास हो सके।

पुष्ट प्रमाण देश की सप्तवर्षीय योजना है जिसमे
: रूप से स्वीकार किया गया है और जनता की
सार की व्यवस्था की गई है।[३]

ायत मेहनतकश जनता की मजदूरी के अलावा और
सोवियत भूमि, पुस्तक १६५६।

oes to School.

tor of the Academy of Pedagogical Science,
says "By communist education we mean
a all round developed person of a commu-
education for the all round development
f the following : intellectual and manual
ral, aesthestic and physical education "

Seven Year Plan.

l secondary school education in town and
d even and correspondence higher and
ary education,

के मानसिक तथा सांस्कृतिक उन्नयन के लिए वरदान बन गया। सुन्दर योजनाओंमें सम्मिलित होने की सुविधाएँ सभी को मिलने लगी। इस सक्रिय रचनात्मक श्रम ने जनता का व्यक्तित्व निखार दिया। यही मार्क्सवादी परम्परा है।[1]

इष्ट तक पहुँचने में देर लगती है और हर बड़े चरण का इतिहास होता है। समाजवादी शिक्षा के गतिशील चरण भी इतिहास लपेटे हैं। बीट्रिस किंग[2] के अनुसार,

(१) प्रथम चरण में, शिक्षा की पुरानी परम्पराओं को बदल दिया गया। शिशु की स्वाधीनता मानी गई। नए शिक्षा प्रयोगों की धुन आरम्भ हो गई। यूरोप-प्रचलित प्रॉजेक्ट, डैक्राली प्रणालियाँ तथा डाल्टन-पद्धति प्रयोग में लाई गई। परीक्षाएँ हटा दी गईं। सामूहिक रहन-सहन ऊपर उभर कर आई। प्रथम पंचवर्षीय योजना के बाद भारी मशीनों का प्रचलन बढ़ा। प्रॉजेक्ट विधि तथा डाल्टन-पद्धति देश में छोड़ दी गई।

(२) द्वितीय चरण में, तीव्रता से विकास हुआ। राजनैतिक चेतना उभरी और आर्थिक स्थिरता आई। १६३२ से यह काल आरम्भ होता है। व्यक्तिवादी होने से डाल्टन पद्धति छोड़ दी गई। त्रुटिपूर्ण होने से बुद्धिपरीक्षा छोड़ दी गई।[3]

---

1 See Galkin.

2 Beatrice King : Russia Goes to School

3 Zinaida Istonina : Child Psychology, Soviet Woman N. I. 1961, p. 24.

"The fundamental mistake of the intelligence test specialists is that they regard the intelligent quotient (I. Q.) they have once given a child as a lifelong constant, thereby implying that the entire further development of the child concerned is predetermined. One of the results of intelligence test is that the childen of working people or of under-privileged nationalities usually have no opportunity to continue their education."

(आ)

यह सत्य है कि शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व का विकास होता है, क्षमताएं, योग्यताएं निखर जाती हैं परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि यह क्षमताएं व्यक्ति की केवल अपनी ही नहीं हैं। वे जन्मजात न होकर जीवन जन्य हैं— निरपेक्ष न होकर सापेक्ष हैं। प्रत्येक व्यक्ति समाज में ही विकसित होता है। समाज की अनुपस्थिति में वह विकसित हो ही नहीं सकता। व्यक्ति का उचित विकास अतः वही है जो समाज के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हो। जिस शिक्षा क्रम से व्यक्ति अपना विकास करे परन्तु समाज हित उसके लक्ष्य न हों, ऐसी व्यक्ति-स्वाधीन शिक्षा मार्क्सवादी नहीं है।

बालक का समाजीकरण आवश्यक है। इस क्रम में भाषा, साहित्य, धर्म, गृह, विद्यालय, समाज आदि सभी का योग रहता है। ये सब भी दो वस्तुओं पर आधारित होते हैं। प्रथम, राजनीति तथा द्वितीय, अर्थव्यवस्था। जिस प्रकार की राजनीति तथा अर्थ व्यवस्था होती है उसी प्रकार का वातावरण उस देश का होता है अत. राज्य के बदलते ढांचे के साथ समाजीकरण के वातावरण भी बदलते हैं। मार्क्सवादी शिक्षा इसलिए केन्द्रित होने की बात करती है क्योंकि

No. of pupils in Primary seven year secondary in 1958—30 Million
in 1965—38-40 „

Pupils in 'Boarding schools	1958—180000
	1965—2500000
Pupils in Kindergartens	1958—2280000
	1965—4200000

(ii) To extend and improve the training of specialists with a higher and secondary specialized education.

No. of specialist graduates in 1952-58—1700000
1959-65—2300000 (40% more)

Engineers trained for industry, construction, transport will increase by 90%

Agricultural specialists 50%

(iii) Development of Science.

(iv) Development of cinema, press, radio and television for education.

१६३७ में सोवियत शिक्षा में एक बड़ा परिवर्तन हुआ
पॉलीटैक्नीकल शिक्षा बन्द कर दी गई। श्रम-रिजर्व प्रार
किए गए (१६४०) (युद्ध काल के कारण) कहीं कहीं फीस की
व्यवस्था प्रारम्भ की गई। १६४३ में सहशिक्षा समाप्त कर
गई। केवल प्राथमिक क्षेत्र में सहशिक्षा रही। पाठ्य
सर्वत्र एकसा रहा।

क्रान्ति से पहले जिस देश मे ७६% निरक्षर लोग थे (स्त्रि
८८%) और जिसके बारे मे लेनिन ने १६१३ मे कहा था, "इतना जंगली
कोई देश नहीं है।" शिक्षा संस्थानों मे जहाँ ४/५ बाल संख्या वंचित र
गई; ५६ भाषाओं के स्थान पर केवल एक रूसी भाषा से जहाँ शिक्षा
जाती रही, वहीं १६१४ का क्रम, उच्च प्रशिक्षणालयों में प्रवेश-संख्या
उच्च-विद्यालयों की संख्या मे १६५६ मे क्रमशः १६ तथा ३७ गुना
में अधिक हो गया।[1]

1 40 years of USSR.

ापन मे एक शक्तिशाली साधन मानती है और
उच्चतर समाज के निर्माण के लिए तैयार होने
हती है। संयुक्त राज्य के शिक्षाविद, व्यक्ति की
के लिए विकेन्द्रित शिक्षा व्यवस्था की मांग

त होती है परन्तु चेतना स्वयं समाज से युक्त
: मानव की आत्मसत्ता चेतना पर आश्रित नही
: उसकी चेतना को निर्धारित करती है।[1] चेतना
ई अतः उचित व्यक्ति विकास के लिए उचित समाज
इसीलिए शिक्षा को राष्ट्र नीति का प्रमुख अंग
ऐतिहासिक आधार पर कहा है कि प्रत्येक सरकार
रहा है।[2] प्रसिद्ध शिक्षाविद मॅकरेन्को ने भी
है।

शिक्षा के लिए, मार्क्सवादी परम्परागत समाज
सी मे व्यक्ति का उचित विकास हो सकता है।
पूर्ति के लिए वस्तुओं का बडे पैमाने पर उत्पादन
विज्ञान और टैक्नालॉजी को बड़ी तेजी के साथ
। व्यक्तिगत सम्पत्ति और शोषण से हीन ऐसे
में काम से प्यार तथा कार्य-कुशलता के लिए
यक है। परिमाण और गुण मे अधिक उत्पादन के
श्यक है। शिक्षा जीवन से सम्बद्ध होनी आवश्यक
उद्देश्य व्यक्ति पर कोई वस्तु लादना नही वरन् उसकी

ot the consciousness of men that deter-
nce, but on the contrary their social
es their consciousness." Preface to contri-
ue of Political Economy, p. 11. quoted
Philosophy.

ucation begins in compulsion............
pedagogy is "an instrument of national

ic Problems of Socialism in the USSR,
53. New York International Puobl. 1952.

४

मार्क्सवादी शिक्षा का प्रयुक्त रूप

लेनिन तरुण पायोनियर संगठन तथा तरुण कम्यूनिस्त लीग—कोम्सोमोल

साम्यवाद तक पहुँचने के लिये समाज के गठन में, तरुणों के अमूल्य सहयोग के विषय में लेनिन[1] ने कहा था, "पूँजीवादी समाज में पली हुई हमारी पीढ़ी के लिए कम्यूनिस्त समाज की स्थापना का काम पूरा करना बहुत मुश्किल होगा। यह काम युवकों के जिम्मे पड़ेगा।" इसी तथ्य को दूसरे शब्दों में कालिनिन[2] ने व्यक्त किया, "क्योंकि हमारे देश की मुख्य दौलत कोम्सोमोल ही में विकसित हो रही है। कोम्सोमोल में वही लोग हैं जो आगे चलकर समाजवाद के लिए लड़ने वाले, बूढ़े लड़ाकुओं की जगह लेंगे। कोम्सोमोल मजदूर और किसानों का अगला दस्ता है, उनका बेहतरीन अंग है।"

कम्यूनिस्त शिक्षा केवल व्यक्ति का ही विकास नहीं चाहती। व्यक्ति समाज

---

१ उद्धरण, कालिनिन : कम्युनिस्त शिक्षा के बारे में।

२ वही।

क्षमता को उचित ढंग से विकसित करना है। ऐसा कार्य लेना है जिसे व्यक्ति सबसे अच्छी तरह कर सके और जो भी सामाजिक उत्पादन करे उसे वह अपना ही उत्पादन समझे।[1] इससे उसमें, एक-दूसरे के प्रति, सम्मान और प्यार जगेगा और मानवता के ऊर्ध्वगामी पथ पर, बिना भेद-भाव के, कन्धे से कन्धा मिलाकर वह चल सकेगा।[2]

(ई)

शिक्षा के इतिहास में, अनेकों शिक्षामत सामने आए। समाज की नई नई आवश्यकताओं को सुलझाने में ये मत बदलते रहे हैं। समाज के आधार—राजनीति तथा अर्थ-व्यवस्था—से दूर रहकर केवल शिक्षा-गठन या प्रणालियों पर ही दृष्टि डालने से ये मत निर्बल तथा एकांगी रहे। शिक्षा, राष्ट्र की राजनीति तथा अर्थ-व्यवस्था से मुक्त नहीं रह सकती।[3] अर्थ-व्यवस्था में उत्पादन का मशीनीकरण आवश्यक है और उसी तरह उत्पादित वस्तुओं का श्रम के आधार पर वितरण भी। समाज की आवश्यकताएँ उत्पादन की सीमाएँ हैं। स्वस्थ राजनीति के लिए दर्शन का स्वस्थ होना आवश्यक है। इन कारणों से उपयुक्त दर्शन मार्क्सवाद ही माना गया है क्योंकि यह वर्गभेद से मुक्त है, शोषण का शत्रु और क्रान्तिकारी है।[4]

---

1 Ibid. "The prime necessity of life' "(Marx) that 'labour will become a pleasure instead of a burden' (Engels) and that social property will be regarded by all members of society as the sacred and inviolable basis of the existence of society." pp. 52-53.

2 Ref. Makerenko's teachings. Cohen Marxist Education
Ref. The sense of the mean.

3 Beatrice King Russia Goes to School, p 4

4 Khrushchev, N. S. Seven Year Plan.
"For the transition to communism what is needed is not only a powerful material and technical base but also a highly conscious attitude on the part of all citizens of socialist society. The ideas of Marxism-Leninism which are the [illegible] ideology of [illegible] having [illegible] of the masses have become the great material force [illegible]"

में ही विकसित हो सकता है और समाज को विकसित भी हम ही कर सकते हैं और करेंगे। अतः सुन्दर समाज व्यक्ति को बनाता है और सुन्दर, व्यक्ति, सुन्दर समाज में बनेगा। जिस राजनैतिक चेतना और सांस्कृतिक विकास की हमें आवश्यकता है उसका अभिन्न अंग कम्यूनिस्ट शिक्षा है। इस शिक्षा को सफल बनाने के लिए कम्यूनिस्ट पार्टियाँ सदैव ही प्रयत्नशील रहती हैं। कम्युनिस्ट शिक्षा का सार कालिनिन के अनुसार राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में असली सफलताओं के लिए संघर्ष करना है।

निस्संदेह तरुणों का समाजीकरण एक दुरूह कार्य है परन्तु यह भी सत्य है कि यह अत्यन्त उत्तरदायित्व का कार्य है। जीवन यदि जग न सका तो शिक्षा प्राण नहीं हो सकती। जीवन यदि फलित न हुआ तो शिक्षा वरदान नहीं हो सकती।

समाजवादी मान्यताओं का जीवन में उतरना आवश्यक है और उन आदर्शों का युवक के जीवन में समा जाना और भी आवश्यक। युवकों में अनोखी ग्रहण शक्ति"[१] होती है। उच्च आकांक्षाएँ और उत्साह उनमें हिलोरें मारा करते हैं। विचारों और भावनाओं को कार्य में बदल देना उन्हें सदैव ही रोचक लगता है। ये साहसी व्यक्ति बड़े ईमानदार होते हैं और उनका स्वभाव बहुत ही खरा होता है। कालिनिन का यह वचन है कि युवकों के इन अनोखे गुणों का ह्रास न होने पाए।[२]

इसीलिए आपस में एक-दूसरे से तथा देश और मानव को प्यार करने के लिए अपने स्वार्थों को रोकते हुए ईमानदारी के लिए, समाजवादी समाज को ऊपर उठाने में श्रम की उपयोगिता समझते हुए हर उपयोगी काम से प्यार करने के लिए, कठिनाइयों और काँटों को हटाकर जीवन पथ पर साहस से भरे कदमों के बढ़ने के लिए, आदर और करुणा से ओतप्रोत भाईचारे पूर्ण सामूहिक प्रवृत्ति के विकास के लिए, जनता की कम्युनिस्ट शिक्षा में विद्यालयों और शिक्षकों को सहायता देने के अमूल्य अभिप्राय से ताकि अनुशासन और चरित्र उन्नत हो सकें और अध्ययन गहरा और सजीव हो, लेनिन-तरुण-पायोनियर संगठन तथा तरुण कम्यूनिस्ट लीग की स्थापना की गई। अखिल संघीय लेनिनवादी तरुण

---

१ कालिनिन : कम्युनिस्ट शिक्षा के बारे में।
२ वही।

६१८–१६ के ग्रासपास हुई ग्रोर इसी लीग का

क सामूहिक तरुण संगठन है जो पार्टीगत नही
म्यूनिस्त पार्टी की देख-रेख में हो सम्पन्न होते हैं।
०,००० सदस्य थे। तरुण कम्यूनिस्त-लीग काग्रेस
करती है। यह तरुण कम्युनिस्त लीग लेनिन
ाय-प्रदर्शन करती है।[1] लेनिन किशोर पायोनियर
विद्यार्थियो को इकट्ठा करने के लिए है। इसी
ान्य वस्तुएं हैं जैसे किशोर पायोनियर क्लब तथा
र पायोनियरो को घूमने तथा ठहरने की सुविधायें
ग्रलग ग्रलग विद्यालयो के विद्यार्थी एक साथ
ना सीखते हैं।

पायोनियर संगठन तथा तरुण कम्यूनिस्त लीग
इसके समुचित गठन मे, विद्यालयो की सहायता

की ग्रपनी किशोर पायोनियर टुकडी होती है।
। इन घटों मे एक या कई कक्षाओ के विद्यार्थी
ा-घट होते हैं इनमे राजनैतिक, वैज्ञानिक तथा
होती हैं। किशोर पायोनियर संगठनो के प्रमुख

: वार्ताएं,

या सामूहिक जीवन व्यतीत करना।
में संख्या १३०००००० थी।

शाखायें सभी सप्तवर्षीय तथा माध्यमिक विद्यालयों
ायें ग्रौर शिक्षकों की विशद सहायता करते हैं।

Figures About USSR.
blic Education in the USSR,

१

परिवार तथा विद्यालय

यह तो लगभग सभी जानते हैं कि परिवार तथा स्कूल में कितना निकट का सम्बन्ध है। बालक अपने माता-पिता से गुण-दुर्गुण सीखता है और जब वह प्रथम बार स्कूल में प्रवेश करता है उसके नैतिक चरित्र का निर्माण हो चुकता है। किन्तु स्कूल में मानसिक, शारीरिक, कलात्मक विकास के साथ साथ जो व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है उसके द्वारा बालक का चरित्र निर्माण सुदृढ़ तथा परिपक्व हो जाता है। विकास दोनों ही दिशा में सम्भव है—अच्छी तथा बुरी। परिवार तथा स्कूल के निकट आने पर बुरी दिशा का विकास रुक जाया करता है।

अन्य प्रगतिशील पश्चिमी देशों की भाँति सोवियत संघ में भी इस परिवार तथा स्कूल के निकट सम्बन्ध पर बल दिया जाता है। सोवियत संघ के नेताओं का विश्वास, परिवार का बालक के चरित्र तथा अन्य विकास पर प्रभाव, उनके अनुभवों के कारण और भी पक्का हो गया है। विशेषकर जबकि सोवियत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को साम्यवादी (कम्युनिस्ट) बनाना है उस दशा में परिवार के प्रभाव को मान्यता देना और भी आवश्यक हो गया है। इसलिये स्कूल में तथा परिवार सोवियत संघ में पिछले कुछ ही वर्षों से और निकट आ गये हैं।

विद्यार्थियों को अनुशासित रहने में सहायता देते हैं और कार्य तथा अध्ययन से प्यार करना सिखाते हैं। देश के प्रति असीम प्यार और बलिदान की भावना उनमें भरते हैं। स्वयं अपने आचरण से उन्हें उचित ढंग से प्रभावित करते हैं। समाजवादी श्रम में आस्था तथा उससे प्यार, किशोरों में उत्पन्न करते हैं। विद्यालयों को भरा-पूरा करने में सहायक होते हैं। सामूहिक किसानों के यहाँ तथा विद्यालयों में वायरलैस यन्त्र लगाते हैं। विद्यालय के खेतों में काम करते हैं।

सर्वदेशीय आवश्यक शिक्षा के नियम को कार्य में लाने में सहायता देते हैं। स्वयं देखते हैं कि पढ़ने से कोई बच्चा छूटा तो नहीं। पढ़ने से मन तो नहीं चुराता। इसके साथ ही वह शिक्षकों को अधिक से अधिक सहयोग देते हैं ताकि वह अपने पुनीत कार्य में सफल हो सकें और शिक्षकों के आदर और सम्मान की वृद्धि के लिए सदैव ही प्रयत्नशील रहते हैं।

अपने समाज को प्यार करना तथा उसका सुव्यवस्थित निर्माण करना उन्हें इस प्रकार बड़े ही स्वाभाविक ढंग से सिखाया जाता है।

लेनिन ने सोवियत संघ में इस दिशा में प्रथम बार प्रोत्साहन दिखाया। उन्होंने समाज परिवर्तन के लिये देश के नवयुवकों को कार्यों की आवश्यकता पर बल दिया। इसलिये उन्होंने स्कूलों के महत्वपूर्ण योग को, देश के उत्थान तथा प्रगति के कार्य करने के लिये विशेष रूप से सराहा। यह सोवियत संघ के स्कूल ही हैं जिनके कारण वहाँ के समाज के परिवर्तन का कार्य सम्भव हो सका है तथा वह एक पिछड़े हुए देश से महान प्रगतिशाली तथा शक्तिवान देश बन गया है। हमारे विचार में इस प्रगति के श्रेय का कुछ अंश वहाँ के परिवारों का स्कूलों के लिये प्रेम तथा अध्यापकों के लिये श्रद्धाभाव हैं।

अन्य सभी प्रगतिशील देशों की भाँति सोवियत संघ बालक पर घर तथा स्कूल दोनों का ही प्रभाव मानता है। दोनों के सन्तुलित और मर्यादित पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता बालक को अपेक्षित होती है। इसलिये वहाँ परिवार तथा स्कूल के सम्बन्ध पर काफी बल दिया जाता है। किन्तु विशेष रूप से बल बालक को सोवियत नागरिक बनाने पर दिया जाता है। स्कूल का प्रभाव परिवार में समाप्त न होने पाये, इसलिये परिवार तथा स्कूल को और भी निकट लाने की चेष्टाएँ होती रहती हैं। बालक को किस प्रकार घर में रखना चाहिये तथा घर पर उसे किन बातों की शिक्षा देना अनिवार्य है—इन विषयों पर सोवियत संघ में विशेष पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं तथा माता-पिता को उचित शिक्षा दी जाती है ताकि वह बालकों का पालन-पोषण ठीक रूप से कर सकें। मेकरेन्को महोदय की निम्न दो पुस्तकें इस सम्बन्ध में मुख्य हैं—A Book for Parents (माता-पिता की किताब) तथा Lectures on Upbringing (पालन-पोषण संबंधी भाषण) छोटी छोटी कहानियों के रूप में सामान्य तथा विशिष्ट ज्ञान की बातें इन पुस्तकों द्वारा परिवारों में फैलाई जाती हैं। उदाहरण के लिये लेवशीन महोदय की पुस्तक[1] में उदीस्तोव घराने का जिक्र है। बाल पुस्तकें, कहानियाँ तथा अन्य साधनों से युक्त घराने में माता-पिता बालकों को शुद्ध उच्चारण तथा अच्छे व्यवहार की शिक्षा देते हैं। बालकों के स्वावलम्बी बनाने के लिये उन्हें अपनी प्रिय वस्तुओं के संग्रह के लिये स्थान भी मिल जाता है। परिवारों में जो बच्चे स्कूल जाने योग्य नहीं हैं उन्हें भी घर पर स्कूली शिक्षा का आनन्द

1 Levshin : Family and School in the USSR, 1959, p. 18.

५

सोवियत शिक्षा की व्यवस्था

प्राक् विद्यालयीय काल से प्रारम्भ होकर, जीवन के सभी स्तरों से होती हुई सोवियत शिक्षा, व्यक्तिगत योग्यताओं और तदनुसार उपयुक्त सुविधाओं को जुटाती हुई अनवरत गति से चलती है। समाजवादी समाज के निर्माण में उसके वैज्ञानिक स्वरूप ने अत्यन्त ही सहायता प्रदान की है। व्यापक शिक्षा के विभिन्न स्वरूप इस प्रकार है।

(अ) प्राक् विद्यालयीय व्यवस्थाएं।
(आ) बालकों तथा प्रौढो के लिए विभिन्न प्रकार तथा स्तर के सामान्य शिक्षा विद्यालय।
(इ) अनाथों के लिए शिक्षा व्यवस्थाएं।
(ई) बालकों के लिए अतिरिक्त विद्यालय व्यवस्थाएं।
(उ) औद्योगिक प्रशिक्षण व्यवस्थाएं।
(ऊ) उच्चतर शिक्षा व्यवस्थाएं।
(ए) प्रौढो के लिए सांस्कृतिक शिक्षागन व्यवस्थाएं।

(अ)

प्राक् विद्यालयीय शिक्षा व्यवस्था मे बालक के प्रथम सात वर्ष सम्मिलित

तथा परिचय मिल जाता है। इस प्रकार निस्संदेह जब बालक स्कूल तक आते हैं उनमें स्कूल के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा की भावना जाग्रत हो चुकी होती है। हमारे देश की निर्धनता तथा साधारण माता पिता की स्कूल के प्रति अश्रद्धा ने हमारे स्कूलों की दशा दयनीय बना रक्खी है। हमारी सरकार के अनवरत प्रयत्न के पश्चात् भी समाज में स्कूल के प्रति आदर तथा घनिष्टता उत्पन्न नहीं हो सकी है। हमारे पढ़े-लिखे व्यक्तियों मे शिक्षा के प्रति विचित्र मनोवृत्ति है—वह स्कूल मास्टर को निम्न कोटि का व्यक्ति मानते हैं तथा उसके प्रति अनादर के भाव वह अपने बालकों के सम्मुख भी प्रकट करने से नहीं चूकते। परिणाम स्पष्ट हैं, इसलिये उनका वर्णन यहाँ व्यर्थ होगा।

सोवियत संघ मे बालकों के परिवार अजायबघर, प्रदर्शनी, गायन-वादन के आयोजन तथा रेडियो के भाषण आदि ले जाने या सुनने का अवसर देते हैं। स्मरण रहे कि सोवियत संघ किसी भी भाँति सभ्यता या संस्कृति की दृष्टि से अन्य पश्चिमी देशों से पीछे नहीं है। बालकों के प्रश्नों का उत्तर देना एक अच्छा तरीका है जिसके द्वारा उन्हें ज्ञानार्जन का अवसर मिलता है। किन्तु यह सब तभी सम्भव है जब माता-पिता पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष हों।

निरंतर प्रगति करते हुए सोवियत संघ मे बालक नवीन योजनाओं, भव्य गृहों, नये जुते हुए खेतों, नये नगरों तथा उनके नये मकानों के मध्य उत्पन्न होकर अपने देश के प्रति विशेष प्रेम तथा श्रद्धा से अपना जीवन प्रारम्भ करते हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध मे सोवियत संघ के नागरिकों द्वारा दी गई बलियाँ उनके उत्साह को दूना कर देती है। पायोनियर तथा कोम्सोमोल संगठनों के द्वारा बालकों को साम्यवाद का परिचय मिलता है. इन संगठनों को परिवारों से भिन्न भिन्न रूपों में प्रोत्साहन मिलता है। किसी छात्र का पिता यदि फैक्ट्री-मैनेजर है, बालक अपने समस्त साथियों के साथ अपने पिता के कारण फैक्ट्री घूम लेता है तथा देश के काम के विषय में परिचय प्राप्त करता है। माता-पिता बालकों के कुतूहल शान्त तथा शंका-समाधान करने मे सुस्त तथा असराहनीय मनोवृत्ति वाले माता-पिता भी हैं—किन्तु उन्हें समाज के साथ काम करने को बद्ध किया जाता है, इस प्रकार अन्त में उनमे भी बालकों, स्कूल तथा अन्य आवश्यक बातो की ओर रुचि उत्पन्न हो जाती है।

हैं। इस अवधि में दो प्रकार की व्यवस्था है। प्रथम, जो पहिले तीन वर्षों के लिए है। माँ तथा शिशु की रक्षा तथा उपयुक्त देखभाल इसका उद्देश्य है। राज्य की ओर से माँ शिशु-केन्द्र शिशु मन्त्रणा केन्द्र तथा क्रैंचों को व्यवस्था है। निम्न सुविधाएँ सभी को उपलब्ध होती हैं।

(१) चिकित्सकों और अनुभवी बाल-शिक्षकों से, बालक की देखभाल के लिए, माताएँ मुफ्त मन्त्रणा ले सकती हैं।

(२) शिशुओं को चिकित्सा-सहायता।

(३) दिवा क्रैंचों में, कारखानों में काम करने वाली माताएँ, अपने बच्चों को छोड़ सकती है जहाँ कुशल व्यक्तियों द्वारा उनकी देखभाल की जाती है।

द्वितीय, जो तीन से सात वर्ष पर्यन्त है। इस अवधि में बालक के लिए किन्डरगार्टन तथा क्रीड़ा स्थलों की व्यवस्था है। किन्डरगार्टन तो प्रायः वर्ष भर ही खुले रहते हैं। क्रीड़ास्थल केवल गर्मियों में ही उपलब्ध होते हैं। काम करने वाले पितर अपने बच्चों को यहाँ छोड़ जाते हैं जिन्हें खाना भी मिलता है और आवश्यक देखभाल भी की जाती है।

(आ)

सामान्य शिक्षा-विद्यालयों के तीन प्रमुख भेद हैं—

(१) प्रारम्भिक—चारवर्षीय।

(२) सप्तवर्षीय—सात वर्षीय।

(३) माध्यमिक—दसवर्षीय।[1]

सप्तवर्षीय तथा माध्यमिक विद्यालयों में प्रथम चार वर्षों में प्रारम्भिक विद्यालयों का पाठ्यक्रम है। प्रारम्भिक शिक्षा सार्वभौमिक, अनिवार्य तथा निःशुल्क है। सप्त वर्षीय शिक्षा भी निःशुल्क है।

अन्य विद्यालयों के भेद इस प्रकार हैं।

(१) विशिष्ट सामान्य माध्यमिक विद्यालय—संगीत कुशल विद्यार्थियों के लिये।

---

१. जॉर्जिया, लातिविया तथा एस्तोनिया राज्यों में ११ वर्ष।

सोवियत शिक्षा-विशेषज्ञों के मतानुसार पोलीटैक्निकल शिक्षा मे परिचय बालक को घर द्वारा ही होता है। काम करना, विशेष रूप से आधुनिक यान्त्रि वस्तुओं का प्रयोग परिवार द्वारा ही बालक को सिखाया जाता है[1]। इस ब को यदि हम भारतवर्ष की परिस्थिति से तुलना करें तो हमारे अनुभवों एक विचित्र सी ठेस पहुँचेगी। हमारे यहाँ तो इस प्रकार का कार्य केवल स्कू या विशेष संस्थान ही सम्पन्न करते हैं।

सोवियत संघ में अध्यापक बालकों के घर जाकर अध्ययन सम्बन्धी कठिन इयों पर विचार-विमर्श करते हैं। इस प्रकार अध्यापक न केवल छात्रों से परि चय प्राप्त करता है वरन् उनके माता-पिता से भी परिचित हो जाता है मैं छात्र के परिवार वातावरण सम्बन्धी विशेष लाभ-कारी जानकारी प्राप्त कर है। इस प्रकार की जानकारी आधुनिक मनोविज्ञानशास्त्री आवश्यक समझ हैं। सोवियत संघ मे इस जानकारी का एक अन्य लाभ भी हैं—अध्यापक कामों से परिवार परिचित हो जाते हैं, बालक का हितैषी मान कर वह उसव हर प्रकार से सहयोग देते हैं। बालकों से दूरी तभी कम हो सकती है ज परिवार भी स्कूलों के निकट आ जायें। फिर परिवार छात्र के ज्ञानार्जन सहायक भी सिद्ध हो सकते हैं यदि उन्हें अध्यापक द्वारा छात्र-सम्बन्धी कुछ बा बता दी जायें। फिर परिवार से अध्यापक की मैत्री का परिणाम यह होता कि बालक अध्यापक को अपना सहायक मानने लगता है। इस प्रकार शिक्षा-दर्शन ने सोवियत संघ की शिक्षा सम्बन्धी प्रगति को चार चांद लगा दि हैं। स्कूल समाज का अंग है इसलिये प्रत्येक परिवार का यह उत्तरदायित्व कि वह स्कूल को सहयोग दे। इस दर्शन ने स्कूल तथा परिवार के सम्बन्ध घनिष्ट करने में काफी योग दिया है।

---

1 Levshin : Family and School in the USSR, p. 44 "Correct labour training at home acquires special importanc in view of the common tasks associated with the poly technical education which is now being tackled by th soviet school. The task here is to give the pupil not onl a general education, but to acquaint him with the funda mentals of modern industry, accustom him to handle simpl instruments, make him an all-round man capable of com bining theory and practice.........."

आयु के अनुसार सोवियत् शिक्षा के सोपान।
वर्ष
२३
२२
२१
२०
१९
१८
१७
१६
१५
१४
१३
१२
११
१०
९
८
७
६
५
४
३
२
१
(२१-२३)
उच्चतर शिक्षा (४-६ वर्ष)
माध्यमिक औद्योगिक विद्यालय (४ वर्ष)
प्रारम्भिक औद्योगिक (१४-१५-- -१६-१७)
माध्यमिक विद्यालय (१० वर्ष)
सप्त वर्षीय विद्यालय
चार वर्षीय प्रारम्भिक शिक्षा
माध्यमिक विद्यालय (११ वर्ष) (जॉर्जिया, लाटविया, तथा ऐस्तोनिया राज्य)
किन्डर गार्टन।
क्रीडा क्षेत्र।
प्राक् विद्यालयीय व्यवस्था।
माँ शिशु केन्द्र।
शिशु मन्त्रणा केन्द्र।
क्रैश
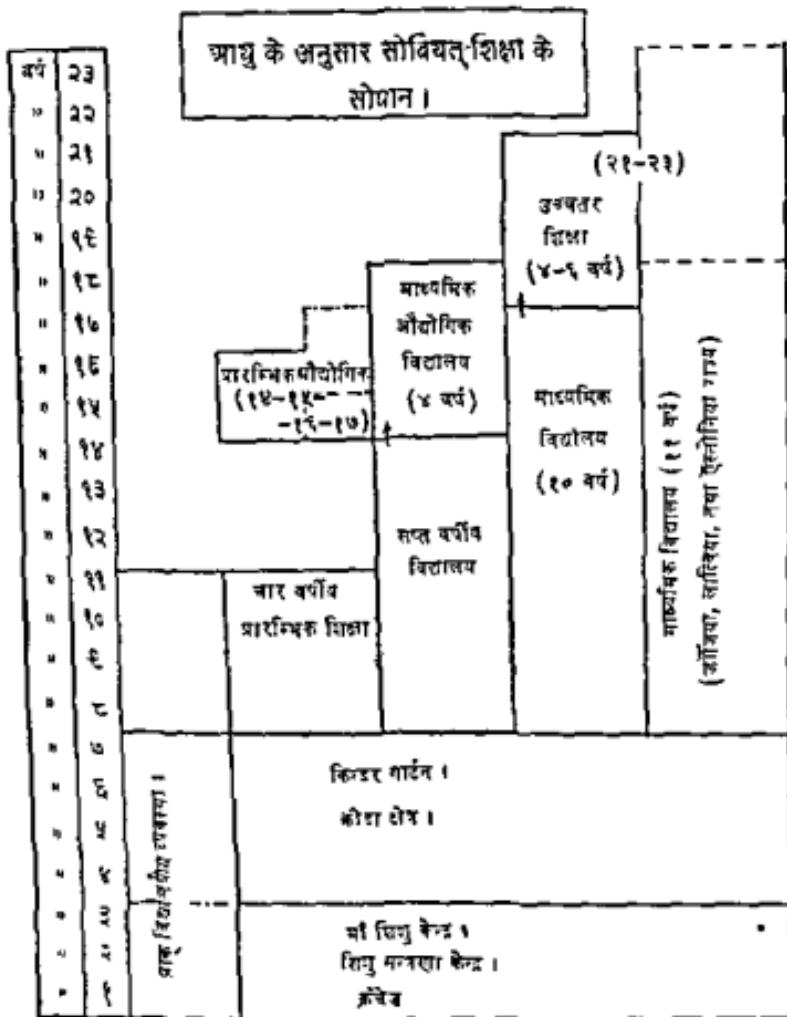
माता-पिता तथा अध्यापक ऐसोसियेशनों (Teacher-Parent Associations) ने उक्त दिशा में महत्वपूर्ण काम किया है। इन ऐसोसियेशनों की मीटिंगों में अध्यापकों को छात्रों के प्रति अच्छी-बुरी सामग्री मिलती रहती है। अच्छे परिवार के अच्छे बालक, किसी कारण बिगड़े हुए अच्छे बालकों या बुरे बालकों आदि के विषय में जानकारी स्कूल-कार्य के लिए एक अनुभव तथा ललकार (Challenge) के रूप में आती है।[1] उसी प्रकार परिवारों को बालकों के मनोविज्ञान तथा पालन-पोषण आदि के विषय में लाभदायक सामग्री इन्हीं मीटिंगों में मिलती हैं। उन्हें दूसरों की भूलों से अनुभव तथा ज्ञान से पथ-प्रदर्शन मिलता है।

सोवियत संघ के प्रत्येक स्कूल की एक माता-पिता की कार्यसमिति होती है। इस कार्य-समिति को समाज-सेवकों का सहयोग प्राप्त होता है। जो भी माता-पिता सामाजिक कार्य-कर्त्ता बन जाता है वह एक महान नागरिक का कार्य सम्पन्न करता है अपने तथा अन्य के बालकों के प्रति प्रेम प्रदर्शन करके वह अपने चरित्र की महानता का परिचय देता है। प्राय: इस माता पिता कार्य समिति के निम्न प्रकार के कार्य हैं[2] —

१—स्कूल तथा परिवार में घनिष्टता उत्पन्न करना।

२—परिवारों की दशा का ज्ञान प्राप्त करना। जब कभी अध्यापक किसी बालक की अनवरत अनुपस्थिति की ओर ध्यान दिलाता है तो सामाजिक कार्य-कर्त्ता की सहायता से उक्त कार्य समिति कारण की सूचना प्राप्त करती है तथा उचित कार्यवाही करती है। इस कार्य में समिति को समाज-सेवकों, अध्यापक-वर्ग तथा अन्य स्कूल सम्बन्धी व्यक्तियों का सहयोग सहर्ष मिल जाता है।

३—सर्वव्यापी अनिवार्य शिक्षा के लागू करने में सहायता देना।

---

1 Levshin : Family and Shool in the USSR, p. 56.
"The individual talks with the parents,then,supply the school with considerable material reflecting both the negative and positive aspects of the upbringing in the family. This material is used in the general work with the parents. Mistakes made in one family serve as a kind of warning to other families and accustom them to think over their approach to the children.........."

2 Levshin : op. cit. pp. 76—80.

(२) सेनेटोरियम विद्यालय—अस्वस्थ विद्यार्थियों के लिए।

(३) विशेष विद्यालय—अन्धे, बहरे, मन्दबुद्धि विद्यार्थियों के लिए।

(४) किशोर औद्योगिक श्रमिक विद्यालय।

(५) किशोर कृषि श्रमिक-विद्यालय।

(६) प्रौढ़-विद्यालय।

इनका भी पाठ्यक्रम सप्तवर्षीय तथा माध्यमिक विद्यालयों जैसा रहता है।[1]

(इ)

अनाथों की शिक्षा व्यवस्था बालगृहों के हाथ में है। इन बाल गृहों को राज्य से भरपूर सहायता मिलती है ताकि अनाथों का उचित लालन-पालन तथा शिक्षा व्यवस्था हो सके।

(ई)

बालकों की शिक्षा व्यवस्था में अतिरिक्त विद्यालयीय व्यवस्थाएँ एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। बालकों की अर्जित शिक्षा को और भरना तथा पूरा करना उनका कार्य है। इस व्यवस्था में निम्न वस्तुएँ आती हैं जो राज्य की ओर से चालित हैं—

(१) किशोर पायोनियर प्रासाद तथा गृह।

(२) बाल-पुस्तकालय।

(३) थिएटर।

(४) उद्यान।

(५) पथिक-कैम्प।

(६) किशोर प्रकृति-वैज्ञानिक केन्द्र।

(७) किशोर टैक्नीशियन केन्द्र।

(उ)

औद्योगिक प्रशिक्षण-व्यवस्थाओं में दो प्रकार के विद्यालय हैं।

(अ) प्रारम्भिक औद्योगिक विद्यालय जो कुशल सामान्य श्रमिकों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। यह प्रशिक्षण, सामान्य विषयों को पढ़ाते हुए तीन

1 Y. N. Medinsky : Public Education in the USSR.

४—शिक्षा-सम्बन्धी ज्ञान का जनता में प्रसार करना।

५—यह देखना कि बालक स्कूल तथा परिवार में किस प्रकार अपने लिए दिये गये आदेशों का पालन करते हैं।

६—पाठान्तर आयोजन में सहयोग देना।

७—यह देखना कि प्रत्येक छात्र को उचित देख-भाल प्राप्त है।

तथा ८—स्कूल प्रबन्ध तथा सफाई का प्रबन्ध करना।

हमारी दृष्टि में सोवियत संघ की सफलता तथा शिक्षा के विकास का कारण न केवल वहाँ के नेताओं का शिक्षा के प्रति विश्वास है वरन् उक्त समितियाँ भी हैं।

प्रकार के विद्यालयों—ट्रेड विद्यालय, रेलवे विद्यालय, तथा फैक्टरी विद्यालय—द्वारा दिया जाता है।

(आ) माध्यमिक औद्योगिक विद्यालय—इसकी प्रशिक्षण अवधि चार वर्ष इसमें वे ही प्रवेश पा सकते हैं जो सप्तवर्षीय विद्यालय से उत्तीर्ण हो चुके हों। है। निम्न प्रकार का प्रशिक्षण मिलता है।

(१) टैक्नीकल।
(२) कृषिविषयक।
(३) आर्थिक।
(४) शिक्षा-शास्त्रीय।
(५) चिकित्सागत।
(६) कलागत।

(ऊ)

उच्चतर शिक्षा की अवधि चार से छः साल तक है। इसमें वही प्रविष्ट हो सकते हैं जो माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा समाप्त कर चुके हैं। उच्चतर शिक्षा-संस्थान निम्न हैं—

(१) विश्वविद्यालय।
(२) विद्यापीठ।
(३) अकादमी।

(ए)

स्व-शिक्षा तथा ज्ञान संवर्द्धन करने के लिए पर्याप्त सुविधा जुटाना ही सांस्कृतिक शिक्षागत व्यवस्थाओं का उद्देश्य है। प्रौढ़ों के लिए क्लबों, पुस्तकालयों, अजायबघरों तथा व्याख्यान केन्द्रों की सुव्यवस्थित योजना ने बढ़ती शिक्षा के साथ चलने में प्रौढ़ों को उचित सहायता प्रदान की है।

शिक्षा की इन व्यापक व्यवस्थाओं की सुविधाओं को प्रत्येक व्यक्ति तक ठीक-ठीक पहुँचाना राज्य का काम है। इसी उद्देश्य से, शिक्षा-व्यवस्थाएँ भी सरकार द्वारा व्यवस्थित हैं। इसका संक्षिप्त रेखा-रूप पृष्ठ ३० पर है।

२

द्यालयीय शिक्षा

ूर्व स्कूल से पूर्व की केवल २८५ संस्थायें
ी शिक्षा के लिये बहुत ही कम सुविधायें थी
बात नही कि उपर्युक्त स्कूल केवल धनी
 स्कूल पूर्व संस्थाओ मे उस समय तक केवल

में आमूल परिवर्तन किया गया है। यह पूर्व
कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आता है। इसका कारण
सम्बन्ध है। बच्चो के अवयवों का स्वास्थ्य
्य निरीक्षण शिक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक
ामग्री उपलब्ध है वह पश्चिमी देशो के पूर्व

शिक्षा के चालीस वर्ष—पुस्तक में म. दैनेको
ुखली है। किन्तु मेदिनिस्की ने Public Ed-
में इनकी संख्या २८५ दी है। लेखकों ने
अधिक ठीक माना है।

स्कूलों तथा किंडरगार्टनों से मिलती-जुलती हैं। सामूहिक फार्म, फैक्ट्री या अन्य स्थानीय संस्थायें पूर्व स्कूल के खोलने, चलाने तथा संरक्षण के लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रकार के स्कूल द्वितीय महायुद्ध के कारण अत्यधिक आवश्यक हो गए। क्योंकि इस युद्ध मे लगभग प्रत्येक सोवियत स्त्री को किसी न किसी रूप में घर से बाहर काम करना पड़ा था। फिर एक और बात भी ध्यान में रखने की है कि जब तक प्रत्येक माँ पालन-पोषण तथा बालकों की सर्वतोमुखी प्रगति के विषय मे अनभिज्ञ है उस समय तक इस प्रकार के स्कूलों की उपयुक्तता के विषय में तनिक भी सन्देह सम्भव नहीं। यद्यपि इस कथन का तात्पर्य यह नहीं कि स्कूल घर का स्थान ले सकते हैं।

कुछ घरों को मिलाकर प्रायः गृह-कमेटियाँ पूर्व स्कूल खोल देती हैं। उन स्कूलों की फीस पिता की आय तथा बच्चो की संख्या पर निर्भर होती है। जैसे ४ या उनसे अधिक बच्चो के होने पर पिता को किसी प्रकार की फीस नहीं देनी पड़ती। देहातो में, विशेषकर १९४१ के पश्चात् इस प्रकार की बाल संस्थाओं का मौसम के हिसाब से सगठन एक साधारण सी बात हो गई है। ध्यान रहे रूस मे जाड़ा काफी पड़ता है इसलिये शीतकाल मे छोटे बच्चे माँ-बाप के पास ही रहते हैं। फिर भी नगरो मे तथा ग्रामो में जहाँ स्त्रियाँ काम करती हैं वर्ष भर ऐसे स्कूलो का चलना आवश्यक है। गाँवों में सामूहिक फार्म इस प्रकार की संस्थाओं के खर्च का भार उठाते हैं। १९४५ में रूसी गाँवों में स्थायी बाल स्कूलों की संख्या ३,६८,००० कर दी गई और सामूहिक फार्म इनके जिम्मेदार ठहराये गये।

नगरों में इस प्रकार के स्कूलो में लगभग ३०-४० बच्चे ही रहते हैं किन्तु कहीं-कहीं उनकी संख्या ९० तक होती है। बाल स्कूल प्रायः काम के स्थान के समीप ही होते हैं। इन स्कूलों में अध्यापिकायें प्रायः प्रशिक्षित होती हैं। वैसे १–२ नर्स और एक डाक्टर इन स्कूलों में रहते हैं। खाना बनाने वाली घरेलू काम करने वाली इत्यादि भी वहाँ रक्खी जाती है।

सन् १९५५ में सोवियत संघ में स्कूल पूर्व संस्थाओं में जाने वाले बच्चों की संख्या थी २७ लाख से अधिक तथा संस्था में थी ५८,८९३।

बाल शिक्षा संस्थायें उतने समय तक खुली रहती है जितने समय तक मातायें काम करती है। शिक्षकों की ड्यूटी केवल ६ घन्टे प्रतिदिन की होती है। अन्य कर्मचारी ८ घंटे वहाँ रहते हैं। नर्स घूम-घूम कर बच्चों का निरीक्षण करती हैं। स्थानीय सहयोग तथा रुचि के कारण स्थान स्थान पर इन संस्थाओं

द्वितीय भाग

शिक्षा का पूर्व विद्यालयीय रूप

रूपरेखा—

१—परिवार तथा विद्यालय।
२—प्राक् विद्यालयीय शिक्षा।
३—किंडरगार्टन।

है। किसी-किसी स्थान की संस्था की
के साधन आदि सराहनीय होते हैं।
के भेद प्रत्येक देश मे अनिवार्य तथा

माह की आयु से प्रारम्भ होती है। ऐसे
सवता तथा अन्य के सहयोग पर निर्भर
देते हैं। ४ माह की उम्र के पश्चात्
रो को अनुभूति पा चुके होते हैं, बल
र, स्वास्थ्य, व्यायाम आदि की तथा
सोवियत अनुभव इस दिशा मे बहुत ही
मे एक और भी विशेष सहायता मिलती
मे बिना कठिनाई चले जाते हैं।

मे शिक्षा व्यवस्था अन्य पश्चिमी देशो
द्धतियो की कमियो को रूसी शिक्षा
ही नही दिया। लकडी, कागज, मोम,
क्षा को इस व्यवस्था मे निकाल दिया
कवायद (Drill) की जो क्रिया को सरल
गया है।

३

किंडरगार्टन

बाल शिक्षा संस्थाओं (Nurseries) की भाँति किंडरगार्टन भी स्थानीय संस्थाओं द्वारा आर्थिक सहायता पाते है। अन्यथा शिक्षा-मन्त्रालय यह आर्थिक भार वहन करता है। सोवियत किंडरगार्टन बालकों को शारीरिक उन्नति, साधारण स्वास्थ्य-नियम, वातावरण आदि के विषय में अनेक प्रकार की सामग्री की सहायता से शिक्षा देता है। बालक की बोलने की शक्ति की उन्नति करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बच्चों को पढ़ना, गिनना आदि स्कूल जाने की तैयारी स्वरूप पढ़ाया जाता है। गायन, वादन, चित्रकला, ताल, लय आदि की शिक्षा बच्चों की कलात्मक प्रवृत्तियों को निखारने के लिये दी जाती है। किन्तु मुख्य उद्देश्य बालकों की मानसिक क्षमता का विकास ही है। मानसिक, नैतिक, कलात्मक तथा शारीरिक विकास के साथ-साथ किंडरगार्टन शिक्षा का उद्देश्य बालकों को सामूहिक चेतना, कला को पहिचानने की क्षमता, मानसिक क्षितिज का विस्तार आदि हैं।

पूर्व शिक्षा स्कूलों की भाँति इन संस्थाओं के लिये भी माता-पिता का आर्थिक योग आवश्यक है। ४ बच्चों के परिवार, अविवाहित मातायें, शरीर से असमर्थ व्यक्ति इस योग से मुक्त हैं।

पिछले तीस वर्षों में दैनेको के आँकड़ो के अनुसार किंडरगार्टेनों की संख्या १५ गुना और उनमें बच्चों की संख्या १६ गुना से अधिक हो गई है। १६५४ में सोवियत संघ मे २५,००० किंडरगार्टेन तथा १० लाख बच्चे थे। स्कूल पूर्व संस्थाएं विशेष रूप से ग्राम्य स्थलों में बहुत तेजी से विकसित हो रही हैं। उन्ही ३० वर्षों की अवधि में ग्रामीण किंडरगार्टेनों की संख्या ४८ गुना, बच्चो की संख्या ३७ गुना और अध्यापको की संख्या ७४ गुना बढ़ गयी हैं। २७,२६७ ग्रीष्मकालीन क्रीड़ा-स्थलो मे से २४,४४६ सामूहिक फार्मों के अधिकार में हैं और उन्ही के खर्च पर उन्हे चलाया भी जा रहा है।[1]

किंडरगार्टन के शिक्षकों और छात्रो में मुख्य अध्यक्ष के अतिरिक्त १:२५ का अनुपात होता है। एक डाक्टर तथा एक नर्स भी वहाँ होती है और जहाँ यह सम्भव होता है वहाँ एक गायन का विशेष शिक्षक भी नियुक्त कर दिया जाता है। वैसे अन्य प्रकार के कर्मचारी तो होते ही हैं।

बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित डाक्टरों को विशेष शिक्षा दी जाती है—विशेषकर बच्चों के मनोविज्ञान, शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य आदि के विषय मे, Central Institute of Pediatrics मे एक विभाग बाल-शिक्षा तथा बाल-विकास का भी है। स्कूल पूर्व संस्थाओ तथा किंडरगार्टेनो मे डाक्टर की राय से ही भोजन तैयार किया जाता है। विशाल कमरे, उचित तथा पर्याप्त शिक्षा-सामग्री, बच्चो को छोटे-छोटे दलो में विभाजित करना और प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत निगरानी आदि सभी व्यवस्था की विशेषतायें हैं। विशेष खिलौने, पूर्व निश्चित कार्य-क्रम आदि द्वारा बालकों में मैत्री भाव तथा सामूहिक भावनाओ की चेतना उत्पन्न की जाती है। बालकों के माता पिता का ज्ञान, उनके समस्त घरेलू परिस्थितियों का बोध तथा अन्य आवश्यक बातें प्रत्येक शिक्षक के भाग में आती है।

प्रत्येक वर्ष ऐसी कमेटियो का चुनाव होता है जिनमें बालकों के माँ-बाप चुने जाते हैं। वे स्कूल चलाने के कार्य में सहायता करते हैं। इन कमेटियों मे अध्यापक-वर्ग सपना निकटतम सम्बन्ध रखता है—दोनों ओर से अनवरत प्रयास होते रहते हैं ताकि बच्चों की देख रेख उचित रूप से हो सके। ऐसी

१ सोवियत संघ में सार्वजनिक शिक्षा के ४० वर्ष, पृष्ठ २५-२६।

कि बालक तुलनात्मक स्वरूप से यह जान जायें कि रूसी संविधान अन्य प्रजातन्त्रीय संविधानों से अच्छा है। इसी प्रकार भूगोल का कोर्स छात्रों के दृष्टिकोण को भौतिकवादी बनाने में सहायक होता है। इन सप्त वर्षीय स्कूलों की अन्तिम कक्षाओं में भौतिक विज्ञान तथा रसायनशास्त्र भी पढ़ाये जाते हैं। सारांश यह है कि मेदिनिस्की महोदय के शब्दों में रूसी प्रारम्भिक स्कूलों की शिक्षा अमरीकी स्कूलों से अच्छी दी जाती है।[1]

यद्यपि जार के समय में यह अनुमान लगाया गया था कि रूस में सर्व-व्यापी शिक्षा की व्यवस्था में २५० वर्ष लगेंगे, आश्चर्यजनक बात है कि सोवियत संघ ने इस कानून को १४ अगस्त १९३० को पास करके कार्यान्वित करने में ३० वर्ष भी नहीं लिये। १९३० में प्राथमिक, सप्त-वर्षीय तथा माध्यमिक स्कूलों की संख्या १,३३,१९७ तथा छात्रों की संख्या १ करोड़ ३५ लाख थी। ध्यान रहे अक्टूबर क्रान्ति से पूर्व रूस में शिक्षा का प्रसार कम था विशेषकर रूस से बाहर—ताजकिस्तान, उजबेकिस्तान आदि में। १९४० में स्कूलों की संख्या १,७२,७५६ हो गई। पहली चार कक्षाओं में ही छात्रों की संख्या २ करोड़ ५ लाख हो गई। उदाहरण के रूप में १९१४ में ताजकिस्तान में छात्र संख्या केवल ४०० थी जब कि सन् १९४० में वह बढ़कर ३२,८०० हो चुकी थी। मध्य एशिया के सोवियत भाग में लड़कियों का स्कूल जाना तो अक्टूबर क्रान्ति के बाद ही प्रारम्भ हुआ है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण इन स्कूलों की प्रगति रुक गई थी। सोवियत स्त्री पुरुषों के अतीव साहस और निष्ठा के परिणामस्वरूप आज शिक्षा के क्षेत्र की प्रगति अपूर्व है। सप्त वर्षीय आज ग्राम ग्राम में खोल दिये गए हैं। माध्यमिक स्कूलों की संख्या भी अनवरत गति से बढ़ रही है।

सोवियत परीक्षाओं में छात्र ज्ञान को ५ श्रेणियों में विभक्त करते हैं— (१) बहुत खराब। (२) खराब। (३) सन्तोषजनक। (४) अच्छा। (५) बहुत अच्छा।

मेदिनिस्की महोदय के अनुसार निम्न पाठ्य-क्रम व्यवस्था सप्त-वर्षीय स्कूलों में है[2]—

१ मेदिनिस्की : पृष्ठ ५१-५६।

२ मेदिनिस्की : op. cit., p. 51.

योजनायें प्रायः होती रहती हैं विशेष
बालकों के भी ज्ञान चक्कर घुमाये जा

किंडरगार्टन में बच्चों को प्रारं
बालक सभी सीखे गये कार्यों को निश
बालकों को लगभग सभी आवश्यक
का निरीक्षण, गाना नाचना, पुस्त
सोवियत शिक्षा का प्रथम चरण है।

प्रत्येक दिन का कार्यक्रम लगभग

७ से १० बजे के बीच प्रात क
के अनुसार) १ घंटे बाल-क्रीड़ा या खे
गायन संगीत, पढ़ना, कहानी सुनाना
व्यायाम। इन पाठों का समय १५ से
तथा और सबसे अधिक उम्र वाले बच
तक होता है। सामान्य शिक्षा के पश्च
जहाँ वह खेलते हैं। कभी-कभी उन्हें
जाता है। ग्रीष्म काल में बच्चे अपने
पानी देते हैं तथा घास उखाड़ते हैं।
का बोध कराया जाता है।

मध्य-दिवसीय भोजन के उपरान्त
पर उन्हें चाय दी जाती हैं और खे
व्यतीत किया जाता है। इस प्रकार स
बनने के पथ पर अग्रसर है।

किंडरगार्टन

इन शिक्षकों के लिये विशेष प्रशि
तथा नई पुस्तकों की सूची स्वीकृति क
शिक्षा-शास्त्र, शिक्षा का इतिहास, मनो
की कला, प्रकृति की अध्ययन शैली, ल
तथा पाठन-क्रिया (School Practice

शिक्षा-शास्त्र प्रशिक्षण के प्रथम व

विषय	सप्ताह में प्रति कक्षा पाठ संख्या							अध्यापन काल के पूर्ण घंटों का योग
	१	२	३	४	५	६	७	
रूसी भाषा	१५	१४	१५	८	१०	८	७	२,५०८
अंकगणित	६	७	६	७	७	२	—	१,१५५
रेखागणित, बीजगणित	—	—	—	—	—	५	६	३६२
प्रकृति विज्ञान	—	—	—	२ (३)	२	३	२	३१४
इतिहास	—	—	—	३	२	३ (२)	२	३१४
रूसी संविधान	—	—	—	—	—	—	२	६६
भूगोल	—	—	—	३ (२)	३	२ (३)	२ (३)	३४६
पदार्थ विज्ञान	—	—	—	—	—	२	३	१६५
रसायन-शास्त्र	—	—	—	—	—	—	३ (२)	८३
विदेशी भाषा	—	—	—	—	४	४	३	३६३
शारीरिक शिक्षा	१	१	२	२	२	२	२	३६६
रेखांकन	१	१	१	१	१	१	—	१६८
मिकेनिकल रेखांकन	—	—	—	—	—	—	१	३३
गायन	१	१	१	१	—	—	—	१३२
योग	२४	२४	२५	२७	३१	३२	३२	७,४३५

नोट—कोष्ठों की संख्या विषयों के प्रति सप्ताह के घंटों के योग को वर्ष के उत्तरार्ध में बतला दी जाती है।

काल के अन्त तक पढ़ाया जाता है। इस काल में छात्रों से यह आशा की जाती है कि वह स्कूल पूर्व शिक्षा की सामग्री तथा पाठन-विधि दोनों के विषय मे विस्तार से जानकारी प्राप्त कर लें तथा उस ज्ञान को क्रियान्वित करने की शैली को भी जान लें। प्रारम्भ से ही शिक्षा-शास्त्र का सम्बन्ध बाल-शिक्षा से जोड़ दिया जाता है। शिक्षा-शास्त्र विषयों १६ मुख्य विषयों मे विभाजित किया जाता है। प्रत्येक विषय को निश्चित समय दिया जाता है—कुल १७२ घंटे इस सम्पूर्ण विषय को मिलते हैं।

निम्न प्रशिक्षण का पाठ्य-क्रम है[1]—

शिक्षा शास्त्र के उद्देश्य	२ घन्टे
कम्यूनिस्त शिक्षा के उद्देश्य तथा कार्य	४ ,,
सोवियत शिक्षा प्रणाली	२ ,,
स्कूल पूर्व शिक्षा, विकास तथा महत्त्व	३ ,,
बाल-शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा	३ ,,
स्कूल पूर्व शिक्षा के उद्देश्य, सिद्धान्त तथा तत्त्व (Content)	१० ,,
किन्डरगार्टन का शिक्षक	४ ,,
शारीरिक व्यायाम	७ ,,
खेल	२८ ,,
किन्डरगार्टन के कार्य (Occupations)	७ ,,
मैत्री भाव की शिक्षा	३ ,,
व्यवस्था रखने की शिक्षा	७ ,,
चरित्र शिक्षा	४ ,,
कार्य करने की आदतों की शिक्षा	४ ,,
प्रकृति तथा वातावरण की शिक्षा	६ ,,
मातृभाषा	४ ,,
प्रारम्भिक गणितीय विचारों के विकास से सम्बन्धित बातें	१० ,,
सौन्दर्य तथा ललित कला का प्रशिक्षण	४ ,,
त्यौहार तथा आमोद प्रमोद	५ ,,
योजनायें तथा रिकार्ड रखना	१२ ,,
किन्डरगार्टन तथा परिवार	१२ ,,

1 King, B. : Russia goes to School, pp. 76-77.

किन्डरगार्टन की व्यवस्था तथा उसका संगठन	१२ "
प्रारम्भिक शिक्षा के सिद्धान्त	२ "
किन्डरगार्टन तथा स्कूल	४ "
परीक्षा से पूर्व का दुहराने का काम	६ "

उपर्युक्त पाठ्य-क्रम से यह स्पष्ट है कि किन विषयों पर अधिक बल दिया जाता है। दस-वर्षीय सार्वजनिक क्रिया के लागू हो जाने के पश्चात् इस पाठ्य क्रम में भी परिवर्तन सम्भव है। विशेषकर यह शिक्षा संस्थायें केवल दो वर्ष का प्रशिक्षण काल ही रख पायेंगी। स्कूल माध्यमिक शिक्षा के स्तर के हो जायेंगे तथा उच्च शिक्षालयों में प्रशिक्षण कार्य होगा। फिर भी पाठ्यक्रम में अधिक परिवर्तन की कम आशा है।

हो सकी है। प्रत्येक छात्र को जो एक कक्षा में पढ़ता है। अन्य छात्रों के साथ समान विषय पढ़ना पड़ता है। कक्षा ८ और ९ में प्रत्येक छात्र को भौतिक शास्त्र तथा रसायनशास्त्र पढ़ना पड़ता है। इन माध्यमिक कक्षाओं में प्रारम्भिक स्कूल के विषयों से कुछ भिन्नता अवश्य है। रूसी (भाषा तथा साहित्य) भाषा-इतिहास से जोड़ दिया जाता है—बीजगणित तथा कला कक्षा ६ से और भूगोल तथा सामान्य विज्ञान कक्षा १० से नहीं पढ़ाये जाते। अन्य विषय जो अन्त तक पढ़ाये जाते हैं वह हैं गणित, इतिहास, भौतिकशास्त्र, रसायन-शास्त्र, विदेशी भाषा, साहित्य, शारीरिक व्यायाम, नक्षत्र-विद्या तथा चित्र कला (Draughtsmanship)—१९४८ के पश्चात से तर्क-शास्त्र भी पढ़ाया जाने लगा है। लड़कियों के स्कूलों में गृह कला, बाल-मनोविज्ञान आदि विषय भी पढ़ाये जाते हैं।

यह शिक्षा के इन्सपेक्टरों (निरीक्षकों) का काम है कि वह देखें छात्र ७ वर्ष की अवस्था मे स्कूल आते हैं और अनिवार्य शिक्षा अवधि से (७ वर्ष) पूर्व पढ़ना छोड़ते तो नहीं। सह-शिक्षा (Co-education) सोवियत शिक्षा की विशेषता रही है किन्तु कई कारणों से वह छात्र तथा छात्राओं की शिक्षा को अलग-अलग करने पर बाध्य हो गये हैं। यद्यपि अब भी यह कार्य पूर्ण नहीं हो सका है विशेषकर छोटे छोटे नगरों में।

छात्रों की संख्या में वृद्धि सोवियत शिक्षा की बड़ी विशेषता है—सन् १९५६-५७ के स्कूली वर्ष में सामान्य माध्यमिक स्कूलों के ८-१०वें दर्जों में सन् १९५०-५१ की तुलना मे छात्रों की संख्या ३:४ गुणा अधिक हो गई है (१:७ गुणा ग्रामीण क्षेत्रों मे) और वह कुल संख्या ६१,३१,००० थी। आज बहुत बड़ी संख्या में माध्यमिक स्कूलों के स्नातक छात्र (लड़के-लड़कियाँ) सामूहिक फार्मों, औद्योगिक केन्द्रों आदि में काम करते हैं। सोवियत संघ की अर्थ व्यवस्था में कार्य करने वाले माध्यमिक स्कूलों के स्नातक भिन्न भिन्न क्षेत्रों तथा इलाकों में निम्न कार्य करते हैं—साइबेरिया में और कज़ाकिस्तान की स्तेपियों की नयी भूमि मे खेती, बिजली बनाना, धातु-उद्योग, रासायनिक तेल साफ करना और मशीन निर्माण के कारखाने, कोयलें तथा अन्य काम करना।

---

1 Secondary Education in other Lands—A Brochure from Baroda 1956.

तृतीय भाग

शिक्षा का विद्यालयीय रूप

रूपरेखा—

१—प्रारम्भिक शिक्षा।
२—माध्यमिक शिक्षा।
३—उच्चतर शिक्षा।

पिछली १० वर्षीय शिक्षा में अत्यधिक कितावीपन का दोष था।[1]

इसलिये अब उसे व्यावहारिक बनाने के लिये विशेष प्रयत्न किये जा रहे हैं।

माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट और सामान्य शिक्षा दोनों ही बढ़ती जा रही हैं। सन् १९४३ के पश्चात युवा कारखानों के मजदूरों के लिये माध्यमिक शिक्षा का प्रबन्ध किया गया था, उस क्षेत्र में सोवियत संघ को आशातीत सफलता मिली। मशीनीकरण के कारण उत्पादन जटिल समस्याओं सुलझाव के लिये सोवियत नागरिक की शिक्षा को माध्यमिक स्तर का तो होना ही चाहिये, इसके अतिरिक्त उसे वातावरण में हो गये परिवर्तनों के विषय में जानकारी प्राप्त करने की लिये आवश्यक है पोलीटेक्निकल विषयों में शिक्षा दी जाय। इसलिये १९५५ से नया पाठ्य क्रम माध्यमिक स्कूलों में लगाया गया जिसमे उक्त विषयों (पालीटेक्निकल) को प्राथमिकता दी गई। इन विषयों की सहायता से छात्र उद्योग तथा खेती के कार्यों से परिचित हो जायगा। देहातों में खेती पशुओं की देख-भाल का कार्य भी सिखाया जाता है। बिजली की इंजीनियरिंग की शिक्षा नगरों की शिक्षा संस्थाओं में दी जाती है।

१९५४-५५ की नयी शिक्षा योजना[2]

१—४ कक्षा

(१) १९३९ की धाराओं के अनुसार प्रथम तीन कक्षाओं में २४ और अन्तिम वर्ष २६ घंटे प्रति सप्ताह प्रति कक्षा पढ़ाई होगी। कक्षा ५ के पश्चात ६ घंटे पढ़ाई के और बढ़ जायेंगे।

(२) प्रथम तीन कक्षाओं में १३ घंटे और कक्षा ४ में ९ घंटे सभी भाषा के दिये जायेंगे। पहली कक्षाओं में १ घंटा प्रति सप्ताह लिखने का है।

---

1 Ten-year school, offering a single curriculum for all children and characterized throughout by on extremely severe and Soviet bookish regiment."
Commitment to Education, p. 12.

2 King, B. : Russia Goes to School, pp. 90-96.

किन्डरगार्टेन की व्यवस्था तथा उसका संगठन	११ ,,
प्रारम्भिक शिक्षा के सिद्धान्त	२ ,,
किन्डरगार्टेन तथा स्कूल	४ ,,
परीक्षा से पूर्व का दुहराने का काम	६ ,,

उपर्युक्त पाठ्यक्रम से यह स्पष्ट है कि किन विषयों पर अधिक बल दिया जाता है। इस नवीन सार्वजनिक शिक्षा के लागू हो जाने के पश्चात् इस पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन सम्भव है। विशेषकर यह शिक्षा संस्थायें केवल दो वर्ष का प्रशिक्षण मात्र ही रख पायेंगी। स्कूल माध्यमिक शिक्षा के स्तर के हो जायेंगे तथा उच्च विद्यालयों में प्रशिक्षण कार्य होगा। फिर भी पाठ्यक्रम में अधिक परिवर्तन की कम आशा है।

(३) अंकगणित को प्रथम ५ कक्षाओं में ७ घंटे प्रति सप्ताह से घटाकर ६ कर दिया गया है।

(४) कक्षा ४ तक २ घंटे प्रति सप्ताह सोवियत इतिहास, भूगोल, प्रकृति अध्ययन को रक्खे गये हैं। कक्षा ५ में इतिहास को ३ घंटे प्रति सप्ताह मिले हैं।

(५) कक्षा ४ तक १ घंटा और ५ में २ घंटा प्रति सप्ताह स्कूल के फार्म या वर्कशाप में काम करने के लिये रक्खे गये हैं।

कक्षा ६ से १० तक के पाठ्य-क्रम परिवर्त्तन

(१) कक्षा ७ में २·५ घंटे प्रति सप्ताह से घटाकर २ घंटे प्रति सप्ताह रसायनशास्त्र के कर दिये गये हैं।

(२) कक्षा ६ में ३ घंटे प्रति सप्ताह भौतिक तथा रसायन शास्त्र और १ मनोविज्ञान तथा कक्षा १० में ५ घंटे रसायन शास्त्र और १ घंटा प्रति सप्ताह तर्क शास्त्र को दिया गया है।

कक्षा ४ के पश्चात का परिवर्द्धित पाठ्य-क्रम

विषय	कक्षा
(१) रूसी भाषा	कक्षा ५ से ७ तक
(२) रूसी पाठ	,, ५
(३) साहित्य	,, ८ से १० तक
(४) अंकगणित	,, ५
(५) प्राचीन इतिहास	,, ५ से ६ तक
(६) मध्यकालीन युग	,, ६ से ७ तक
(७) सोवियत संविधान	,, ७
(८) भौतिक शास्त्र	,, ७ से १० तक
(९) रसायन शास्त्र	,, ८
(१०) नक्षत्र ज्ञान	,, १०
(११) मनोविज्ञान	,, ९
(१२) तर्क शास्त्र	,, १०
(१३) शारीरिक शिक्षा	,, ५ से १० तक
(१४) कला	,, ५ से ६ तक
(१५) चित्र कला	,, ७ से ८ तक

तृतीय भाग

शिक्षा का विद्यालयीय रूप

रूपरेखा—

१—प्रारम्भिक शिक्षा ।
२—माध्यमिक शिक्षा ।
३—उच्चतर शिक्षा ।

उक्त विषयों की पुस्तकों में बहुत से परिवर्तन तथा संशोधन हो चुके हैं। इन परिवर्तनों के कारण आज के माध्यमिक स्कूलों का पाठ्य-क्रम किसी भी दशा में अन्य पश्चिमी देशों से पीछे नहीं है। सोवियत संघ की एक सी स्कूल व्यवस्था ने शिक्षा व्यवस्थापकों के सन्मुख बहुत सी परेशानियाँ नहीं रक्खीं। इंग्लैंड की तीन प्रकार की माध्यमिक शिक्षा ११+ की छाँट, धनी वर्गों के छात्रावास वाले स्कूल (Public Schools) जैसी व्यवस्था से उत्पन्न मतभेद, कलह आदि सोवियत संघ में स्वप्न में नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं कि रूस में छात्रावास वाले स्कूल नहीं—वस्तुतः उनकी संख्या तो बढ़ रही है; वरन् उनकी सीधी-सादी शिक्षा प्रणाली बहुत सी बातों से उन्हें दूर रखती है। इस दिशा में भारत ने पश्चिमी देशों की नकल करके जो छाँट करने के लिए स्कूलों में लगाने की मनोवैज्ञानिक योजना बनाई है उसकी सफलता के विषय में यद्यपि अभी अनुमान नहीं लगाया जा सकता किन्तु सफलता असम्भव सी लगती है। किसी भी देश में सफल नेताओं की उत्पत्ति केवल अच्छी माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था द्वारा ही दी जा सकती है। क्योंकि विश्वविद्यालय तक तो प्रत्येक छात्र नहीं पहुँच पाता किन्तु इन कक्षाओं में अनिवार्य शिक्षा होने के कारण छात्र आ ही जाते हैं। यहाँ भविष्य की योजनाओं की सफलता की नींव को मजबूत करने के लिए अच्छा ज्ञान देना ही हितकर रहता है। सोवियत संघ की शिक्षा निश्चित उद्देश्यों के कारण पथ-भ्रष्ट नहीं हो सकती। यद्यपि प्रत्येक राष्ट्र का कम्यूनिस्ट होना आवश्यक नहीं किन्तु शिक्षा के उद्देश्यों को तय करके उन्हें प्राप्त करने की चेष्टा करना प्रत्येक देश का मुख्य कार्य हो सकता है। इस दिशा में सोवियत उद्देश्य अन्य राष्ट्रों को मार्ग-प्रदर्शन कर सकते हैं। ध्यान रहे पथ-प्रदर्शन का अर्थ नकल नहीं है।

इन माध्यमिक स्कूलों में छात्र एक कक्षा से दूसरे कक्षा में वर्ष के अन्त में हुई परीक्षा के आधार पर चढ़ा दिये जाते हैं। स्नातक की परीक्षा माध्यमिक शिक्षा के अन्तिम तीन वर्षों के पाठ्य क्रम पर आधारित रहती है। इस परीक्षा में मौखिक तथा लिखित दोनों ही प्रकार से परीक्षा ली जाती है। अभी साहित्य तथा भाषा, बीजगणित, त्रिकोणमिति, रेखागणित, में उक्त दोनों परीक्षायें, सोवियत इतिहास, विदेशी भाषा भौतिक तथा रसायनशास्त्र में केवल मौखिक परीक्षा ली जाती है। स्वर्ण-पदक ५ अंक प्राप्ति पर दिये जाते हैं। ऐसे छात्रों को विश्वविद्यालय में बिना परीक्षा के ही प्रवेश मिल जाता है और उन्हें छात्रवृत्ति भी मिल जाती है।

१

प्रारम्भिक शिक्षा

प्रत्येक बालक ७ वर्ष की आयु पर स्कूल जाना प्रारम्भ करता है। प्रारम्भिक शिक्षा चार कक्षाओं में विभाजित है। प्रत्येक शिक्षा योजना तथा पाठ्य-क्रम प्रत्येक राष्ट्र की सरकार द्वारा निश्चित होता है; किन्तु समस्त सोवियत संघ में पाठ्य-क्रमों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। पाठ्य-क्रम के अनुसार प्रति दिन चार घन्टे पढ़ाई होती है, प्रति घंटा ४५ मिनट का होता है। स्कूल का वर्ष १ सितम्बर से प्रारम्भ होता है और ५ जून को समाप्त होता है। इसके बीच में ३ लम्बी छुट्टियाँ होती हैं जिनके कारण स्कूल वर्ष ४ भागों में विभाजित हो जाता है।

चूँकि बहुत से बच्चे स्कूल पूर्व संस्थाओं में बिना शिक्षा प्राप्त किये आते हैं इसलिए इन कक्षाओं में कार्य प्रारम्भ से ही किया जाता है। स्कूल के प्रारम्भिक सप्ताह बच्चों से परिचय प्राप्त करने में लगाये जाते हैं। बालकों को स्कूल नियमों से परिचय प्राप्त कराया जाता है। पठन-पाठन बालकों की मातृभाषा में होता है किन्तु उन राष्ट्रों में जहाँ रूसी भाषा बालकों की मातृभाषा नहीं है प्रारम्भिक शिक्षा के दूसरे वर्ष से अनिवार्य कर दी जाती है। निम्न पाठ्य विषय मुख्य है—कहानी, वार्तालाप, पाठ जो पाठ्य-पुस्तकों से पढ़ाये जाते

हैं। विज्ञान, भूगोल सम्बन्धी सैरें, प्राकृतिक विज्ञान, ऐतिहासिक भवनों का निरीक्षण तथा समीपवर्ती अजायबघर आदि देखना पाठ्य-क्रम के भाग हैं। इन्हीं कक्षाओं में रूसी भाषा से अच्छा परिचय करवा दिया जाता है, उसका लिखना, पढ़ना तथा बोलना आदि विशेष रूप से सिखाया जाता है। बालकों की वयस के उपयुक्त उनका रूसी साहित्य से भी परिचय करा दिया जाता है।

रूसी भाषा (तथा मातृ-भाषा) और गणित के साथ साथ पाठ्य-क्रम में इतिहास, भूगोल, रेखांकन तथा गायन भी होता है। चौथी कक्षा से रूसी भाषा एक अलग विषय की भांति पढ़ाई जाती है। प्रकृति विज्ञान (जल, वायु, मिट्टी आदि) पाठ सैरों की सहायता से पढ़ाया जाता है। इतिहास तथा भूगोल भी लगभग इसी प्रकार पढ़ाया जाता है। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में बालक प्रति वर्ष चढ़ा दिये जाते हैं। अन्तिम वर्ष में परीक्षा होती है। रूसी भाषा तथा गणित में—अ-रूसी क्षेत्रों में परीक्षा बालकों की मातृभाषा में भी होती है।

सोवियत संघ में प्रारम्भिक स्कूल दो प्रकार के होते हैं एक जिनमें ४ कक्षायें होती हैं तथा अन्य जिनमें ७ कक्षायें होती हैं। ४ कक्षाओं वाले स्कूलों से ७ कक्षाओं वाले स्कूल के अन्तिम ३ वर्षों में बालकों को भेज कर शिक्षा दी जाती है। प्रथम ४ कक्षाओं का पाठ्य क्रम दोनों प्रकार के स्कूलों में एक सा ही होता है इसलिए बालकों को नये स्कूल में कोई कष्ट नहीं होता। ग्रामीण क्षेत्रों के प्रारम्भिक स्कूल प्रायः ४ कक्षाओं वाले होते हैं।

सप्त-वर्षीय स्कूलों के ५ से ७ कक्षाओं में व्याकरण, शब्द-विन्यास तथा विराम-चिन्ह आदि के विषय में नियन्त्रित शिक्षा दी जाती है। पढ़ने के समय छात्रों को रूसी साहित्य से परिचित कराया जाता है। इन स्कूलों में गणित के सिद्धान्त तथा अभ्यास पक्ष दोनों ही पढ़ाये जाते हैं। प्राणि शास्त्र तथा वनस्पति शास्त्र दोनों ही अन्य सामान्य विषयों की भांति पढ़ाये जाते हैं किन्तु इनमें वैज्ञानिक शालाओं का प्रयोग भी करवाया जाता है। इसी प्रकार इतिहास प्राचीन पूर्व ग्रीक, रोम, मध्य-काल से लेकर आधुनिकतम विषयों तक के विषय में परिचय प्राप्त करवाता है—किन्तु पढ़ाते समय इतिहास राजाओं मात्र का वर्णन नहीं रहने दिया जाता—सामाजिक प्रगति का लेखा-जोखा बन जाता है। कार्य कारण अवस्थाओं तथा अन्य सामाजिक घटनाओं को विशेष रूप से पढ़ाया जाता है। वर्ग-संघर्ष की पूर्ण पृष्ठ-भूमि से बालकों को परिचित कराया जाता है। इस सब के पीछे मूल बात है मानव समाज के विकास से परिचय प्राप्त करना। रूसी संविधान भी इन स्कूलों में पढ़ाया जाता है और ध्यान रक्खा जाता है

निस्त बनने के लिये मस्तिष्क के मानवीय ज्ञान के भंडार से धनी (परिपुष्ट) बनाना है।" रूस की उच्च शिक्षा के परिणाम आज विश्वविदित हैं—राकेट, कृत्रिम Satellites आदि। इस क्षेत्र की प्रगति ने अमरीका, ब्रिटेन जैसे देशों को भी अपनी उच्च-शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन लाने को मजबूर कर दिया है।[1] विशेष रूप से इस सोवियत संघ की उच्च शिक्षा को ही यह श्रेय है कि उसने योरप के पिछड़े हुए देशों की सीमा से रूस को निकालकर आज विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों की श्रेणी में पहुँचा दिया है। एक प्रकार से रूसी औद्योगीकरण का कारण यदि कम्यूनिज़्म है तो वहाँ की उच्च शिक्षा भी है। क्योंकि बिना शिक्षा के यह सब सम्भव न था।

सोवियत उच्च शिक्षा संस्थाओं का विभाजन निम्न प्रकार से सम्भव है।

(१) विश्वविद्यालय (२) प्रशिक्षण संस्थायें (३) उच्च टेक्नीकल स्कूल (४) कृषि विद्यालय (५) अर्थ-शास्त्र तथा कानून के विद्यालय (६) चिकित्सा संस्थायें (७) पशुओं की चिकित्सा के लिए तैयार करने की शिक्षा संस्थायें (८) ललित कला स्कूल (९) *Physical Culture की संस्थायें। यद्यपि द्वितीय विश्व* युद्ध ने शिक्षा की प्रगति में बाधा डाली फिर भी प्रगति एकदम रुकी नहीं *और युद्ध विराम के पश्चात तो प्रगति और भी जोरों से हुई।*

नयी योजनाओं ने हाथ के काम पर बल दिया है। २ वर्ष का उपयोगी काम लगभग विश्वविद्यालय में जाने से पूर्व छात्रों को अनिवार्य सा कर दिया गया है। केवल विषयों पर ही नहीं वरन् सीखने की रुचि उत्पन्न करने पर बहुत बल दिया गया है। नये कोर्स के कारण आशा की जाती है *कि सोवियत* संघ के उच्च शिक्षा प्राप्त हाथ का काम करने की रुचि वाले होंगे। वैसे प्रत्येक सोवियत संघ का नागरिक (और अब तो *समस्त संसार के छात्र)* इन उच्च शिक्षा संस्थाओं में १७ से ३५ वर्ष की आयु तक जा सकता है। केवल एक ही *बाधा उसे वहाँ पहुँचने से रोक सकती है वह है प्रवेश परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना।* वैसे तो प्रत्येक माध्यमिक शिक्षा संस्था से स्वर्ण पदक प्राप्त छात्र इन संस्थाओं *में जा सकता है बिना किसी अतिरिक्त परीक्षा के।* किन्तु शेष सभी छात्रों को अपनी रुचि और दिशा के अनुरूप परीक्षा में बैठना होता है। परीक्षा का आधार माध्यमिक शिक्षा संस्था का कार्य होता है। इस प्रकार की परीक्षा द्वारा केवल मेधावी छात्रों को ही इन शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश मिल पाता है। उच्च

1 Counts, G.S. : Challenge of Russia.

उक्त सप्तवर्षीय योजना पर अपने विचार प्रकट करते हुए निकोलस डीविट महोदय का वचन है[1] कि इस योजना द्वारा सोवियत संघ में विशेषज्ञों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जायगा। इसका अर्थ होगा कि प्रथम ८ वर्षों की अनिवार्य शिक्षा के पश्चात् छात्र-छात्रायें १५ या १६ वर्ष की अवस्था मे विशेष विषय का चुनाव करेंगी। स्पष्ट है कि इस प्रकार की शिक्षा का परिणाम उसी विज्ञान की प्रगति मे प्रतिलक्षित होगा। माध्यमिक शिक्षा के समय उत्पादन-काम पर अधिक बल दिया जायगा। यह वैज्ञानिक तथा टैक्निकल महत्व वाले विषय रूस की भावी प्रगति के द्योतक हैं। निम्न सूची (Table) द्वारा डीविट महोदय ने अपनी बात की पुष्टि की है—

	१० वर्षीय शिक्षा १९५७ का पाठ्यक्रम		११ वर्षीय १९६३ का आयोजित पाठ्यक्रम		अध्यापन घन्टो मे
	अध्यापन घन्टे	प्रतिशत,	अध्यापन घन्टे	प्रतिशत,	बढ़न
सामान्य शिक्षा (भाषा, साहित्य विषय आदि)	४,६९२	४४%	४,८८४	३८	१९२
वैज्ञानिक विषय	३,३३२	३१%	३,७२७	२८	३९५
व्यावसायिक शिक्षा तथा अन्य योग्यता वाले काम	२,७६३	२५%	४,२१७	३३	१,४५४
योग	१०,७८७	१००	११,८२८	१००	२,०४१

हम भी उक्त सूची तथा निष्कर्ष से सहमत हैं। पर ध्यान रहे सोवियत संघ को अन्य पश्चिमी देशों के बराबर आने के लिये ही यह योजना बनानी पड़ी है।

---

more successfully will we solve the task of the communist upbringing of the younger generation.

"The Thesis" constitute a basic and essential part of the Seven year-plan which is designed to shape the development of the soviet economy and culture from Jan. 1, 1959 to Dec. 31, 1959.

1 Nicholas Dewitt : "Shool and Society" Journal, pp. 297-300, Sumner 1960.

के स्नातक अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकों से अच्छे बैठते हैं। बड़ी-बड़ी वैधशालाओं, पुस्तकालय तथा अन्य सुविधायें स्नातकों के कार्य को आसान करते हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सोवियत यूनियन में पत्रों द्वारा शिक्षा प्राप्त करना प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है। विशेषकर जो स्त्री-पुरुष काम में लगे हैं—जैसे फैक्ट्री के मजदूर, किसान, दफ्तरों के कर्मचारी आदि—क्योंकि वह घर बैठे अपना ज्ञान वर्धन भी कर सकते हैं और काम में भी लगे रह सकते हैं। पिछले लगभग ३० वर्षों से इस प्रकार की शिक्षा-कार्य चल रहा है। इस प्रकार की शिक्षा का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। सोवियत संघ में इस प्रकार के २२ स्कूल हैं उनमें ४५० पत्रों के उत्तर देने के विभाग हैं और सन् १९५८ में उनमें ७ लाख से अधिक स्त्री-पुरुष शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। इस प्रकार की शिक्षा संस्थायें यद्यपि प्रत्येक देश में होती हैं किन्तु सोवियत संघ में वह जनता के लाभ के लिये हैं न कि कुछ स्वार्थी जनों के मनोरंजन के लिये। इन संस्थाओं में केवल आयु पर ही कोई प्रतिबन्ध नहीं है अन्यथा इनमें प्रवेश के लगभग अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के नियम लागू होते हैं। और साथ-साथ यह छात्र उतना ही पाठ्य-क्रम भी पढ़ते हैं जितना अन्य संस्थाओं में। परीक्षा लेने के पूर्व तथा प्रवेश के समय विद्यार्थी को अपनी संस्था तक जाना पड़ता है। अनुसंधान आदि का कार्य भी वह समय-समय पर करते रहते हैं। यहाँ छात्र मशीनों का कोर्स भी पढ़ते हैं इसलिए समय-समय पर उन्हें वास्तविक अभ्यास के लिये किसी केन्द्र में जाना पड़ता है इस प्रकार के केन्द्रों की संख्या लगभग १५६ है।

चिकित्सा तथा शिक्षा के छात्र अपनी अन्तिम परीक्षा देने परीक्षा केन्द्र जाते हैं और अन्य छात्रों की भाँति ही पूर्ण परीक्षा देते हैं। इसके पश्चात् उन्हें उपाधि दी जाती है जो अन्य उपाधियों के बराबर ही होती है।

सोवियत उच्च शिक्षा की विशेषता अनुसन्धान और शिक्षा का अभिन्न सम्बन्ध है। इसी आधार पर विशेषज्ञों को शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालयों में प्रत्येक टर्म (term) के समाप्त होने पर प्रत्येक छात्र को एक पर्चा पढ़ना पड़ता है। यह अनुसन्धान पत्र प्रत्येक दृष्टि से लाभदायक होता है क्योंकि छात्रों के ज्ञान-वर्धन के अतिरिक्त इससे उन्हें अनुसन्धान करने की शिक्षा भी मिल जाती है। कभी-कभी किसी छात्र का अपूर्ण काम भी प्रत्येक के सम्मुख आ जाता है। सोवियत संघ में कार्य तथा शिक्षा दो भिन्न-भिन्न बातें नहीं हैं। इसलिए छात्रों को जीवन तथा भविष्य के कार्य दोनों से ही परिचित कराया

१८६३ तक आते-आते रूस में सामाजिक तथा राजनैतिक आन्दोलनों के कारण जागृति काफी हो चुकी थी इसलिये शिक्षा में भी इसका प्रभाव पड़ा। इस वर्ष एक नया चार्टर विश्वविद्यालय को मिला जिसके द्वारा उसे थोडी सी और भी स्वतन्त्रता दे दी गई। १९वी शताब्दी के अन्त तक मुख्य अध्यापको (प्रोफेसरों) तथा सहायक अध्यापकों की कुछ सीटें सदैव ही खाली रहती रहीं। क्या उन दिनों छात्र-वृत्ति कुछ ही लोगों को मिल पाती थी। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी १९१८ के विश्वविद्यालयों ने महान, यशस्वी व्यक्ति उत्पन्न किये।

निम्न आंकड़ों से स्पष्ट हो जायगा कि ज़ारों के काल में विश्वविद्यालय की प्रगति बहुत ही धीमी रही[1]—

	छात्र-संख्या	
विश्वविद्यालय	१८५०	१८९०
मास्को	८२१	३,२५७
सेन्ट पीटर्सबर्ग	३८७	१,७९९
कज़ान	३०९	,७८५
डेर्ट	५५४	१,६३०
खारकोव	३९४	१,३३२
कीव	५५३	२,०८२
ओडेसा	—	५४०
योग	३,०८१	११,४३१

(आ) सोवियत संघ में उच्च-शिक्षा[2]

इस प्रकार यद्यपि सोवियत रूस में १९१७ की क्रान्ति से पूर्व भी उच्च शिक्षा की संस्थायें थीं किन्तु कम्यूनिस्ट सत्ता के आगमन के पश्चात् इनको अपूर्व प्रोत्साहन मिला। यदि हम केवल १९१६ और १९२१ के आंकड़ों को ही तुलना करें तो हमें ज्ञात होगा कि विश्व अशान्ति और बाहरी विरोध के होते हुए भी इन उच्च शिक्षा संस्थाओं की संख्या कुछ ही वर्षों में ९१ से २७२ हो गई थी। १९५२ में इनकी संख्या बढ़ कर ८८० हो गई। इस प्रगति का मुख्य कारण सोवियत संघ की नीति परिवर्तन है। लेनिन ने कहा था "तुम्हें कम्यू-

१ गालिंकन : सोवियत यूनियन में वैज्ञानिक प्रशिक्षण, पृष्ठ २१।

2 G. Petrovsky : Higher Education in USSR, 1953, (Tass, New, Deldi).

के स्नातक अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकों से अच्छे बैठते हैं। बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय तथा अन्य सुविधायें स्नातकों के कार्य को आसान करते हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सोवियत यूनियन में पत्रों द्वारा शिक्षा प्राप्त करना प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है। विशेषकर जो स्त्री-पुरुष काम में लगे हैं—जैसे फैक्ट्री के मजदूर, किसान, दफ्तरों के कर्मचारी आदि—क्योंकि वह घर बैठे अपना ज्ञान वर्धन भी कर सकते हैं और काम में भी लगे रह सकते है। पिछले लगभग ३० वर्षों से इस प्रकार की शिक्षा-कार्य चल रहा है। इस प्रकार की शिक्षा का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। सोवियत संघ में इस प्रकार के २२ स्कूल हैं उनमे ४५० पत्रों के उत्तर देने के विभाग हैं और सन १९५८ में उनमे ७ लाख से अधिक स्त्री पुरुष शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। इस प्रकार की शिक्षा संस्थायें यद्यपि प्रत्येक देश में होती हैं किन्तु सोवियत संघ मे वह जनता के लाभ के लिये हैं न कि कुछ स्वार्थी जनों के धनोपार्जन के लिये। इन संस्थाओं में केवल आयु पर ही कोई प्रतिबन्ध नहीं है अन्यथा इनमे प्रवेश के लगभग अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के नियम लागू होते हैं। और साथ-साथ यह छात्र उतना ही पाठ्य-क्रम भी पढ़ते हैं जितना अन्य संस्थाओं में। परीक्षा लेने के पूर्व तथा प्रवेश के समय विद्यार्थी को अपनी संस्था तक जाना पड़ता है। अनुसंधान आदि का कार्य भी वह समय समय पर करते रहते हैं। यहाँ छात्र मशीनों का काम भी पढ़ते हैं इसलिए समय समय पर उन्हें वास्तविक अभ्यास के लिये किसी केन्द्र मे जाना पड़ता है इस प्रकार के केन्द्रों की संख्या लगभग १५६ है।

चिकित्सा तथा शिक्षा के छात्र अपनी अन्तिम परीक्षा देने परीक्षा केन्द्र जाते है और अन्य छात्रों की भाँति ही पूर्ण परीक्षा देते है। इसके पश्चात् उन्हें उपाधि दी जाती है जो अन्य उपाधियो के बराबर ही होती है।

सोवियत उच्च शिक्षा की विशेषता अनुसन्धान और शिक्षा का घनिष्ट सम्बन्ध है। इसी आधार पर विशेषज्ञों को शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालयों में प्रत्येक टर्म (term) के समाप्त होने पर प्रत्येक छात्र को एक पर्चा पढ़ना पड़ता है। यह अनुसन्धान पत्र प्रत्येक दृष्टि से लाभदायक होता है क्योंकि छात्रों के ज्ञान-वर्धन के अतिरिक्त इससे उन्हें अनुसन्धान करने की शिक्षा भी मिल जाती है। कभी-कभी किसी छात्र का अधूरा काम भी प्रोफेसर के [illegible] हो जाता है। [illegible] कार्य तथा शिक्षा दो भिन्न भिन्न बातें नहीं हैं। [illegible]

विद्यालय मे छात्र अपने विषय के अनुरूप ही परीक्षा देते हैं। जैसे उच्च टेक्नीकल स्कूल में प्रवेशार्थ छात्र निम्न विषय मे अपनी योग्यता प्रमाणित करता है—अकगणित, रसायनशास्त्र, भौतिक-शास्त्र, (Physics) रूसी भाषा और साहित्य तथा एक अन्य विदेशी भाषा (अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेन्च आदि।) अ–रूसी क्षेत्रों में उस स्थान की भाषा की योग्यता भी आवश्यक है।

अक्तूबर क्रान्ति से पूर्व भी मास्को विश्वविद्यालय मे निर्धन छात्र पढते थे। किन्तु उनकी संख्या नही के बराबर थी। आज सभी छात्र मजदूरों तथा किसानों के हैं उनमें एक भी किसी धनी या विशेष घराने का सदस्य नही है। ४० से अधिक Nationalities जिनकी कोई अपनी भाषा लिपि नहीं थी उन्हे सोवियत संघ की स्थापना के पश्चात भाषा लिपि दी गई। जिन इलाकों मे पहले जार के शासन काल मे उच्च शिक्षा संस्थायें नही थी वहां उनकी स्थापना हुई। इसी कारण एक बार स्तालिन ने कहा था "मेरे विचार मे इस नये समाजवादी बुद्धि जीवी वर्ग की उत्पत्ति हमारे देश की सांस्कृतिक क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण फल है।"

१९४६ के पश्चात् सोवियत संघ उच्च शिक्षा मन्त्रालय उच्च शिक्षा संस्थाओं से सीधे रूप से सम्बन्धित हो गया। फिर भी शिक्षकों तथा चिकित्सकों का प्रशिक्षण, ललित कला आदि में शिक्षा देने वाली संस्थायें भिन्न-भिन्न मन्त्रालयों के क्षेत्रों की सीमा के अन्तर्गत आती हैं जैसे शिक्षा मन्त्रालय की कार्य-सीमा के अन्तर्गत अध्यापक प्रशिक्षण विभाग आता है। यहाँ यह बात कहना आवश्यक है कि प्रत्येक जाति (Nationality) का अपनी उच्च शिक्षा मन्त्रालय है। १९५३ मे एक केन्द्रीय उच्च-शिक्षा Administration की स्थापना की गई—यह उच्च शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालयों को मिलाकर गई थी। इस नवीन व्यवस्था द्वारा ही उच्च शिक्षा के पाठ्य-क्रम तथा बनाई अन्य कार्य-वाहियों को स्वीकृति मिलती है।

प्रत्येक पढ़ाई का वर्ष १ सितम्बर में प्रारम्भ होकर २३ जनवरी और ७ फरवरी से १ जुलाई तक चलता है। प्रत्येक term से पूर्व परीक्षा होती है—और Practices कार्य को 'पास' कर दिया जाता है। एक निश्चित आधार पर Specialists का प्रशिक्षण दिया जाता है। सोवियत सरकार योजनानुसार प्रति वर्ष उच्च शिक्षा संस्थाओं से छात्र पढ़वाती हैं। इस कारण वहाँ पढ़े लिखों की बेकारी नाम की कोई भी चीज नहीं है। अध्यापन तथा Seminars दोनों ही शिक्षा देने के साधन हैं। इस प्रकार सोवियत संघ

के स्नातक अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकों से अच्छे बैठते हैं। बड़ी-बड़ी वेध-शालाएं, पुस्तकालय तथा अन्य सुविधायें स्नातकों के कार्य को आसान करते हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सोवियत यूनियन में पत्रों द्वारा शिक्षा प्राप्त करना प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है। विशेषकर जो स्त्री-पुरुष काम में लगे हैं—जैसे फैक्ट्री के मजदूर, किसान, दफ्तरों के कर्मचारी आदि—क्योंकि वह घर बैठे अपना ज्ञान वर्धन भी कर सकते हैं और काम में भी लगे रह सकते हैं। पिछले लगभग ३० वर्षों से इस प्रकार की शिक्षा-कार्य चल रहा है। इस प्रकार की शिक्षा का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। सोवियत संघ में इस प्रकार के २२ स्कूल हैं उनमें ४५० पत्रों के उत्तर देने के विभाग हैं और सन् १९५८ में उनमें ७ लाख से अधिक स्त्री पुरुष शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। इस प्रकार की शिक्षा संस्थायें यद्यपि प्रत्येक देश में होती है किन्तु सोवियत संघ में वह जनता के लाभ के लिये है न कि कुछ स्वार्थी जनों के धनोपार्जन के लिये। इन संस्थाओं में केवल आयु पर ही कोई प्रतिबन्ध नहीं है अन्यथा इनमें प्रवेश के लगभग अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के नियम लागू होते हैं। और साथ-साथ यह छात्र उतना ही पाठ्य-क्रम भी पढ़ते हैं जितना अन्य संस्थाओं में। परीक्षा लेने के पूर्व तथा प्रवेश के समय विद्यार्थी को अपनी संस्था तक जाना पड़ता है। अनुसंधान आदि का कार्य भी वह समय-समय पर करते रहते हैं। वहाँ छात्र मशीनों का कार्य भी पढ़ते हैं इसलिए समय-समय पर उन्हें वास्तविक अभ्यास के लिये किसी केन्द्र में जाना पड़ता है इस प्रकार के केन्द्रों की संख्या लगभग १५६ है।

चिकित्सा तथा शिक्षा के छात्र अपनी अन्तिम परीक्षा देने परीक्षा केन्द्र जाते हैं और अन्य छात्रों की भांति ही पूर्ण परीक्षा देते हैं। इसके पश्चात् उन्हें उपाधि दी जाती है जो अन्य उपाधियों के बराबर ही होती है।

सोवियत उच्च शिक्षा की विशेषता अनुसन्धान और शिक्षा का अभिन्न सम्बन्ध है। इसी आधार पर विशेषज्ञों को शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालयों में प्रत्येक टर्म (term) के समाप्त होने पर प्रत्येक छात्र को एक पर्चा पढ़ना पड़ता है। यह अनुसन्धान पत्र प्रत्येक दृष्टि से लाभदायक होता है क्योंकि छात्रों के ज्ञान-वर्धन के अतिरिक्त इससे उन्हें अनुसन्धान करने की शिक्षा भी मिल जाती है। कभी-कभी किसी छात्र का अपूर्व काम भी प्रत्येक के सम्मुख आ जाता है। सोवियत संघ में कार्य तथा शिक्षा दो भिन्न-भिन्न बातें नहीं हैं।
[illegible] के कार्य दोनों से ही परिचित कराया

जाता है। विज्ञान के छात्र को प्रयोगशाला में जाकर कार्य करना पड़ता है। टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र को वास्तव में फैक्ट्री में जाकर कार्य करना पड़ता है।

स्नातकों को किसी अध्यापक के निरीक्षण में कार्य दे दिया जाता है। उस अध्यापक को डाक्टर या केन्डीडेट की उपाधि से विभूषित होना चाहिए। प्रत्येक स्नातक को तीन वर्ष के कार्य के पश्चात् केन्डीडेट ऑव साइन्स की उपाधि के लिये परीक्षा देनी होती है और उसके लिए किसी अनुसन्धान विषय पर Thesis जमा करनी होती है। इस Thesis के जमा करने की तिथि Academic Council द्वारा स्वीकृत होती है, समाचार पत्रों में प्रेषित भी की जाती है। डिग्री अकेडिमिक काउन्सिल (विद्वत्परिषद) के गुप्त मतों (Secret Ballot) द्वारा होती है। डाक्टरेट की उपाधि भी इसी प्रकार दी जाती है—शर्त केवल यह है कि उस व्यक्ति को केन्डीडेट की उपाधि मिल चुकी हो और छात्र ने स्वतन्त्र रूप से किसी भौतिक विषय पर ज्ञान में वृद्धि की हो।

यद्यपि अक्तूबर क्रान्ति से भी पूर्व रूस में उच्च शिक्षा संस्थायें थीं और पढ़ाई होती थी किन्तु उस शिक्षा को इतना बड़ा प्रोत्साहन अभी हाल (१९१७ के बाद) में ही मिला है। बहुत से प्रोफेसर तो प्रारम्भ से ही निस्वार्थ कार्य कर रहे थे—जैसे क० तिमिर्याज़ेव, इ० पावलोव, अ० कर्पीन्स्की, अ० फेर्समन अ० विल्योव आदि। किन्तु १९१७ के पश्चात् तो अभूतपूर्व गति से प्रगति हुई है। दैनेको महोदय के शब्दों में १९१४-१५ के स्कूली वर्ष की तुलना में उच्च शिक्षा संस्थाओं की संख्या १०५ से बढ़कर ७६७ हो गई है (सोवियत संघ की वर्तमान सीमाओं के भीतर) जब कि छात्रों की संख्या १,२७,४०० से बढ़कर २०,०१,००० । १९५५-५६ के स्कूली वर्ष में औद्योगिक तथा निर्माण सम्बन्धी संस्थानों में १,६५,६०० अर्थशास्त्र और कानून के उच्च शिक्षा स्कूलों में १,०६,७०० छात्र अध्ययन कर रहे थे। १९५६ में उच्च शिक्षा संस्थाओं में ४,५८,७०० छात्रों ने प्रवेश प्राप्त किया, जिनकी गिनती १९५० की तुलना में १,०६,६०० अधिक थी।"

सोवियत संघ में अब ३५ राजकीय विश्वविद्यालय हैं जिनमें से २१ की स्थापना सोवियत काल में की गई है। मास्को विश्वविद्यालय (स्थापना १७५५) सोवियत संघ का सबसे बड़ा उच्च शिक्षा केन्द्र है। इसमें १२ विभाग हैं, १५,२०० छात्र हैं, २१,५०० अध्यापक तथा वैज्ञानिक कार्य कर रहे हैं। लगभग प्रत्येक अच्छे छात्र को २२० से लेकर ६६० रूबल तक

की मासिक सहायता राज्य द्वारा मिलती है। "बहुत अच्छे" छात्रों को २१% छात्रवृत्ति से अतिरिक्त धन भी मिलता है। प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्था का संचालक (डाइरेक्टर) इस राशि का विभाजन करता है। मास्को विश्वविद्यालय के लगभग ६५ प्रतिशत छात्रों को सहायता मिलती है। स्नातकों को छात्रवृत्ति विभिन्न प्रकार के सूत्रों से मिलती है। उनमें मुख्य हैं प्रख्यात व्यक्तियों के नाम पर प्रारम्भ की गई छात्र-वृत्ति जैसे स्तालिन छात्र-वृत्ति या बुर्देन्को छात्रवृत्ति आदि। स्तालिन पुरस्कार सबसे उच्च कोटि का पुरस्कार है लगभग १०० स्तालिन छात्र-वृत्तियाँ मास्को विश्वविद्यालय के स्नातकों को दी जाती हैं। इस प्रकार आर्थिक अभावों से मुक्त छात्र को अपने जीवन का सबसे अच्छा भाग शिक्षा में लगाने का स्वर्ण अवसर मिलता है। इंगलैंड के विश्वविद्यालय के स्नातक भी इस अभाव से मुक्त होकर पढ़ते हैं।

चाहे किसी भी क्षेत्र का छात्र क्यों न हो उसे कुछ विषयों का अध्ययन अनिवार्य है जैसे—(१) मार्क्स, लेनिन के विचार आदि, (२) ऐतिहासिक तथा तर्क-युक्त भौतिकवाद (३) राजनीतिक अर्थशास्त्र। के सोवियत शिक्षा में उत्पादन तथा अध्ययन में सम्बन्ध बनाये रखने पर बल दिया जाता है। इसलिये पाठ्यक्रम में उत्पादन-अभ्यास पर बल दिया जाता है। इस अभ्यास के लिये प्रयोगशालाओं की कमी नहीं है। आधुनिकतम यन्त्रों से सुसज्जित सोवियत प्रयोगशालायें विश्व की प्रमुख प्रयोगशालाओं में से हैं। सोवियत् संघ की उच्च शिक्षा में राजनीतिक शिक्षा को महत्व दिया जाता है। यहाँ कम्यूनिज्म के सिद्धान्त, वर्ग-संघर्ष, सोवियत संघ के उद्देश्यों आदि की शिक्षा भी दी जाती है। इस कार्य में पार्टी, कोम्सोमोल और श्रम-संघ बहुत महत्वपूर्ण योग देते हैं। खेल के मैदान में भी यह उच्च शिक्षार्थी किसी भाँति कम नहीं। इन संस्थाओं के अपने क्लब हैं—छात्र-खेल-मण्डल आजकल बहुत ही लोकप्रिय हो गये हैं।

सोवियत उच्च शिक्षा-संस्थाओं में न केवल छात्रों का अध्यापन ही किया जाता है वरन् इनमें वैज्ञानिक अन्वेषण कार्य तथा उच्च शिक्षा स्कूलों के लिये अध्यापकों का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के अनुसार प्रशिक्षण भी किया जाता है। सन् १९५६ में उच्च-शिक्षा संस्थाओं में कुल १६,८०० स्नातकोत्तर छात्र [illegible]।

जाता है। विज्ञान के छात्र को प्रयोगशाला में जाकर कार्य करना पड़ता है। टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र को वास्तव में फैक्ट्री में जाकर कार्य करना पड़ता है।

स्नातकों को किसी अध्यापक के निरीक्षण में कार्य दे दिया जाता है। उस अध्यापक को डाक्टर या केन्डीडेट की उपाधि से विभूषित होना चाहिए। प्रत्येक स्नातक को तीन वर्ष के कार्य के पश्चात् केन्डीडेट ऑव साइन्स की उपाधि के लिये परीक्षा देनी होती है और उसके लिए किसी अनुसन्धान विषय पर Thesis जमा करनी होती है। इस Thesis के जमा करने की तिथि Academic Council द्वारा स्वीकृत होती है, समाचार पत्रों में प्रेषित भी की जाती है। डिग्री अकेडेमिक काउन्सिल (विद्वत्परिषद्) के गुप्त मतों (Secret Ballot) द्वारा होती है। डाक्टरेट की उपाधि भी इसी प्रकार दी जाती है—शर्त केवल यह है कि उस व्यक्ति को केन्डीडेट की उपाधि मिल चुकी हो और छात्र ने स्वतन्त्र रूप से किसी भौतिक विषय पर ज्ञान में वृद्धि की हो।

यद्यपि अक्तूबर क्रान्ति से भी पूर्व रूस में उच्च शिक्षा संस्थायें थीं और पढ़ाई होती थी किन्तु उस शिक्षा को इतना बड़ा प्रोत्साहन अभी हाल (१९१७ के बाद) में ही मिला है। बहुत से प्रोफेसर तो प्रारम्भ से ही निस्वार्थ कार्य कर रहे थे—जैसे क० तिमिर्याज़ेव, इ० पावलोव, अ० कर्पोन्स्की, अ० फेर्समन अ० क्रिलोव आदि। किन्तु १९१७ के पश्चात् तो अभूतपूर्व गति से प्रगति हुई है। देनेको महोदय के शब्दों में १९१४-१५ के स्कूली वर्ष की तुलना में उच्च शिक्षा संस्थाओं की संख्या १०५ से बढ़कर ७६७ हो गई है (सोवियत संघ की वर्तमान सीमाओं के भीतर) जब कि छात्रों की संख्या १,२७,४०० से बढ़कर २०,०१,००० । १९५५-५६ के स्कूली वर्ष में औद्योगिक तथा निर्माण सम्बन्धी संस्थानों में १,६५,६०० अर्थशास्त्र और कानून के उच्च शिक्षा स्कूलों में १,०६,७०० छात्र अध्ययन कर रहे थे। १९५६ में उच्च शिक्षा संस्थाओं में ४,५८,७०० छात्रों ने प्रवेश प्राप्त किया, जिनकी गिनती १९५० की तुलना में १,०६,६०० अधिक थी।"

सोवियत संघ में अब ३५ राजकीय विश्वविद्यालय हैं जिनमें से २३ की स्थापना सोवियत काल में की गई है। मास्को विश्वविद्यालय (स्थापना १७५५) सोवियत संघ का सबसे बड़ा
१२ विभाग हैं, १५,५००
कर रहे हैं।

है कि सोवियत संघ शीघ्र ही आदर्श अवस्था को प्राप्त हो जायगा। ज्ञान के वैज्ञानिक क्षेत्र में रूस ने जो तहलका मचाया है वह किसी से छिपा नहीं है। उसकी महान खोजें, मानवीय ज्ञान के क्षितिज विस्तार के साथ-साथ मानवीय सुख और शान्ति की प्राप्ति में सहायक हुई हैं। इस क्षेत्र के कार्य वहाँ की उच्च शिक्षा-संस्थाओं के जीवित तथा ज्वलन्त उदाहरण हैं।

सोवियत संघ की उच्च शिक्षा ने स्त्रियों के योग की ओर भी ध्यान दिया है। जहाँ १९१४ से पूर्व केवल कुछ ही स्त्रियाँ उच्च शिक्षा संस्थाओं तथा संस्थानों में प्रवेश कर पाती थीं आज उनकी संख्या पुरुषों के लगभग बराबर है। मेदिनिस्की महोदय ने १९३८ में अन्य प्रगतिशील पश्चिमी देशों से सोवियत संघ की तुलना करते हुए कुछ आँकड़े दिये थे—वह इस प्रकार है जब कि फ्रांस में उच्च शिक्षा संस्थाओं में जाने वाली छात्राओं की संख्या कुल छात्रों की २८·२%, इंगलैंड में २३·५%, इटली १७·८% और बेल्जियम १३·८% थी उस समय सोवियत संघ में ४३.१% थी।

पिछले वर्षों में उच्च शिक्षा संस्थाओं के अध्यापकों के वेतन बढ़ा दिये गये हैं। अब यह सम्भव है कि प्रमुख अध्यापकों को १० हज़ार रूबल प्रति माह वेतन मिल जाय।

उच्च-शिक्षा संस्था का छात्र

अन्य प्रगतिशील पश्चिमी देशों के छात्रों की भाँति सोवियत संघ के शिक्षार्थी विशेष ध्येय से उच्च संस्थानों या संस्थाओं में आते हैं। यद्यपि बाद में वह अपने फैसले को बदल भी सकते हैं फिर भविष्य के Profession अनुरूप ही वह उन संस्थाओं की परीक्षा में बैठते हैं। ३५ वर्ष तक की आयु के छात्र के विश्वविद्यालय में वैसे ही प्रवेश पा लेते हैं किन्तु उससे अधिक आयु वालों को संध्या-कालीन संस्थाओं या पत्र व्यवहार द्वारा शिक्षा लेनी पड़ती है। विभिन्न प्रकार की संस्थाओं, अनुभवों तथा आयु के कारण उच्च शिक्षा-संस्था के विद्यार्थी गण मिले-जुले समूह का रूप ले लेते हैं।

प्रायः विद्यार्थी राजनैतिक संस्था कोम्सोमोल के सदस्य बन जाते हैं। १९ वर्ष की आयु में उन्हें मत देने का अधिकार मिल जाता है और २३ वर्ष की अवस्था में लोक सभा के सदस्य हो सकते हैं। कभी-कभी विवाहित छात्र और छात्रायें पढ़ने आते हैं इसलिए इन संस्थाओं से लगी हुई स्कूल पूर्व तथा

	१९४७-४८	१९४९-५०
डाक्टर	१,००२	१,१७१
केन्डीडेट	२६,७२	१,३२८
	३,६७४	२,४९९

विदेशी भाषाओं के अध्यापकों की योग्यता बढ़ाने के प्रयत्नों में सोवियत संघ को आशातीत सफलता मिली है। विदेशी भाषाओं में सोवियत साहित्य का प्रकाशन बढ़ता जा रहा है—राजनैतिक क्षेत्रों में सफलता के कारण उसका अन्य देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ रहा है। स्पष्ट है कि इन भाषाओं के ज्ञान की उन्हें कितनी आवश्यकता है। ज्ञान की वृद्धि में सोवियत लोग भाग ले सकें—प्रयत्न होते रहते हैं कि विदेशी खोजें संघ में लोगों को ज्ञात होती रहें। इस प्रकार विदेशी भाषाओं का महत्व बढ़ गया है। इस क्षेत्र में भारतीय शिक्षा से तुलना हो सकती है। इस देश में लगभग प्रत्येक छात्र अंग्रेजी पढ़ता है—साधारण योग्यता के अध्यापकों द्वारा एक कक्षा ३० छात्रों की पढ़ाई का स्तर कितना ऊँचा हो सकता है यह केवल सोचने की बात है। कम वेतन, छात्र-रुचि, उचित उपकरणों की न्यूनता आदि बातों के विषय में तो कहने की आवश्यकता ही नहीं है। बिना किसी एक भारतीय भाषा को विकसित किये और योग्य अध्यापकों, उचित उपकरणों के मेधावी छात्रों को, जो रुचि के कारण विदेशी भाषा पढ़ते हैं; पढ़ाये भारत की शिक्षा व्यवस्था का इस दिशा में विकास असम्भव है। ध्यान रहे अंग्रेजी ही समस्त ज्ञान का भंडार नहीं। प्रत्येक नगर में अन्य भाषाओं का स्कूल या कक्षा होनी चाहिये जिन्हें सरकार द्वारा प्रोत्साहन मिले।

इसी सप्त-वर्षीय योजना के मुताबिक सन् १९५५ में २३,००,००० विशेष स्नातक, उच्च शिक्षा संस्थाओं में दर्ज होंगे।

किन्डरगार्टन संस्थायें हैं। प्रशिक्षण काल में विवाह एक साधारण सी बात है इसलिए उनके बच्चों के लिये उचित प्रबन्ध हैं।

छात्र और छात्राओं को बराबर सम्मान दिया जाता है। चूंकि सोवियत छात्र एक पूर्ण नागरिक हैं उन्हें बहुत से खेल जो अन्य देश के छात्र खेलते हैं बच्चों के खेल से लगते हैं। वह सभ्य आचरण की ओर अधिक ध्यान देते हैं फिर भी वह जीवन के आनन्द की ओर से न तो उदासीन हैं और न उसके अयोग्य।

विश्वविद्यालयों में नियमित (regular) प्रशिक्षण के अतिरिक्त भी अन्य प्रकार से उच्च शिक्षा प्राप्ति सम्भव है। वैज्ञानिकों तथा अध्यापकों की योग्यता बढ़ाने के लिये उन्हें एक वर्ष के लिये किसी उच्च शिक्षा संस्था से लगा दिया जाता है—वहाँ वह अपनी प्रथम डिग्री (केन्डीडेट) की उपाधि के लिये तैयारी करते हैं तथा परीक्षा समय पर तर्क द्वारा अपनी खोज को उचित सिद्ध करते हैं। इस प्रकार की छूट तथा शिक्षा-व्यवस्था ने सोवियत संघ को बड़ी सहायता पहुँचाई है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक सोवियत नागरिक जिसने कभी उच्च शिक्षा-संस्था मे अध्ययन किया है किन्तु कोई उपाधि नही ली, वह दुबारा बिना अपना कार्य छोड़े उपाधि की तैयारी कर सकता है। यह लगभग भारत की (External) बाहरी छात्रों की शिक्षा व्यवस्था से मिलती जुलती व्यवस्था है यहाँ शिक्षा का स्तर अन्य छात्रों के जैसा ही होता है जो विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं। कभी-कभी किसी विशेष इलाके से छात्रों को योग्यता तथा रुचि के आधार पर बड़े नगरो के उच्च शिक्षा केन्द्रो में शिक्षा के लिये भेज दिया जाता है।

सोवियत शिक्षा मे सामाजिक विज्ञान के छात्र कम हैं इसलिये अनवरत चेष्टाओं के बाद भी छात्रों तथा अध्यापकों की कमी दूर नहीं हो सकी हैं। अनुमान लगाया जा सकता है कि इस न्यूनता का कारण विज्ञान पर विशेष ध्यान है। सोवियत संघ की वैज्ञानिक प्रगति ने सामाजिक विषयों के प्रति छात्रों मे पहले जैसी अभिरुचि नहीं रखी। जागरूक सोवियत सत्ता इस दिशा मे छात्रवृत्ति, विशेष सुविधाओं आदि से छात्रों को आकर्षित कर रही है। पिछले वर्षों मे फिर भी संख्या घटती जा रही है।

समुचित प्रबन्ध कर दिया जाता है। किन्तु परीक्षा ही प्रवेश का निर्णय करती है। मास्को के कला स्कूल में तो छात्रों को ११ वर्ष की आयु अर्थात् प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् ही ले लिया जाता है और ७ वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाता है। छात्र कितने भी प्रतिभाशील क्यों न हों उनके समय का बड़ा भाग सामान्य पाठ्य-क्रम पढ़ने में व्यतीत होता है। यह अवश्य है कि विशेष प्रतिभा को योग्य व्यक्तियों द्वारा निखार दिया जाता है। इस व्यवस्था का कारण सोवियत संघ का विश्वास है कि प्रत्येक नागरिक का सर्वांगीण विकास होना चाहिये।

उक्त संस्थाओं के अतिरिक्त सोवियत संघ में ऐसे भी स्कूल हैं जहाँ पिछड़े हुए छात्र या अन्य बुद्धि-विकृति वाले व्यक्तियों को शिक्षा दी जाती है। इन विकृत छात्रों को साधारण नागरिक बनाना, इस प्रकार के स्कूलों का उद्देश्य है। अन्धे, बहरे या गूँगे व्यक्तियों की शक्तियों को सचेतन करना तथा उन्हें उनकी दुर्बलताओं से ऊपर उठाना सोवियत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। मिस किंग के अनुसार १९५४ में बहरे तथा गूँगों के ३५ स्कूल थे। मस्तिष्क के अनुसन्धान के लिये लेनिनग्राड तथा दोनों ही स्थानों में विशेष विभाग हैं। बच्चों के विशेषज्ञों के संस्थान में भी डाक्टरों तथा विशेषज्ञों आदि का प्रशिक्षण होता है। इसके साथ अन्य अकादमियाँ भी हैं जहाँ इस शरीर या मस्तिष्क को विभ्रम अवस्था पर अनुसन्धान होते रहते हैं।

सात वर्ष से कम की आयु के बधिर तथा गूँगों बालकों के अपने किंडर गार्टन अलग है। १२ या १५ छात्रों का एक गुट होता है तथा विशेष ध्यान पढ़ाने के उपकरण, ढंग आदि पर दिया जाता है। ओष्ठ पाठन-विधि द्वारा शिक्षा दी जाती है। छात्र के वातावरण के देखने की चीजों द्वारा उन्नत किया जाता है। *१८ वर्ष तक की सामान्य शिक्षा उक्त छात्रों के लिये अनिवार्य है।* साधारणतया इस प्रकार के स्कूलों में रहने की व्यवस्था है। *प्रत्येक प्रकार की सामग्री का प्रयोग इसलिये किया जाता है कि उनकी दुर्बलतायें दूर हो जायें।*

इन स्कूलों के अध्यापक चार वर्ष का *विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होते* हैं। सामान्य स्कूलों के अध्यापकों से इन लोगों का २५ *प्रतिशत वेतन अधिक* होता है तथा माध्यमिक कक्षाओं में इनके छात्रों की संख्या *भी कम होती* है। किन्तु यह ध्यान रक्खा जाता है कि पढ़ने में पिछड़े हुए *छात्रों तथा* मस्तिष्क के दोष वाले कौन-कौन हैं। क्योंकि प्रथम कोटि के छात्रों *का इलाज*

चतुर्थ भाग

शिक्षा का विशिष्ट रूप

रूपरेखा—

१—विशिष्ट विद्यालयीय शिक्षा ।
२—प्रौढ़-शिक्षा ।
३—अध्यापक प्रशिक्षण शिक्षा ।

२

प्रौढ़-शिक्षा

लेनिन ने कहा है "अपढ़ व्यक्ति राजनीति के बाहर है और उसे पहले वर्णमाला पढ़ाई जानी चाहिये।" यह तो प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि सोवियत संघ का उद्देश्य वहाँ पर कम्यूनिज्म को लाना है। इसलिये अशिक्षित व्यक्ति को शिक्षा देने के कार्य में उनके यहाँ शैथिल्य सम्भव नहीं। म० दैनेको ने १८९७ की जनगणना के अनुसार सभा में साक्षरता कुल २४ प्रतिशत बताई है। उनमें स्त्रियाँ पुरुषों से लगभग ३ गुना अधिक अशिक्षित थीं। भारत की साक्षरता का अनुपात आज लगभग इतना ही है इसलिए हमारे लिए उस समय की साक्षरता अत्यधिक रूप से प्रगति-सूचक चिह्न लगेगी।

अक्तूबर क्रान्ति के बाद सोवियत संघ ने साक्षरता आन्दोलन प्रारम्भ किया। ५० वर्ष की आयु के व्यक्तियों के लिये पढ़ना-लिखना अनिवार्य कर दिया। शिक्षा के प्रति समाजवादी रूस कितना उन्मुख है इसका परिचय हमें इस बात से लगता है कि १९१९ में गृह-युद्ध के समय उनकी सरकार ने लाल-सेना में शिक्षा अनिवार्य कर दी। निरक्षरता उन्मूलन में प्रत्येक श्रेणी के छात्र व्यावसायिक स्त्री-पुरुष, तथा कम्यूनिस्ट लोगों ने भाग लिया। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए १९२० में एक सोवियत संघ में असाधारण आयोग बनाया गया जिसकी शाखाएँ देश-व्यापी थीं। यह आयोग निरक्षरता उन्मूलन

स्थानीय संस्थायें थीं जिनके द्वारा ५० लाख कार्य करने वाले लोगों को एक सूत्र में बाँधा गया था। सन् १६२८ से ३२ तक के बीच निरक्षरता का उन्मूलन करने वाले स्कूलों में ३ करोड़ २० लाख लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। सन् १६३२ में ग्रामीण क्षेत्रों में १ करोड़ १६ लाख से अधिक लोग स्कूलों में जा रहे थे जब कि सन् १६२२ में उनकी संख्या केवल १२ लाख थी।

"निरक्षरता और अर्ध-साक्षरता के विरुद्ध लड़ी जाने वाली लड़ाई बड़े पैमाने पर जारी रही। सन् १६२० से ३६ तक के बीच निरक्षरों के स्कूलों में लगभग ५ करोड़ और अर्ध-साक्षरों के स्कूलों में लगभग ३ करोड़ लोगों को पढ़ाया गया।

"नगर और देहात की जन-संख्या तथा पुरुषों और स्त्रियों की साक्षरता के बीच की बड़ी खाई को भर दिया गया। सन् १६३६ में नगरों में ५० वर्ष की आयु तक शिक्षितों की प्रतिशत ६४.२ और देहातों में ८६.३; साक्षर पुरुषों की संख्या ६५.१ तथा स्त्रियों की ८३.४ थी।"

भ्रमण-शील पुस्तकालय, पुस्तक वाहक, श्रमिकों, सामूहिक कृषकों और दफ्तर के कर्मचारियों आदि ने साक्षरता-आन्दोलन में बड़ा सहयोग दिया। शताब्दियों पुरानी निरक्षरता के उन्मूलन में प्रमुख पुस्तकालय है। १६३६ में उनकी संख्या ६१ हजार ८ सौ तथा पुस्तकों की संख्या २,४०,६०० थी। उस समय चल-पुस्तकालयों की संख्या ५४ हजार थी। पिछले १० वर्षों में इन सबकी संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए पुस्तकालयों की संख्या १,४७,४०० थी और पुस्तकों के स्टाक में लगभग ६ गुना वृद्धि हुई है। आज सोवियत संघ के बड़े-बड़े पुस्तकालय अन्य देशों से पुस्तक-विनिमय करते हैं।

आज सोवियत संघ निरक्षर नागरिक नहीं है। किन्तु उनमें से बहुत से ऐसे व्यक्ति अवश्य हैं जिन्होंने प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है। इसलिये प्रौढ़ नागरिकों के लिए इस प्रकार के अलग स्कूल हैं जो पाठ्य क्रम तथा कोमत में उन शिक्षा-श्रेणियों के बराबर है। इनमें पढ़ाई प्रायः शाम को ही होती है। जो लोग इन संस्थाओं से बहुत दूर रहते हैं उनके लिये पत्र-व्यवहार स्कूल हैं उनका पाठ्य-क्रम तथा योग्यता अन्य स्कूलों के बराबर ही है।

सरल है—जिन व्यावहारिक, वातावरण की कमी आदि के दोषो के कारण जो छात्र पढ़ाई में पिछड़ जाते है उन्हें अन्य छात्रों के बराबर लाया जा सकता है। मस्तिष्क के दोष वाले छात्रों का साधारण छात्रो के बराबर लाना कठिन होता है। इस कोटि के छात्रो के लिये आवश्यकतानुसार स्कूल खोल दिये जाते हैं।

स्नायुक तथा अन्य विशेषज्ञ इन स्कूलों में सदैव सहायतार्थ उपस्थित रहते है। वैसे सामान्य बुद्धि पर आधारित परीक्षायें ही दी जाती हैं जो छात्रों की प्रतिक्रियाओं को किसी विशिष्ट उम्र पर रखती हैं। इन स्कूलो की पढ़ाई का ढग वैज्ञानिक तथा आधुनिक है। पढ़ाई की क्रिया में काम करने पर अधिक बल दिया जाता है। अन्य पश्चिमी देशों मे विशेषकर इंग्लैंड मे भी इसी पद्धति को अपनाया जाता है। इस प्रकार की पद्धति का परिणाम अच्छा रहा है। उनके प्रसारित आंकड़ों के अनुसार सफलता ६० प्रतिशत मिलती रही है।

शरीर के विशेष कमजोर छात्रो के लिए अलग स्कूलों का प्रबन्ध है। यह स्कूल प्राय: खुले हुए स्थानों में होते हैं। गठिया, क्षय आदि रोगो के बालक इन स्कूलो में जाते हैं। इन स्कूलो को उद्योग चलाते है जिनमें जंगल के स्कूल (Forest School) एक आम बात है। डेरी, फार्म, पशु, फल-फूल आदि प्रायः इन स्कूलों में होते हैं इस प्रकार अमरीकी 'करो और सीखो' वाली बात यहाँ भी लागू होती है।

वैसे शरीर के रोग तथा रोग की स्थिति के अनुरूप ही स्कूलों का कार्यक्रम चलता है। प्रायः पाठ्यक्रम अन्य साधारण स्कूलों के जैसा ही होना है यद्यपि उनका पढ़ाने का समय आदि कम होता है। फिर पढ़ाने की पद्धति भी अन्य स्कूलों से भिन्न होती है। इन स्कूलों की शिक्षा अवधि के पश्चात् भी डाक्टरो द्वारा निरीक्षण बन्द नहीं होता और अन्य पश्चिमी देशों की भाँति उचित स्थान और योग्यता के अनुसार काम इन छात्रों को मिल ही जाता है।

प्रत्येक बड़े नगर मे अन्य साधारण दिवस विश्वविद्यालय के समानान्तर रात्रि-विश्वविद्यालय होते हैं जहाँ लगभग सभी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था है। यह विश्वविद्यालय शिक्षा-मन्त्रालय, उद्योग, आर्थिक या व्यवस्था-संघ या कृषि मंत्रालय द्वारा चलाये जाते हैं। इन विश्वविद्यालयों की शिक्षा सुविधायें अन्यान्य प्रकार की है। यहाँ के कोर्स (अवधि) ५ वर्ष की होती है जहाँ वेतन-सहित परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाती है। शिक्षा के अन्तिम वर्ष मे ३ माह की तैयारी-अवकाश भी दिया जाता है।

उद्योग या कृषि अकादमियों में छात्र ५ वर्ष का कोर्स समाप्त करते है। यह उक्त विद्यालयों से भिन्न होती हैं। यह राजकीय संस्थाएँ हैं। यहाँ के छात्र-छात्राएँ वह हैं जो जीवन मे उच्च स्थानों पर पहुँच गये हैं किन्तु उन्हें सैद्धान्तिक शिक्षा का समय नहीं मिला। ऐसे व्यक्तियों को पूरे समय की छुट्टी दी जाती है और एक उक्त अकादमी में भेज दिये जाते हैं। उनके बच्चों तथा पत्नियों की सहायता का भी प्रबन्ध है। इन अकादमियों में भी सामाजिक राजनैतिक विषयों की शिक्षा दी जाती है जैसे कि अन्य शिक्षा-केन्द्रों में।

इन अकादमियों के अतिरिक्त प्रायः सभी प्रकार की प्रौढ शिक्षा पत्र व्यवहार स्कूलों द्वारा सम्भव है तथा दी जाती है।

सोवियत संघ में प्रत्येक उद्योग का अपना अपना एक संघ है तथा वह शिक्षा का उचित प्रबन्ध करते हैं। इस प्रकार अपने उद्योग तथा अन्य कामों के लिये विशेषज्ञों की कमी की पूर्ति होती रहती है।

१९५६-५७ के स्कूल वर्ष मे प्रौढ़ों के लिए स्थापित स्कूल १,३४,००० लोगों का प्रशिक्षण कर रहे थे और ८-१० दर्जों में ६२,८०० लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

प्रौढ़ों के लिये सोवियत संघ में अनेक शिक्षाप्रद तथा सांस्कृतिक संघ हैं। इन संस्थाओं द्वारा भाषण तथा नाटक आदि का आयोजन किया जाता है। १९४७ में सोवियत वैज्ञानिकों और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के उद्यम के परिणाम-स्वरूप एक अखिल संघीय समाज की स्थापना की गयी जिसका उद्देश्य राजनैतिक और वैज्ञानिक ज्ञान को जन साधारण तक पहुँचाना था। इसने बहुत ही उपयोगी काम किया। इसने ५ हजार शाखाओं द्वारा १० लाख से अधिक भाषण १० वर्ष के अनु-समय में आयोजित किये।

प्रौढ़ों के मनोरंजन के लिए १९५७ में ५१६ थियटर के तथा ११७,०००

कार्य का पर्यवेक्षण करता था। १९२३ में 'निरक्षरता का अन्त' नामक स्वैच्छिक सभा का निर्माण किया गया। इस सभा ने राजनैतिक तथा अन्य शिक्षा सम्बन्धी प्रचार किया।

आरम्भ में अपढ़ों को विशेष प्रारम्भिक पुस्तकों, कहानी के टुकड़ों, समाचार पत्रों आदि की सहायता से पढ़ाया जाता था। उन्हें सोवियत विधान तथा राजनैतिक-आर्थिक योजनाओं से भी परिचित कराया जाता था। इन सामग्रियों के अध्ययन और विश्लेषण में उन्हें कृषि तथा अन्य उद्योग सम्बन्धी सहायता मिल जाती थी। सोवियत संघ के विशेष राजनैतिक उद्देश्यों के कारण प्रौढ़ शिक्षा में राजनैतिक विषयों का प्राधान्य था। साक्षरता-आन्दोलन काल में परम्परागत तरीकों से परिचित, प्रौढ़-मनोविज्ञान से अपरिचित अध्यापकों ने पढ़ाने का काम किया। स्पष्ट है कि उन्हें समय के साथ अपने तरीके बदलने पड़ें। यह काम विशेष सम्मेलनों के आयोजन द्वारा किया गया। इस दिशा में न० क्रूप्सकाया (लेनिन की पत्नी) की खोजें तथा कार्य महत्वपूर्ण हैं। "निरक्षरता का अन्त" नामक पत्रिका ने, जिसमें अनेक पाठ ऐसे होते थे जिनका उपयोग प्राथमिक पुस्तकों की समाप्ति पर किया जाता था। इस पत्रिका के लेख, कहानियाँ, भूगोल-इतिहास तथा तत्कालीन राजनीति का विषय में लेख आदि प्रकाशित होते थे। अर्ध-शिक्षितों के लिये अलग से विशेष समाचार प्रकाशित होते थे।

सन् १९३२-३३ में निरक्षरता-विरोधी सभी स्कूलों में समान पाठ्य-क्रम जारी किया गया। इन स्कूलों के स्नातकों से एक कहानी का या समाचार-पत्र का सस्वर पाठ तथा उसका अर्थ बता पाना आदि की आशा की जाती थी। उनसे कुछ प्रारम्भिक नियमों के प्रयोगों की भी आशा की जाती थी। रूसी या मातृ-भाषा के अध्ययन के लिये २०० घंटे दिये जाते थे। हिसाब की पढ़ाई के १३० घंटे होते थे।

छात्रों (निरक्षरों) के लिए नयी प्राथमिक पुस्तकें, बेबी किताबें, हिसाब के प्रश्न आदि की पुस्तकें तथा 'प्रौढ़ों के लिये स्कूल' छापी जाती थी। अपढ़ों का स्कूली वर्ष नगरों में १० माह (माह में ११ दिन और प्रतिदिन ३ घंटे) और गाँवों में ७ महीने (माह में १२ दिन और प्रतिदिन ४ घंटे) निश्चित किया गया।

म० दैनेको के अनुसार 'सन् १९३२ में देश की सांस्कृतिक सेना' की संख्या लगभग १२ लाख थी। "निरक्षरता का अन्त" सभा की ५० हजार

है, किन्तु जान-बूझ कर मजदूरी को छोड़ कर अध्यापन कार्य करना
की रुचि का द्योतक है। अमरीकी समाज में प्रारम्भिक कक्षा के अध्यापक
त्यः शिक्षा कार्य छोड़ अधिक पैसों के लिये जन-भार वाहन चलाने लगते
ष्ट है ऐसे देश के शिक्षक रूसी शिक्षकों से अधिक सम्मान नहीं पा
इस बात की तुलना में अमरीकी समाज से भारतीय समाज अच्छा
न्तु यहां प्राचीन परिपाटी के कारण शिक्षक का स्थान ऊंचा माना
है। किन्तु यह सम्मान केवल अ-पढ़ व्यक्ति ही देते हैं, पढ़े-लिखे नही
भारत की दशा पश्चिम की नकल के कारण हर क्षेत्र में बिगड़ती जा
।

श की सम्पत्ति के साथ-साथ शिक्षकों का वेतन भी पिछले वर्षों में बढ़
। प्रशिक्षण, योग्यता, अनुभव आदि सभी बातें वेतन देते समय ध्यान मे
जाती हैं। २५ वर्ष की सेवाओं के बाद प्रत्येक शिक्षक अपने वेतन का
तिशत पेन्शन रूप में लेने का अधिकारी हो जाता है। कक्षा-कार्य के
से शिक्षक को वेतन दिया जाता है। प्रथम चार कक्षाओं मे चार तथा
५ से १० तक ३ घन्टे प्रतिदिन काम के हिसाब से वेतन जोड़ा जाता है।
कार्य के अतिरिक्त यदि अलग से और कार्य करना पड़े, विशेषकर अध्यापन
वेतन और भी बढ़ जाता है। मुख्याध्यापकों को अपने पढ़ाने का वेतन,

द्वितीय विश्व-युद्ध के समय बहुत से स्थानों पर यह प्रौढ़-स्कूल बन्द कर दिये गये थे। विशेष रूप से पत्र व्यवहार स्कूल। १९४४ में एक प्रौढ़-शिक्षा मन्त्रालय द्वारा आदेश जारी किया गया कि प्रत्येक इलाके में इन स्कूलों की पुनः स्थापना की जाय। प्रौढ़-शिक्षा-विभाग को आदेश दिया गया कि वह पाठ्य-क्रम तैयार करे विश्व-युद्ध की समस्याओं को ध्यान में रखकर। प्रत्येक मार्च में गोष्ठियाँ होनी चाहिए तथा पत्र-व्यवहार पाठ्य-क्रम के पढ़ाने के ढंगों को भी तैयार किया जाय आदि। इस प्रकार १९४५ में वहाँ पत्र-व्यवहार स्कूल खोले गये। वहाँ पर सलाह के लिए अध्यापकों की नियुक्ति हुई तथा प्रत्येक ऐसे केन्द्र पर एक मुख्य-अध्यापक भी रक्खा गया। यहाँ पर यदि कोई छात्र बिना पूर्व शिक्षा के या थोड़ी पूर्व-शिक्षा के बाद आने पर पढ़ने का प्रबन्ध करवा सकता है।

इन पत्र-व्यवहार स्कूलों में अध्यापन को ठोस काम होता है। बहुत से विषयों को एक साथ पढ़ाने के कारण जो गहराई असम्भव है वह यहाँ पर विशेष-क्रम के हिसाब से पढ़ाने की शैली द्वारा पूर्ण की जाती है। इन पत्र व्यवहार स्कूलों में अध्यापक, लाइब्रेरियन आदि होते हैं तथा यहाँ नाम के रजिस्टर भी रक्खे जाते है।

प्रौढ़ माध्यमिक स्कूलों (पत्र-व्यवहार स्कूलों से भिन्न) में विज्ञान की अनुसन्धान शाला में तथा पढ़ने के कमरे आदि होते हैं। १९४४ में इस प्रकार के स्कूल १० हजार थे तथा समस्त सोवियत संघ में इनके छात्रों की संख्या १५ लाख थी।

सोवियत संघ में तीस से कम और बीस से अधिक आयु वाले व्यक्ति कभी-कभी यह अनुभव करते हैं कि उन्हें शिक्षा में विशेष रुचि है। वह रसायन या भौतिक शास्त्र, इंजीनियरिंग आदि विषय पढ़कर साधारण माध्यमिक स्कूल की परीक्षा में बैठ जाते हैं। यदि वह कुछ विशेष विषयों में भी योग्यता प्राप्त कर लें तो उन्हें विश्वविद्यालय में जाने की भी सुविधा मिल जाती है। यह योग्यता विशेष प्रकार के स्कूलों में सन्ध्या-कालीन स्कूलों में दी जाती है जहाँ कामगार, क्लर्क, किसान आदि शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा विश्वविद्यालय की प्रवेश शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा विश्वविद्यालय की प्रवेश शिक्षा की तैयारी करते है। और ३५ वर्ष की आयु तक प्रवेश पाकर विश्वविद्यालय शिक्षा का लाभ ले सकते हैं। व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक ज्ञान दोनों ही सोवियत संघ के छात्र के लिये आवश्यक है।

ई सोवियत संघ के विशेषज्ञ के गुण हैं।"[1] सोवियत शिक्षक एक विशेषज्ञ इसलिये उक्त गुणो का होना स्वाभाविक है। अमरीकी समाज में मरीकी गुणों से परिचय तथा प्रजातन्त्रवाद की ट्रेनिंग दी जाती है। इस कार सोवियत और अमरीकी समाज अपने शिक्षकों को अपने समाज के गुणों से परिचित ही नहीं करना चाहते वरन् उनमे अपने देश के प्रति प्रेम था निष्ठा उत्पन्न करना चाहते हैं। इस प्रकार की उत्कंठा लगभग सभी माजो में होती है। इस देश में भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की भिन्नता र बल दिया जाता है।

प्रथम कोटि के प्रशिक्षण स्कूल में निम्न विषयो में शिक्षा दी जाती है—सी भाषा तथा साहित्य, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, लिखाई, गायन था शारीरिक शिक्षा। इनके अतिरिक्त व्यवसाय या पेशे के लिये शरीर-विज्ञान, मनोविज्ञान, शिक्षा-सिद्धान्त, कक्षा अध्यापन का अभ्यास आदि की शिक्षा भी दी जाती है।

प्रथम कोटि के विषयो (academic subjects) पर द्वि-वर्षीय प्रशिक्षण-न्द्रो मे कम बल दिया जाता है। व्यावसायिक विषयों को यहाँ अधिक ध्यान पढ़ाया जाता है। ग्रामीण आवश्यकताओं की शिक्षा तथा कार्य (चूँकि उक्त नों कोटि के अध्यापक शिक्षा-कार्य गाँवों मे करते हैं) इन प्रशिक्षणों के अंग

घर हैं। इनके अतिरिक्त सांस्कृतिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी सम्थाओं के अपने-अपने संग्रहालय हैं। इनमें प्रमुख हैं—ऐतिहासिक, टैक्निकल, प्रकृति विज्ञान, संस्मरण सम्बन्धी, कला साहित्य और स्थानीय ज्ञान सम्बन्धी आदि। रेडियो, समाचार-पत्र पत्रिकायें, पुस्तकें आदि भी इस क्षेत्र में अपरिमित कार्य कर रही हैं। टेलीविज़न का जाल आज लगभग प्रत्येक प्रौढ़ के पास अपना सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि सन्देश लेकर पहुँच जाता है। कलात्मक, वैज्ञानिक फिल्में दृश्य श्रव्य मनोरंजन के रूप में शिक्षा देने का अथक प्रयास कर रही हैं।

सोवियत संघ की शिक्षा इस प्रकार सर्वव्यापी तथा सर्वांगीण है।

शिक्षा-शास्त्रीय संस्थानों में दो या तीन विशिष्टताओं में अध्यापक प्रशिक्षण शुरू किया गया है। उदाहरण के तौर पर विशिष्टताओं का आयोजन इस ढंग पर किया गया था : गणित, भौतिकशास्त्र और यान्त्रिक रेखांकन, रसायन, जीवशास्त्र और भूगोल या दो विदेशी भाषायें। इसी कारण अब प्रशिक्षण[1] की अवधि बढ़ाकर पांच वर्ष कर दी गई है।"

ग्रीष्म कालीन स्कूल की लम्बी छुट्टियों में अध्यापकों को २ महीने (४८ काम के दिनों) की वेतन-सहित छुट्टी मिलती है। इस समय का उपयोग शिक्षक गण प्रायः पर्यटन में लगाते हैं। हमारे देश की गरीबी ने हमारे शिक्षकों को छुट्टी के उचित उपयोग से वंचित कर रक्खा है। इस दिशा में हमारी सरकार को कुछ निश्चित कदम उठाने चाहिये।

सोवियत संघ में शिक्षा-कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व ही शिक्षा नहीं मिलती, वह शिक्षण कार्य के समय भी भिन्न रूपों में दी जाती है। यह हम ऊपर लिख आये हैं कि इसके लिये पत्र-व्यवहार तथा सन्ध्या-कालीन स्कूलों द्वारा प्रशिक्षण का आयोजन है। रूस की प्रगति के शिक्षक स्तम्भ हैं। स्वस्थ, कुशल, अर्थ-सम्पन्न अध्यापक ही देश की प्रगति के विषय में कुछ सोच सकता है।

ऐसा नहीं कि सोवियत संघ में अध्यापकों के अपने संघ नहीं। यह संघ अध्यापक की स्वेच्छा पर निर्भर हैं। वह उनका सदस्य अपनी इच्छा के अनुसार हो सकता है। इस संघ के भीतर विषयों के अपने-अपने संघ भी हैं जैसे इतिहास के शिक्षकों का संघ। इन संघों के अपने पत्र भी प्रकाशित होते हैं। इनकी सदस्यता का चन्दा वेतन का २ प्रतिशत है। इन संघों का कार्य सरकार को वेतन आदि की बढ़ोती के लिए दबाना या उससे संघर्ष करना नहीं है इसलिये वह अन्य उपयोगी कामों में अपना समय व्यतीत करते हैं।

प्रत्येक नगर तथा ग्राम में अध्यापकों के अपने क्लब होते हैं जिनमें पुस्तकालय तथा अन्य मनोरंजन की सामग्री होती है। इस प्रकार वहाँ का अध्यापक व्यर्थ में समय बरबाद नहीं करता।

अध्यापकों के अपने पर्यटन केन्द्र होते हैं। उनके संघ अवकाश के समय में दूर-दूर घूमने के लिए प्रबन्ध करते हैं, घरों का प्रबन्ध करते हैं तथा ध्यान रहे कि अध्यापिकाओं को बच्चे होने के समय का भत्ता भी यही संघ देते हैं।

---

१ म० इंनेवो : सोवियत संघ में शिक्षा के ४० वर्ष, पृ० ४३-४४।

की संख्या १३ और १८,७३० क्रमशः थी। अपेक्षाकृत थोड़े समय की यह प्रगति शिक्षा के प्रति रूसी आदर तथा उत्कंठा की द्योतक है।

लेनिन ने शिक्षकों के विषय में कहा था "हमें अपने अध्यापकों का स्तर उस ऊँचाई तक उठाना चाहिये जिस तक वह पूँजीवादी (बुर्जुआ) समाज में कभी भी नहीं पहुँचेगा।" केन्डल (Kandel) महोदय का कथन है कि वह उस स्तर तक अभी नहीं उठ पाया है। उन्हें सन्देह है कि कभी ऐसा होगा भी। उन्होंने शिक्षक के रूस में मत-स्वातन्त्र्य पर भी सन्देह प्रकट किया है। उनका मत है कि रूस में उच्च स्थानों पर अध्यापकों की नियुक्ति तथा उनका राष्ट्रीय सम्मान अन्य देशों की भाँति ही है। हमारी सम्मति में उनका उद्देश्य रूसी व्यवस्था की आलोचना करना है न कि और कुछ। यह सत्य है ब्रिटेन तथा फ्रांस में अध्यापकों को उचित सम्मान मिलता है— किन्तु शिक्षा के प्रति इतना अधिक व्यय, उत्कंठा तथा सम्मान अन्य किसी देश में इतनी मात्रा में नहीं दिखाये जाते। यदि हमें अपने मत की पुष्टि के लिये साधन उपलब्ध नहीं हैं, तो अन्य लोगों को भी यही कठिनाई प्रस्तुत है।

रूस में अध्यापक-प्रशिक्षण तीन स्तरों पर होता है यह उनकी शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप है। सप्त-वर्षीय शिक्षा अवधि की समाप्ति पर छात्र 'स्पेशल स्कूल' में चार वर्ष के प्रशिक्षण के लिये जाते हैं। वहाँ से निकल

पंचम भाग

शिक्षा का प्रयुक्त रूप

रूपरेखा—

१—पॉलीटेक्निकल शिक्षा।
२—प्रारम्भिक व्यवसायिक शिक्षा।
३—माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा।

के लिये, उच्च शिक्षा विहीन अध्यापकों को पत्र-व्यवहार के माध्यम से शिक्षा शास्त्रीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। नैसे प्रशिक्षण कार्य पर बल देने के कारण रूस में उच्च शिक्षा शास्त्रीय संस्थाओं का एक विस्तृत जाल बिछा दिया गया है। "संन्ध्या-कालीन शिक्षा तथा पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा शास्त्रीय प्रशिक्षण करने वाली संस्थाओं का एक विस्तृत जाल-सा बिछा हुआ है, जिनकी सहायता से अध्यापन कार्य करते हुए अध्यापकों के लिए अपनी विशेष शिक्षा में वृद्धि करने की सम्भावना विद्यमान है।" म० दैनेको की पुस्तक के आधार पर हम प्राथमिक स्कूलों में हो रहे शिक्षण के स्तर का ऊँचा होना जान सकते हैं। उनके कथन का आधार है प्राथमिक स्कूलों में आने वाले छात्रों के शिक्षा के स्तर का ऊँचा होना।

अभी तक प्राथमिक कक्षा के लिए शिक्षक प्रशिक्षण काल से पहले सत-वर्षीय स्कूलों के स्नातक होते थे। अब प्रायः वह १० वर्षीय माध्यमिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होते हैं। हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि सोवियत संघ की प्राथमिक कक्षाओं में पढाने वाले शिक्षक प्रायः कितनी सामान्य-शिक्षा प्रात हैं।

किन्तु चूँकि अब शिक्षा शास्त्रीय स्कूलों में केवल माध्यमिक स्कूल पास किये छात्रों को ही प्रवेश मिलता है और प्रशिक्षण काल की अवधि ४ से

१

पॉलीटेक्निकल-शिक्षा

सोवियत स्कूलों में श्रम और पॉलीटेक्निकल प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण व्यावसायिक शिक्षा से भिन्न है। इस प्रशिक्षण द्वारा छात्रों को आधुनिक औद्योगिक और कृषि उत्पादन की महत्वपूर्ण शाखाओं से परिचित कराया जाता है। विभिन्न सामग्री और औजारों को प्रयोग में लाने का कौशल प्राप्त कराया जाता है तथा उनमें श्रम, चातुर्य और दृढ़ता उत्पन्न की जाती है।

मार्क्स ने कहा था "शिक्षा का हमारे लिये अर्थ है : (१) बौद्धिक विकास (२) शारीरिक विकास तथा (३) पॉलीटेक्निकल शिक्षा—जो उत्पादन-प्रक्रिया के सामान्य वैज्ञानिक सिद्धान्तों का ज्ञान देगी, और साथ-साथ बालकों तथा युवकों के उत्पादन की प्रत्येक शाखा के साधारण उपकरणों (Tools) से परिचित करायगी।" यह प्रशिक्षण शिक्षा व्यवस्था तथा शिक्षा देने का तरीका दोनों ही है। शिक्षा विधि होने के कारण यह बच्चों को कुशल तथा चतुर मजदूर बनाता है जो समाज के लिये प्रत्येक दृष्टिकोण से लाभ दायक होते हैं। शिक्षा के व्यवस्था के रूप में इस प्रशिक्षण द्वारा जीवन तथा स्कूल दोनों में परस्पर सम्पर्क स्थापित करता है। यह शिक्षा की व्यवस्था मार्क्सवाद की देन है। वैसे इस प्रकार की शिक्षा का इतिहास मिस बी० किंग ने फ्रेन्च विचारक फूरिये के सिद्धान्तों से उत्पन्न माना है। "राबर्ट ओवेन ने मार्क्स ने इस प्रकार

इस प्रकार की व्यवस्था अन्य देशों में नहीं है। प्रायः अन्य देशों में सरकारें या शिक्षा-संस्थायें इस भार को उठाती हैं।

मेदिनिस्की महोदय के विचार से शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये सोवियत संघ में विश्व में सबसे अच्छा प्रबन्ध है। क्योंकि प्रशिक्षण-महाविद्यालयों की संख्या उनके अनुसार यहाँ काफी है। वहाँ सन् १९५७ में २३१ प्रशिक्षण संस्थान, ६७४ अध्यापक प्रशिक्षण स्कूल तथा ३३ विश्व-विश्वविद्यालयों द्वारा यह कार्य सम्पन्न होता था। इन आंकड़ों पर आधारित यह कथन सत्य से बहुत दूर नहीं है।

था वरन् राजनैतिक सवाल था। सम्पूर्ण जीवन को नये के आधार पर बदलने के उपरान्त ही रूढ़िगत सामाजिक वर्गीकरण का अन्त सम्भव है। किन्तु उस समय अनेकानेक कठिनाइयाँ इस मार्ग में प्रस्तुत थीं। अध्यापकों की कमी, विशेषज्ञों की कमी आदि के कारण एक छोटी सी स्कूली वर्कशाप का अर्थ था पोलीटेक्निकल शिक्षा। थोड़े दिनों रूसी आर्थिक उन्नति के कारण इस प्रशिक्षण में भी परिवर्त्तन आया। १९३० में लेनिन की विधवा पत्नी क्रूप्स्काया ने कहा कि समस्या साधारण स्कूलों को पोलीटेक्निकल स्कूलों में बदलने की है। केवल सिद्धान्त ही नहीं उसका कार्य-रूप में परिणत करना आवश्यक है। उनके मत में एक संकीर्ण विशेषज्ञ व्यर्थ था। बड़े पैमाने पर लोगों को पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण देना जिसके कारण उनका दृष्टिकोण बदल जाय और अपने अर्जित ज्ञान को वह काम में ला सकें, यह शिक्षा का प्रथम काम होना चाहिये। प्रभावशाली तथा ओजपूर्ण भाषण द्वारा श्रीमती लेनिन ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। १९३१ में इस शिक्षा का पुनर्संघटन हुआ। मास्को में १९३१ में एक पोलीटेक्निकल संस्थान की स्थापना हुई जहाँ भिन्न-भिन्न चीजों, रुचि के हिसाब से मशीनों कार्य में परिचय, आदि की उपयोगिता पर अनुसन्धान करने प्रारम्भ हुए। १९३६ तक स्कूलों वर्कशाप में अच्छे उपकरण, साधन तथा मशीनें आ गई। वैज्ञानिक सामान विशेष रूप से अच्छा था। लेकिन १९३७ में ही यह प्रशिक्षण ढीला हो गया। मिस किंग का कथन है कि सोवियत् वैज्ञानिक प्रगति के कारण यह प्रशिक्षण हल्का पड़ गया। वहाँ वैज्ञानिक तरीके (Techniques) प्रगति कर गये थे। पुरानी विधियों के स्थान पर नई विधियाँ आ रही थीं। उस समय स्कूलों में छात्र स्टूल, लकड़ी का काम आदि सीख रहे थे तथा उनका उत्पादन कर रहे थे। प्रायः पोलीटेक्निकल शिक्षा का अर्थ हाथ का काम मात्र था। इसलिये पोलीटेक्निकल शिक्षा को पाठ्य-क्रम से हटाकर उसका स्थान विज्ञान को दे दिया गया।

लेकिन १९५५-५६ में यह पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण पुनः प्रारम्भ किया गया। इस बार बहुत सी बातों में परिवर्त्तन प्रतिलक्षित था। आज का सोवियत संघ १९३१ के सोवियत संघ से अधिक बल तथा वैभवशाली, वैज्ञानिक तथा यान्त्रिक प्रगति में व्यस्त और विश्व का प्रमुख देश है इसलिये वहाँ आधुनिकतम व्यवसाय तथा खेती के साधनों से परिचित कराना सरकार

१ सोवियत संघ में शिक्षा के ४० वर्ष, पृ० ५०।

खिलवाड़ अथवा चमत्कार मात्र होकर रह जायगा। मध्य-कालीन सामन्तवादी युग की क्रिया हीनता और जड़-प्रणाली इस बात को स्पष्ट करती है कि शिक्षा का व्यवहार से घनिष्ट सम्बन्ध होना चाहिये अन्यथा प्रगति रुक जायगी। यह प्रगति तथा अनवरत विकास तथा सामाजिक समृद्धि तथा कर्मरत नागरिक किसी भी राष्ट्र के लिये गौरव के विषय हो सकते हैं। सोवियत संघ को यदि इस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता या गर्व है तो इसमें आश्चर्य की बात ही क्या है?

मिस किंग ने मास्को के स्कूल नं० ५४५ की चर्चा करते हुए लिखा है कि वह शिक्षा-शास्त्र का प्रयोगात्मक स्कूल है। वहाँ पोलीटेक्निकलाइजेशन एक अनुसन्धान का विषय है। वहाँ पर इन्जन के भीतरी काम का ज्ञान कराया जाता है तथा विद्युत इन्जन के तीन प्रकार के रूपों से परिचय कराया जाता है। यहाँ पर तीन-चौथाई काम स्कूल में वर्कशाप में ही होता है। इस प्रकार की सोवियत संघ में तीन अकादमियाँ हैं। यहाँ पर उच्च प्रकार की पोलीटेक्निकल शिक्षा दी जाती है। अध्यापक प्रशिक्षण काल में विद्यार्थी पोलीटेक्निकल शिक्षा के सिद्धान्त तथा व्यावहारिक रूप विषय पढ़ते हैं और काम सीखते हैं। इस प्रकार की शिक्षा द्वारा स्कूल तथा प्रशिक्षण का सम्बन्ध स्थापित किया गया है।

हस्त-श्रम की शिक्षा प्राथमिक कक्षाओं में दी जाने लगी है। इस काम के लिये ४ वर्कशाप सुसज्जित की गई हैं। उनमें से एक १ से ४ की कक्षा के लिए है। यहाँ बच्चे कार्ड बोर्ड, कागज, मिट्टी के खिलौने, सीना-पिरोना, जिल्दसाजी आदि कार्य सीखते हैं। कक्षा ४ को प्रारम्भिक बढ़ई-गीरी का काम सिखाया जाता है।

भारत में भी इस दिशा में प्रगति तथा रुचि दिखलाई पड़ती है—किन्तु अभी समाज तथा यहाँ की सरकार पूर्ण-रूप से इसके पक्ष में राजी नहीं दिखलाई पड़ती। किन्तु आशा है शीघ्र ही शिक्षा इसी पद्धति की ओर उन्मुख हो जायगी।

हम मिस किंग के निष्कर्ष से सहमत हैं कि सोवियत संघ के शिक्षा-शास्त्री इस बात में विश्वास करते हैं कि जीवन तथा स्कूल में अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये।[1] परिवर्तित जीवन के अनुसार स्कूल में परिवर्तन अवश्य होने चाहिये

---

1 With a view to making education more practical, and after many months of active discussion, the Supreme Soviet enac-

की शिक्षा-विधि को उधार लिया' उनका मत है।[1] किन्तु 'हमारे विचार से तर्कशील भौतिकवादी मार्क्स के लिये उक्त प्रकार की शिक्षा के उद्देश्य स्वाभाविक थे। मजदूरों के समाज में उत्पादन के साधनों या उपकरणों से प्रत्येक बालक का परिचय करना स्वाभाविक है।

विशेषकर जब सोवियत संघ विश्व में प्रथम मजदूरों तथा किसानों का राज्य है वहाँ इस प्रकार की शिक्षा तो अत्यन्त आवश्यक है। वैसे अन्य देशों में भी वातावरण की शिक्षा में कल-पुरजों से परिचय करा दिया जाता है। भारत में इस दिशा में कुछ कदम उठाये गये हैं। किन्तु अस्पष्ट उद्देश्य और देश की अपूर्ण यान्त्रिक प्रगति इस प्रकार के प्रशिक्षण में बाधक हैं।

सोवियत संघ के सम्मुख प्रश्न एक नये प्रकार के नये बौद्धिक समाज (intelligentia) को जन्म देने का है। वह मजदूरों का बौद्धिक समाज होगा। वहाँ के पढ़े-लिखे व्यक्तियों का गुण होगा कि उन्हें उत्पादन के साधनों से परिचय हो। लेनिन ने कहा था "मानव रचित ज्ञान की सारी सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त करके ही कोई साम्यवादी बन सकता है।" इस मानवीय ज्ञान तथा भौतिक वातावरण के भाग हैं यन्त्र तथा समाज। इसलिये विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकार तथा जीवन विज्ञान में सम्बन्ध स्थापित करना सोवियत युवा लोगों का कार्य है। इस उद्देश्य को लेकर वहाँ की शिक्षा चलती है इस कारण प्रत्येक स्तर पर विज्ञान, कल-पुरजे, वातावरण, सामूहिक फार्म आदि से छात्रों का परिचय करना अनिवार्य है।

The school system is now desired to be related closely to the needs of specific industrial and agricultural installation in the various area of the Country.[2] The major *task before*

२

प्रारम्भिक व्यावसायिक शिक्षा

सोवियत संघ के समाजवादी सामाजिक व्यवस्था के लिए कुशल कारीगरों की आवश्यकता है। इस निरन्तर बढ़ती हुई माँग को दूर करने के लिए १९४० में राजकीय श्रम शक्ति-संग्रह प्रणाली की व्यवस्था की गई। किन्तु क्रान्ति से पूर्व भी सोवियत संघ में व्यवसायों की शिक्षा दी जाती थी। पर वह असन्तोष जनक थी इसलिये उस व्यवस्था को समाप्त करके विभिन्न साधन अपनाये गये ताकि इस प्रकार की कमी को दूर किया जा सके। १९४० की श्रम-शक्ति संग्रह प्रणाली तक आते-आते सोवियत संघ में कई प्रयोग हो चुके थे। १९२० में तरुण श्रमिकों के लिये खोले गये स्कूलों को औद्योगिक, कृषि, कार्यालय और व्यापारिक प्रशिक्षण स्कूलों के नाम से पुकारा जाता था। यहाँ विशिष्ट तथा सामान्य दोनों ज्ञान देने का प्रबन्ध था। १९२६ में राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की विभिन्न शाखाओं के लिये छोटे दर्जे के प्रशासन और शिल्पिक कर्मचारियों तथा कुशल श्रमिकों के प्रशिक्षण के लिये तथा इस प्रकार के ज्ञान का जनता में प्रचार करने के लिये व्यावसायिक शिल्पिक स्कूल खोले गये। यहाँ १४ वर्ष की आयु में दाखिल किया जाता था और कारखाने तथा अन्य स्कूलों में काम सिखाया जाता था। इन प्रशिक्षण काल की अवधि ३-४ वर्ष थी। अक्तूबर

का धर्म है। म० दैनेको के आधार हम जानते हैं[1] कि "सन् १९५५-५६ के स्कूली वर्ष में सभी सोवियत स्कूलों ने नया पाठ्य-क्रम जारी किया जो कि सर्वव्यापी माध्यमिक शिक्षा और पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण के आरम्भ होने कारण आवश्यक हो गया है। नये पाठ्य क्रम के अनुसार हो जाने वाली शिक्षा का स्तर वैसा ही रहेगा जो पहले माध्यमिक स्कूलों में प्राप्त किया गया। इस पाठ्य-क्रम में सामाजिक शास्त्रों के लिये दिये जाने वाले कुछ घंटों मे कमी कर दी गई है और कम महत्व की कुछ सामग्री को निकाल दिया गया है। यह छात्रों की आयु सम्बन्धी विशेषताओं की ओर पहले पाठ्य-क्रम की अपेक्षा अधिक ध्यान देता है।

"क्योंकि भौतिक और रसायन विज्ञान को पोलीटेकनिकल प्रशिक्षण में बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, इसलिये नये पाठ्य-क्रम में इन विषयों के अध्ययन के लिये समय अधिक दिया गया है। भौतिक, रसायन और जीव-शास्त्र के नये पाठ्य-क्रमों में, आधुनिक उत्पादन के क्षेत्र में इन विज्ञानों के सिद्धान्तों के प्रयोग के बारे में छात्रों को अधिक जानकारी करवाने का यत्न किया गया है। व्यावहारिक और प्रयोगशाला में किये जाने वाले काम के घंटे भी बढ़ा दिये गये हैं। इन पाठ्य-क्रमों में उद्योगों के पर्यटन के लिये जाना भी शामिल है। प्रतिवर्ष ४ से ६ तक श्रेणी के पाठ्य क्रमों में इन पर्यटनों के लिये ६ दिन नियुक्त किये गये हैं।

"नये पाठ्य-क्रम म १ से ४ दर्जे तक हस्त-श्रम के पाठ, ५ से ७ दर्जे तक छात्रों के लिये स्कूल के अनुभव, भूमि खण्डों और वर्कशाप में व्यावहारिक कार्य तथा ८ से १० दर्जे तक के छात्रों के लिये विद्युत इंजीनियरिंग कृषि तथा यान्त्रिक विज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना शामिल है।

"नये पाठ्य-क्रमों के लिये नयी पुस्तकें तैयार की जा रही हैं। इन्हीं वर्षों में भौतिक, रसायन, भूगोल, गणित, इतिहास, विदेशी भाषाओं और अन्य विषयों की ३० नयी पुस्तकें तैयार करके छापी गई हैं।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि छात्रों को व्यावहारिक तथा उपयोगी काम सिखाने पर बल, सोवियत संघ की शिक्षा व्यवस्था का मूल कारण सोवियत संघ की विज्ञान का प्रदर्शन है। यदि नागरिक विज्ञान के कार्य तथा उद्देश्य से परिचित ही न होंगे तो जाने वह उसे जीवन में प्रयोग किस प्रकार करें हमारी दृष्टि में इस प्रकार की शिक्षा प्रत्येक ऐसे देश के लिये आवश्यक है जो प्रगतिशील होने का दावा करता है अन्यथा विज्ञान एक विलासी का

चौथाई भाग ले जाते हैं तथा शेष समय सामान्य शिल्पिक विषयों और सामान्य शिक्षा को दिया जाता है। स्कूल वर्ष चार भागों में बँटा है और ६-७ घंटे वहाँ अध्यापन कार्य होता है जिसमें केवल २ घंटे सामान्य तथा अन्य व्यावसायिक प्रशिक्षण में व्यतीत किये जाते हैं। उत्पादन और सैद्धान्तिक विषयों को बारी-बारी से अध्ययन कराया जाता है। उत्पादन का कार्य आधुनिक यान्त्रिक साज सज्जा से पूर्ण वर्कशापों में कराया जाता है। ध्यान रहे कि इन संस्थाओं में भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी न्यूनता नहीं। यहाँ भी छात्रों की रुचि तथा उनके कलात्मक प्रवृत्तियों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

सप्त-वर्षीय योजना के कारण सोवियत् संघ की शिक्षा में बहुत से परिवर्तन होने हैं। ८ वर्षीय अनिवार्य शिक्षा के पश्चात यह आशा की जाती है कि युवक-युवतियाँ राष्ट्रीय आर्थिक उन्नति के कार्यों में हाथ बटायेंगे। इस प्रकार यह और भी आवश्यक हो जाता है कि वह व्यावसायिक प्रशिक्षण लें।[1]

१९५४ में श्रम शक्ति संचय प्रणाली के लिये नये ढंग के टेक्निकल स्कूल खोले गये जहाँ प्रशिक्षण की अवधि दो वर्ष रखी गई। पहले यह ६ महीने हुआ करती थी। १९५६ में २०० से अधिक नगरों और श्रमिक-बस्तियों में ४४० टेक्निकल स्कूल थे। यहाँ शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। इन टेक्निकल स्कूलों के सर्व-श्रेष्ठ स्नातक यदि चाहें तो काम करते हुए ही सन्ध्या-कालीन और पत्र व्यवहार वाली उच्च शिक्षा संस्थाओं में, इनकी परीक्षाओं में सफल होकर, बिना प्रतियोगिता के प्रवेश कर सकते है। इन स्कूलों में उत्पादन तथा उद्योग-धन्धों का अभ्यास कराया जाता है। १९४० से १९५६ तक के वर्षों में तैयार किये गये कुशल तरुण श्रमिकों की संख्या १ करोड़ १० लाख थी।

श्रम शक्ति संचय शिक्षा संस्थाओं ने १९५३-५६ में ८८३ हजार कृषि-सम्बन्धी अन्य विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया। पिछले वर्षों में व्यवसायों की संख्या २५० से बढ़ा कर ६००.कर दी गई है इसलिये इन संस्थाओं के स्नातक राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की आवश्यकताओं में अच्छी तरह खपने लगे हैं।

श्रम-शक्ति-संचय व्यवस्था सोवियत संघ में लोकप्रिय है। प्रत्येक १ स्थान के लिये ४ ५ उम्मीदवारों का अनुपात था। यह सब उनकी लोकप्रियता के नमूने है।

---

1 "In urban areas, education would prepare youngsters in broad vocational fields related to local industrial features; in the country side, the vocational emphasis would be on agricultural knowledge and skills."

Soviet Commitment to Education, Appendix B, p. 133.

अवस्था का चित्र देखते हैं। उदाहरणार्थ आजरबैजान मे १९१७ मे प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों की कुल संख्या ११ थी। १९५७ मे उनकी संख्या ७५ थी।

इन स्कूलों में ७ वर्षीय शिक्षा प्राप्त १४ से ३० वर्ष की आयु के छात्रो को दाखिल किया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए उम्मीदवारो को प्रवेश-परीक्षा पास करनी पड़ती है। इनका प्रशिक्षण काल ३ से लेकर ४ वर्ष तक का होता है। इनके पाठ्य-क्रम मे विशिष्ट विषयो के अतिरिक्त कुछ सामान्य विषय भी पढ़ने पड़ते हैं। वह हैं, साहित्य, गणित, भौतिक तथा रसायन शास्त्र, इतिहास, भूगोल तथा जीवशास्त्र आदि। व्यावहारिक शिक्षण पर बल देते हुए भी यह स्कूल अपने छात्रों को अन्य सामान्य स्कूल के बराबर कर देते हैं।

प्रारम्भिक व्यावसायिक शिक्षा संस्थाओं से अधिक उच्च स्तरीय कार्य उन्हें सिखाया जाता है। पढ़ाई समाप्त करके छात्र डिप्लोमा प्राप्त करते हैं, उसके लिये उन्हें परीक्षा देनी होती है। सरकारी आयोगों द्वारा उन्हें नियुक्ति मिलती है। इन माध्यमिक व्यावसायिक स्कूलो के स्नातक कम से कम तीन वर्ष तक अपनी विशिष्टताओं में काम करने के बाद उच्च शिक्षालयो में पढ़ने की इजाज़त पा सकते हैं। केवल सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले स्नातक ही सीधे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जा सकते हैं। सामान्य प्रगति करने वाले लगभग सभी छात्र छात्र-वृत्तियाँ पाते हैं।

म० दैनेको ने विशिष्ट माध्यमिक स्कूलों के पत्र-व्यवहार द्वारा सन्ध्या-कालीन विभागो द्वारा शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या १९५६-५७ के स्कूली वर्ष में २५१,००० बताई हैं। उस वर्ष पत्र-व्यवहार वाले ४१ टेक्निकल स्कूल थे जिनके अनेक विभाग थे। विशिष्ट माध्यमिक स्कूलो के दिवस कालीन पाठो में ३४९ विशिष्टताओं मे प्रशिक्षण दिया जाता है। सन्ध्या कालीन अध्ययन-काल में १५० से अधिक विशेष विषयों में प्रशिक्षण होता है। उक्त (सन्ध्या कालीन) स्कूलों के आयु का ध्यान नहीं रक्खा जाता।

पिछले २-४ वर्षों से एक नये प्रकार के टेक्निकल स्कूलों की स्थापना की गई है। इनमे सामान्य माध्यमिक स्कूलो के स्नातकों को ही लिया जाता है तथा इनका प्रशिक्षण काल भी कम है। "इन स्कूलो का पाठ्य क्रम मुख्यतः उन विशिष्ट विषयो पर आधारित होता है जिनका आवश्यक व्यावसायिक प्रशिक्षण स्कूलो और उत्पादन-सम्बन्ध उद्योग में किया जाता है।"

क्रान्ति से पूर्व के पैदा हुए लोग जिन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी न ली थी उनके लिए यह स्कूल बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। किन्तु सर्वव्यापी शिक्षा की प्रगति के कारण इनके प्रशिक्षण काल की अवधि घटा कर ६ या ९ महीने करनी पड़ी इनका महत्व भी घट गया।

कारखाना स्कूलों की संख्या १९२० से १९३९ तक बहुत तेजी से बढ़ी। १९२० में इन स्कूलों की छात्र-संख्या केवल २००० थी जबकि १९३९ में वह बढ़कर २,४२,३०० हो गई।

उद्योग और कृषि-कार्यों की विशेष प्रगति के कारण सोवियत संघ में सुरक्षित श्रम-शक्ति कम हो गई। इसीलिये तृतीय पंच वर्षीय योजना में "सोवियत संघ में राजकीय श्रम-शक्ति संचय के सम्बन्ध में २ अक्तूबर १९४० को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रधान-मंडल ने कुशल श्रमिकों को दो वर्ष का प्रशिक्षण देने के लिये व्यावसायिक स्कूलों की स्थापना की आज्ञा दी। इस प्रशिक्षण में शामिल किये जाने वाले व्यवसाय में थे—लोहे और धातु मजदूर, रासायनिक खान में काम करने वाले, तैलिक, संचार विशेषज्ञ समुद्र और नदी-परिवहन में काम करने वाले तथा अन्य जटिल व्यवसायों से सम्बन्धित लोग। कुशल रेलवे श्रमिकों के प्रशिक्षण के लिये २ वर्षीय रेलवे स्कूल और ६ महीने की अवधि के बहुसंख्यक व्यवसायों के कारखाना-स्कूलों की स्थापना की गयी थी।"[1]

इस प्रकार के काम का भार श्रम-शक्ति-संचय मन्त्रालय को सौंपा गया था जो १९५३ में सोवियत सांस्कृतिक मन्त्रालय में मिला दिया गया। भिन्न-भिन्न विभागों तथा उद्योगों के आधीन व्यावसायिक शिल्पिक स्कूल और कारखाना प्रशिक्षण के स्कूल भी हैं जिनके संगठन और चलाने का भार भी उन्हीं पर है।

व्यावसायिक और रेलवे स्कूलों १४-१५ तथा खानों, कृषि मन्त्रीकरण तथा कारखाना स्कूलों में १६-१८ वर्ष के तरुणों को प्रवेश दिया जाता है। सभी प्रारम्भिक स्कूलों में प्रशिक्षण निःशुल्क होता है, कभी-कभी तो वर्दी भी मिलती है यदि उसकी आवश्यकता हुई तो खाने-पीने, तथा रहने आदि सभी का मुफ्त प्रबन्ध होता है। म० दैनेको के अनुसार व्यावसायिक और अन्य स्कूलों के पाठ्यक्रमों में उत्पादन और प्रोद्योगिक विषय शामिल हैं जो कुल समय का तीन-

---

1. म० दैनेको : सोवियत संघ में शिक्षा के ४० वर्ष, पृ० ९९।

षष्ठम् भाग

शिक्षा के विशेष उपादान

रूपरेखा—

१—शिक्षा-शास्त्र और उसकी उपयोगिता का प्रश्न।
२—भाषा का प्रश्न।

३

माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा

माध्यमिक व्यावसायिक प्रशिक्षण विशेष प्रकार के माध्यमिक स्कूलों द्वारा दिया जाता है। इन स्कूलों के स्नातक मध्यम श्रेणी के विशेषज्ञ होते हैं, तथा उसी स्तर के कार्य-भार भिन्न-भिन्न उद्योगों, परिवहन, कृषि, दाइयों (midwives), डाक्टरों के असिस्टेन्ट, प्राथमिक शिक्षा कक्षाओं के अध्यापक के रूप आदि में सँभालते हैं। नाटक, संगीत, कला आदि के भी स्कूल भी इस श्रेणी में आते हैं। सन् १९५६ के अन्त में सोवियत संघ में लगभग ३६,२४,००० माध्यमिक शिक्षा प्राप्त विशेषज्ञ काम कर रहे थे। इसके बावजूद भी इस प्रकार के उचित विशेषज्ञों की कमी का अनुभव किया जा रहा है। यदि इस प्रकार के विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के आंकड़ों की १९१४-१५ के स्कूली वर्ष के आंकड़ों से तुलना की जाय तो उस समय की शिक्षा की कमी स्पष्ट हो जाती है। उक्त वर्ष केवल ४,९०० स्नातक इन स्कूलों से निकले। जब कि १९५५-५६ के स्कूली वर्ष में सोवियत संघ में ३,६४२ टेकनिकल स्कूल और विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा संस्थायें थीं और इनकी छात्र-संख्या २०,१२,००० थी। यह प्रगति उस दशा में और भी स्पष्ट हो जाती है जबकि हम क्रान्ति पूर्व भिन्न-भिन्न जातियों (nationalities) की पिछड़ी

१

शिक्षा शास्त्र और उसकी उपयोगिता का प्रश्न

बिना अनवरत अनुसन्धान के शिक्षा-प्रक्रिया जीवित नहीं रह सकती। सोवियत संघ की इस विषय में जागरूकता ने वहाँ की शिक्षा पद्धति को जीवित ही नहीं रखा है वरन् उसे सदैव अनुप्राणित रखने में सहायता की है। प्रत्येक इलाके के शिक्षा में अनुसन्धान तथा प्रयोग सम्बन्धी ब्यूरो हैं। इनमें प्रारम्भिक स्तर का कार्य होता है। इनकी खोजों या जानकारियों को समाचार-पत्रों द्वारा प्रसारित किया जाता है तथा उनसे लोगों को परिचय कराया जाता है। इस प्रकार के समाचार-पत्रों में "सोवेत्सकया पेदागोगिका" (सोवियत शिक्षा शास्त्र) प्रमुख है।

प्रत्येक शिक्षा के स्तर तथा विषय पर अनुसन्धान-कार्य चलता रहता है। १९४३ में शिक्षा शास्त्रीय विज्ञान अकादमी की स्थापना हुई जो इस दिशा में सबसे अच्छी तथा उच्च अकादमी है। आज इसकी वैज्ञानिक संस्थाओं में ५०० से ऊपर वैज्ञानिक काम करते हैं। इस अकादमी में अनुसन्धान कार्य के लगभग सभी विषयों की समस्याओं के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक रूप से सम्बन्धित

टेक्निकल शिक्षा की सुविधायें प्राज सोवियत संघ की विशेषता है। प्रक वृत्त के १२ स्थित खान खोदने और धातु साफ करने के लिये टेक्निकल स्कूल की वहाँ स्थापना की गई है। वहाँ लगभग १३०० छात्र अध्ययन करते हैं।

इस शिक्षा में भी सप्तवर्षीय योजना में वृद्धि के लिये निश्चय किया गया है। विशेष रूप से सन्ध्या कालीन और पत्र-व्यवहार वाले स्कूलों का अधिकतर कार्य विशेष रूप से बढ़ाने का प्रायोजन किया गया है।

मेदिनिस्की महोदय का कथन है यह सोवियत व्यावसायिक माध्यमिक संस्थायें, पूँजीवादी देशों से भिन्न हैं क्योंकि उन पूँजीवादी देशों की संस्थाओं में केवल धनी या प्रतिष्ठित लोगों के बच्चे ही शिक्षा-प्राप्त कर सकते हैं। साथ साथ उन देशों की शिक्षा में एक अन्य कमी भी है। वहाँ छात्र प्राथमिक शिक्षा समाप्त करके आते हैं तथा अपनी सामान्य शिक्षा को इन संस्थाओं में अधिक बढ़ाने का अवसर नहीं पाते। उन्हे तो केवल व्यावसायिक शिक्षा मात्र मिलती है। इस प्रकार उन्होंने सोवियत संघ की एक और विशेषता को विश्व के सामने रक्खा है। हमारे पास उक्त कथन के सत्य को जानने का कोई साधन नहीं है। हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि ऐसा अवश्य होगा अन्यथा दूसरे देश वाले इस कमी को अवश्य ही बतलाते।

यह माध्यमिक व्यावसायिक स्कूल (Technicums) सोवियत सांस्कृतिक मन्त्रालय के अधीन है। किन्तु यह मन्त्रालय केवल पढ़ाई-लिखाई की जिम्मेवारी मात्र लेता है। धन आदि की सहायता भिन्न-भिन्न मन्त्रालय करते हैं जिनके लिये छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है। केन्डल महोदय ने[1] अपना मतइन शिक्षा-संस्थाओं की शिक्षा पर देते हुए व्यक्त किया है कि यहाँ के छात्र विश्व को कम्यूनिस्ट की आँख से देखते हैं। उनके विचार से यह छात्र विश्व की खबरों से वंचित रक्खे जाते हैं। किन्तु आधुनिक समय में जब कि रूस में विदेशियों को पर्यटन की विशेष सुविधायें प्राप्त हैं, उनसे वहाँ के नागरिकों को मिलने भी दिया जाता है, आश्चर्य है कि सोवियत छात्र-छात्रायें विश्व के विषय में कुछ नहीं जानते या जानते भी हैं तो कुछ झूठ मात्र जो उन्हें पढ़ाया जाता है। किन्तु चूँकि इस कथन के शिकार स्वयं अमरीकी नागरिक भी हैं जहाँ प्रजातन्त्र में अविश्वास करने वाले को मनुष्य से भी हेय समझा जाता है तथा जहाँ उनके समाचार पत्र सोवियत खबरों को नमक-मिर्च मिलाकर छापते हैं; हम अपनी सम्मति को बिना प्रकट किये ही पाठक को अपने निर्णय पर पहुँचने के लिए छोड़ देते हैं।

1 Kandel, I. L.: *The New Era in Education*, p. 300.

इसलिये इस अकादमी ने शिक्षा-शास्त्र के Forums या आयोजन सन् १६५४ में ही प्रारम्भ कर दिया। इन Forums के नियम भी प्रकाशित हो चुके हैं जो इस प्रकार है[1]—

(१) इन सम्मेलनों के दौरान में शिक्षा, मनोविज्ञान तथा पाठन-विधि सम्बन्धी वास्तविक स्कूली समस्याओं पर विचार होता है।
(२) यह सम्मेलन वर्ष में एक बार होंगे तथा २ या ३ दिन होता है।
(३) शिक्षा में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अनुसन्धान के निबन्ध पढ़ने का अधिकार होता है।
(४) अनुसन्धान-विषय वही होंगे जो शिक्षा-शास्त्रीय संस्थान द्वारा निर्धा- होते हैं।
(५) यह विषय जन-तन्त्रों के शिक्षा मन्त्रालयों तथा शिक्षा-विभाग द्वारा प्रसारित किये जाते हैं।
(६) इन सम्मेलनों में भाग लेने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा अन्य विषयों के सुझाव दिये जा सकते है।
(७) कोई भी व्यक्ति जो विषय चुन लेता है अपने काम की रूप-रेखा अकादमी को भेज देता है। कई व्यक्ति भी एक ही समस्या पर काम कर सकते हैं।
(८) अकादमी के विभिन्न संस्थान उन विषयों पर सलाह देने का प्रबन्ध करते हैं।
(९) अकादमी के उपप्रधान की अध्यक्षता में ७ व्यक्ति इन विषयों के निबन्धों की जांच करते हैं।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न विषयों पर अनुसन्धान कार्य निरन्तर चलता रहता है। केन्द्रीय प्रबन्ध होने के कारण इन अनुसन्धानों तथा उनकी रिपोर्टों का प्रसार तथा सूचना अत्यधिक आसानी से हो जाती है। जहाँ केन्द्रीयकरण से नुकसान हैं वहाँ उसके सभी लाभ भी इस अकादमी के कार्य में पाये जा सकते हैं।

कहना न होगा कि भारतवर्ष में इस प्रकार के संस्थान हैं तथा केन्द्रीय सरकार आर्थिक सहायता द्वारा इस प्रकार के अनुसन्धान कार्यों को प्रोत्साहन

1 B. King : Russia Goes to School, p. 179.

इसलिये इस अकादमी ने शिक्षा-शास्त्र के Forums या आयोजन सन् १९४४ मे ही प्रारम्भ कर दिया। इन Forums के नियम भी प्रकाशित हो चुके हैं जो इस प्रकार है[1]—

(१) इन सम्मेलनो के दौरान मे शिक्षा, मनोविज्ञान तथा पाठन-विधि सम्बन्धी वास्तविक स्कूली समस्याओ पर विचार होता है।

(२) यह सम्मेलन वर्ष में एक बार होगे तथा २ या ३ दिन होता है।

(३) शिक्षा में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अनुसन्धान के निबन्ध पढ़ने का अधिकार होता है।

(४) अनुसन्धान-विषय वही होगे जो शिक्षा शास्त्रीय संस्थान द्वारा निर्धारित होते हैं।

(५) यह विषय जन-तन्त्रो के शिक्षा मन्त्रालयो तथा शिक्षा विभाग द्वारा प्रसारित किये जाते हैं।

(६) इन सम्मेलनों मे भाग लेने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा अन्य विषयो के सुझाव दिये जा सकते है।

(७) कोई भी व्यक्ति जो विषय चुन लेता है अपने काम की रूप-रेखा अकादमी को भेज देता है। कई व्यक्ति भी एक ही समस्या पर काम कर सकते हैं।

(८) अकादमी के विभिन्न संस्थान उन विषयों पर सलाह देने का प्रबन्ध करते हैं।

(९) अकादमी के उपप्रधान की अध्यक्षता में ७ व्यक्ति इन विषयो के निबन्धो की जाँच करते हैं।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न विषयो पर अनुसन्धान कार्य निरन्तर चलता रहता है। केन्द्रीय प्रबन्ध होने के कारण इन अनुसन्धानो तथा उनकी रिपोर्टों का प्रसार तथा सूचना अत्यधिक आसानी मे हो जाती है। जहाँ केन्द्रीयकरण मे नुकसान हैं वहाँ उसके सभी लाभ भी इस अकादमी के कार्य मे पाये जा सकते है।

कहना न होगा कि भारतवर्ष मे इस प्रकार के संस्थान हैं तथा केन्द्रीय सरकार आर्थिक सहायता द्वारा इन प्रकार के अनुसन्धान कार्यों को प्रोत्साहन

---

1 B. King : Russia Goes to School, p. 179.

२

भाषा का प्रश्न

सोवियत संघ की विभिन्न सफलताओं में से एक सफलता उसकी अपनी भाषा समस्या का हल है। कई भाषाओं वाले देशों के लिये वह हल विशेष रूप से आकर्षक सिद्ध हो सकता है। भारतवर्ष की अपनी भाषा-सम्बन्धी कठिनाइयाँ हैं, उसके हल भी हमारी सरकार ने खोजे हैं किन्तु पूर्ण सफलता अब भी एक दिवा-स्वप्न सी प्रतीत होती है। हमारे मत से भारतवासियों के लिये सोवियत हल अर्थ-युक्त सिद्ध होना चाहिये। इसका अर्थ नहीं है कि हमें सोवियत संघ की नकल करनी चाहिये। हमारा तात्पर्य केवल इतना है कि यदि यह हल हमारी अपनी समस्याओं पर कुछ प्रकाश डाल सके तथा किसी अन्य हल या बुद्धिमत्ता पूर्ण सुझाव की ओर ले जाने की क्षमता वाला सिद्ध हो सके तो उसकी उपयोगिता को सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिये।[1]

---

[1] इस विषय में हमारा विचार एक महान तुलनात्मक शिक्षा शास्त्री विक्टर कज़िन से मिलता जुलता है—"I am as great an enemy as anyone of artificial imitations, but it is mere pusillanimity to reject a thing for no other reason than that it has been thought good by others."

होता है चलता रहता है। म० दैनेको[1] के शब्दों में, "अकादमी के उद्देश्यों में सामान्य और विशिष्ट शिक्षा शास्त्र की समस्याओं का वैज्ञानिक विकास, शिक्षा शास्त्र का इतिहास, मनोविज्ञान, स्कूल सम्बन्धी सफाई तथा सामान्य शिक्षा-स्कूल में पढ़ाने के तरीके शिक्षा-शास्त्रीय विज्ञानों मे स्थायी पदाधिकारियों का प्रशिक्षण और देश में सार्वजनिक शिक्षा को प्रोत्साहन देना और शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान का लोगों में प्रचार करना आदि शामिल है।

"अकादमी मे आठ खोज-संस्थान, एक वैज्ञानिक शिक्षा-शास्त्रीय आर्य लेखागार, एक खिलौनों का और एक सार्वजनिक शिक्षा का संग्रहालय शामिल है। कुछ संघीय जनतन्त्रो में भी सार्वजनिक शिक्षा के संग्रहालय हैं।"

देश-विदेश की सहस्रो पुस्तकों से युक्त अकादमी का पुस्तकालय वैज्ञानिक कार्य-कर्ताओ तथा अध्यापको को विभिन्न विषयो तथा समस्याओं पर सलाह देता है। विदेशी शिक्षा-शास्त्रियो के विषय में अध्ययन तथा अन्य शिक्षा-संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित रखना इस अकादमी के विशेष काम हैं। यह स्कूल-सामग्री औजार तथा श्रव्य द्रव्य उपकरणो की तैयारी में यह अकादमी अपने प्रकाशन गृह से सहस्रों वैज्ञानिक कृतियाँ प्रकाशित कर चुकी है। प्रति-वर्ष शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन गोष्ठियो द्वारा अध्यापकों तथा अन्य लोगों का सहयोग तथा आलोचनायें प्राप्त की जाती हैं।

मनोविज्ञान संस्थान मे विषय मनोविज्ञान तथा बाल-मनोविज्ञान की विभिन्न समस्याओ पर व्यय होता रहता है। कुछ खोज के विषय इस प्रकार हैं, "नैतिक शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार", "स्कूल मे बौद्धिक प्रक्रियाओं का विकास" आदि। किसी किसी सस्थान में पाठ्यक्रम के दोष, शिक्षा का स्तर, अध्यापक-प्रशिक्षण आदि पर बहस होती है तथा सुधारों को कार्यान्वित करने की योजनायें बनाई जाती हैं। इन संस्थानों में अपने-अपने विषय से सम्बन्धित समस्याओं, खोजों, हलों आदि पर निबन्ध पढ़े जाते हैं। इन निबंधों को उचित पुरस्कार भी दिये जाते हैं।

उक्त शिक्षा-शास्त्रीय अकादमी इस बात की ओर सचेत है कि अध्यापकों द्वारा स्वयं अनुसन्धान होने चाहिये। अन्यथा कक्षा-कार्य सम्बन्धी समस्याओं के हल वास्तविक हल नहीं हो सकेंगे।

---

१ सोवियत शिक्षा के ४० वर्ष, पृ० ९४

मोस और अन्य पिछड़े लोग न केवल अपनी भाषा पर गये हैं वरन् उन्हें उच्च स्कूलों में जाने के लिये सुविधायें भी प्राप्त हो गई हैं। रूसी भाषा तथा साहित्य की अनिवार्य शिक्षा ने सोवियत संघ मे एकता की भावना उत्पन्न ही नहीं, दृढ़ भी कर दी है। जबकि क्रान्तिपूर्व रूस के एक कोने से तनिक दूर चलने पर भाषा की कठिनाई प्रस्तुत होने लगती थी आज वह कठिनाई वहाँ बिल्कुल समाप्त हो चुकी है।

सोवियत संघ की जनता अपनी दो या तीन भाषाओं के ज्ञान पर गर्व करती है—विशेष रूप से रूसी भाषा के ज्ञान पर। लेकिन इस काम मे रूसी भाषा विज्ञों तथा साहित्यकारों का बहुत बडा हाथ है। उन्होंने अन्य भाषायें पढ़ने में तथा उनके साहित्य को रूसी मे अनुवाद करने मे कभी भी हिचकिचाहट नही दिखाई। स्पष्ट है, इस कारण रूसी भाषा भी धनी हुई है तथा अन्य प्रान्तीय भाषा-भाषी व्यक्तियों में एक-दूसरे पर सन्देह तथा घृणा के भाव भी जागृत नहीं होने पाये हैं।[1]

सोवियत संघ कई राज्यों को मिलकर बना है। उन सभी राज्यों या जातियों (Nationalities) की भाषायें शिक्षा का माध्यम है। ऊपर हम देख चुके हैं कि इन माध्यम की संख्या ५६ है। किन्तु रूसी भाषा तथा साहित्य सभी स्कूलों में अनिवार्य है। कहना न होगा कि स्थानीय भाषाओं के उन्नत करने तथा उन्हें शिक्षा का माध्यम बनाने मे समय लगा, किन्तु आदर्श की ओर निरंतर प्रयास ने वह कार्य भी आज सम्पन्न कर दिया है।

मास्को जन-शिक्षा कामीसरियत ने कुछ आदेश अप्रैल १६२७ में दिये

---

1 Kontaisoff, E. : Reprint from Soviet Education, Vol. III, Oct. 1951, No 2. Basil Blackwell, Oxford.

"The aim seems to be a bilingual population proud of its own national achievements yet enjoying access to the wider world through Russian. In this connection, it should be borne in mind that even great Russian writers have not scorned the work of translating from other languages and modern soviet writers consider it part of their vocation. As a consequence, unusually good translations of both major European works and popular native songs and epics are available in Russian............A Shuckchi may read the Manas and a Karelian the works of Rustavelli in Russian."

देती है। हमारा विश्वास है कि आर्थिक उन्नति के साथ-साथ भारत में अन्य क्षेत्रों में भी उन्नति अवश्य होगी। लेकिन हमें अनुसन्धान कार्य तथा उसकी व्यवस्था के विषय में अन्य प्रगतिशील तथा धनी देशों से बहुत कुछ सीखना है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि कोई भी राष्ट्र आज के युग में बिना शिक्षा के सभी स्तरों को विकसित किये बिना प्रगतिशील नहीं हो सकता किन्तु इस कार्य में देश की स्थिति तथा समाज की आस्थाओं को ध्यान में रख कर अनुसन्धान कार्य करना आवश्यक है, इस विषय में लगभग सभी समझदार व्यक्ति एक मत होंगे।

सम्मेलन हुआ जिसमे मृतप्राय अरबी लिपि को वैज्ञानिक लैटिन लिपि द्वारा बदल दिया गया। परिणाम यह हुआ कि आज अपढ मुसलमानो की संख्या लगभग नही के बराबर है। आज उनकी राष्ट्रीय या जातीय संस्थायें तथा विश्व विद्यालय हैं। रूसी भाषा का अमर साहित्य उस भाषा मे अनुवादित किया गया। आज तो यह भी सम्भव है कि आंग्ल या जर्मन भाषा के नाटक भी ताशकंद में स्थानीय भाषा मे देखे जा सकते हैं। केवल रूसी भाषा का प्रयोग वहाँ की फौज में होता है, अन्यथा स्थानीय भाषाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

एक बात स्मरण रहे कि रूस में विदेशी भाषा माध्यमिक स्तर पर प्रारम्भ की जाती है। उसकी पढाई का स्तर भी काफी ऊँचा है। यह बात सत्य अवश्य है कि स्कूलों मे अध्यापन-सामग्री तथा ठीक रूप से प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या काफी है।

एक आंग्ल लेखक पोटर महोदय का कथन है[1] कि सोवियत संघ मे लगभग सभी कम्पनियों को रूसी भाषा का आवश्यकता पड़ती है। विशेष रूप मे प्रगति अथवा उन्नति के मार्ग पर अग्रसित होने वाले छात्र इस ज्ञान पर बहुत बल देते हैं। हम समझते हैं कि यह लगभग सभी राष्ट्रों मे होता है। ऐतिहासिक कारणों से बनी राजधानी तथा बहु-संख्यक लोगों की भाषा ही राष्ट्र भाषा का रूप लिया करती है। फ्रान्स मे भी पेरिस की फ्रेन्च ठीक समझी जाती है जबकि मारसेल की भाषा पेरिस की फ्रेन्च से विभिन्न है। इसी प्रकार स्वयं इग्लेंड के वेल्स (Wales) की भाषा पर अंग्रेजी छा गई है। प्रत्येक वेल्स नागरिक को आंग्ल भाषा का ज्ञान प्रगति के लिये अनिवार्य तथा आवश्यक सा प्रतीत होता है। इसलिये हमारे मत मे जो सोवियत संघ में भाषा समस्या का हल निकाला गया वह ऐतिहासिक कारण से आवश्यक तथा उचित है। उसकी सफलता हमारे लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र है।

---

1 Potter, Simeon : Language in the Modern World, p. 33, Pelican Series, 1960.
"Enterprising and enthusiastic students likewise discover that they can make little head way in their chosen courses of study unless they can assimilate with ease information they find in the text books, periodicals, dictionaries, and encyclopedias published by the State owned presses in Moscow".

राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता लगभग सभी देशों को होती है अन्यथा उसकी प्रगति तथा विकास दोनों ही ठप हो जाने की सम्भावना सम्मुख आने लगती है। ("The value of a common language for the whole country is therefore something which has been felt strongly in many places by many different people, most of all naturally by writers desirous of reaching a wide circle of readers. And where such a common language has not yet become an actuality, advanced minds feel the great inconvenience that come from the want of it and in some cases have consciously worked to bring a single language into existence[1].

सोवियत संघ की अक्तूबर क्रान्ति से पूर्व भाषा-सम्बन्धी समस्या गहन थी। बहुत से ऐसे इलाके थे जहाँ कोई लिखित भाषा न थी यद्यपि उनकी बोलने की भाषायें थी। कहीं-कहीं यदि लिखित भाषायें थी भी तो न तो उनका कोई उचित व्याकरण, कोष, साहित्य आदि ही था और न उनके विकास या उन्नति की कोई आशा थी। लेकिन आज उनकी दशा बिल्कुल ही भिन्न है। सोवियत संघ ने १९१७ के पश्चात् स्थानीय या प्रान्तीय भाषाओं में शिक्षा देने की व्यवस्था पर जोर दिया। जिनकी भाषाओं की कोई वैज्ञानिक वर्ण-माला या व्याकरण न थी, उन्हें वहाँ के भाषा-विज्ञों ने वर्ण-माला तथा व्याकरण दी। जिन भाषाओं के वर्णाक्षर कठिन तथा अवैज्ञानिक आधार पर बने थे उन्हें रूसी-लिपि देकर सुधारा गया। रूसी-लिपि तथा अन्य स्थानीय भाषाओं की शिक्षा ने सोवियत संघ के छात्रों के लिये ज्ञान का नवीन विश्व खोल दिया है। रूसी भाषा ने जिसका साहित्य क्रान्ति-पूर्व भी महान था, प्रान्तीय छात्रों में न केवल एकता का सूत्रपात किया है वरन् अपनी भाषाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है। सोवियत संघ में आज लगभग ५६ जन भाषाओं में शिक्षा दी जाती है। प्रान्तीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिया जाता है। जिन प्रान्तों (या आज की जातियों Nationalities) में उच्च शिक्षा संस्थायें न थी वहाँ आज हमें ऐसी संस्थायें पर्याप्त संख्या में दृष्टिगोचर होती हैं। बेलोरूस, आर्मीनिया, आजरबैजान और सोवियत् मध्य-एशिया के सभी जन-तन्त्रों में आज उच्च शिक्षा संस्थायें हैं। पुराने समय में चुकचास, एस्की-

---

1 Jesperson, Otto : Mankind, Nation & the Individual, p. 77, Allen & Unwin Ltd. 1946.

सप्तम् भाग

भविष्य की ओर

थे।[1] उन्होंने जातीय (Tribal) तथा राष्ट्रीय समूहों को चार भागों में बांटा। (१) पहले समूह में वह बिखरी हुई जातियां थीं जिनकी न कोई भाषा थी और न साहित्य। उनके लिये विज्ञान-अकादमी ने वर्णाक्षर, व्याकरण तथा पाठ्य-पुस्तकें आदि देने का कार्य सम्पन्न किया। किन्तु इस कार्य में काफी समय लगा। (२) दूसरे वह समूह थे जो एक स्थान पर रहते थे किन्तु उनकी न लिपि थी और न राष्ट्रीय संस्कृति। इन लोगों को मातृ-भाषा में शिक्षा देने का कार्य प्रारम्भ से ही कार्यान्वित किया गया। लेकिन माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के लिए उनका माध्यम रूसी रहा। इन भाषा तथा लिपि के विकास कार्य को रूसी विज्ञान अकादमी ने बड़ी ही तत्परता से पूर्ण किया। इस प्रकार मातृ-भाषा में प्रशिक्षण देकर शीघ्र ही अध्यापक उस माध्यम से शिक्षा देने लगे। (३) तीसरी श्रेणी उन राष्ट्रों तथा जातियों की है जिनकी भाषा, लिपि, संस्कृति, पुस्तकें आदि सभी कुछ वर्तमान थे। इस श्रेणी के स्थानों में प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा उन्हीं स्थानीय भाषाओं में दी जाने लगी। टेक्निकल शिक्षा का माध्यम भी स्थानीय भाषा रही। केवल उच्च शिक्षा के लिये वहां के छात्रों को रूसी या अन्य समीपवर्ती संस्थानों या विश्वविद्यालयों में जाना पड़ता है। उन सभी संस्थानों में वह भाषायें पढाई जाती हैं कि माध्यम रूसी रहता है। (४) यह अन्तिम श्रेणी उन जातियों की है जो एक निश्चित स्थान तथा इलाके में रहते हैं, उनकी अपनी भाषा, लिपि, व्याकरण, संस्कृति तथा ऐतिहासिक रीति-रिवाज हैं। उन लोगों के लिये शिक्षा का पूरी व्यवस्था उन्हीं की भाषा में है, उच्च शिक्षा सहित। ध्यान रहे रूसी भाषा सभी के लिये अनिवार्य है। डा० हन्स महोदय का कथन है कि इन कानूनों तथा आदेशों का परिणाम बहुत ही अच्छा हुआ है। जबकि १९१७ से पूर्व रूसी साम्राज्य के कुछ ही अ-रूसी व्यक्ति रूसी भाषा तथा साहित्य जानते थे आज उनकी संख्या तथा ज्ञान अगणित तथा अपरिमित है। इस प्रकार रूसी भाषा द्वारा सभी सोवियत संघ के नागरिक विश्व की खोजों तथा साहित्य को पढ़ कर आनन्द उठा सकते हैं।

उक्त आदेशों का सबसे अच्छा फल रूसी-मुस्लिम जनता पर हुआ है। उनकी संख्या ३ करोड़ के लगभग है। उन लोगों की भाषा अरबी तथा तारतारी भाषा का मिश्रित रूप था। १९२६ में बाकू में एक तुर्की तातार

1 Hans, N.: Comparative Education, pp. 56–58, Routledge &. Kegan Paul Ltd., 1951.

भविष्य की ओर

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली तथा उसकी भावी उर्वरता का का उपयुक्त अनुमान इस आधार पर लगाया जा सकता है कि उठते हुए समाज की बहुमुखी आवश्यकताओं को शिक्षित युवकों ने कहाँ तक पूरा किया, तथा कहाँ तक इसके लिए समाज से उन्हें सुविधाएँ मिली ? जीवन के स्वर में जिस शिक्षा-प्रणाली को गाना नहीं आता, वह बेसुरी है और राष्ट्र के युवकों पर बोझ है। सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने की कुशलता और क्षमता देने में सोवियत शिक्षा अत्यधिक सफल रही है। अचालीस वर्षों में ही ज़ार कालीन "जंगली देश"[1] अत्यन्त समुन्नत दिखाई देता है। हर जीवन क्षेत्र की दौड़ में रूसी युवक किसी अन्य देशीय युवक से पीछे नहीं है। यह यहाँ की शिक्षा का अक्षय शक्ति-स्रोत है। उन्नति के लिये सुविधाएँ देने में भी सरकार पीछे नहीं है। शिक्षा पर इतना व्यय कोई देश नहीं करता। और न रूस के इतिहास में कभी पहिले भी इतना खर्च हुआ है।[2]

---

१ लेनिन

२ निकिता ख्रुश्चोव : मंगल कल्याण की वृद्धि के लिये;
"मैं आपको याद दिलाना चाहूँगा कि सप्त वर्षीय योजना के कार्यकाल

विद्यालय के सामने कुछ बहुत बड़े सवाल हैं। जीवन के लिए नई पीढ़ी को तैयार करना है, समाजवादी समाज के लिए समाजवादी सिद्धान्तों से प्यार करना तथा श्रम को पवित्र समझना सिखाना है।[1]

समाजवादी सोवियत देश साम्यवादी समाज की ओर अग्रसर है। देश की सप्तवर्षीय योजना इसी दिशा में एक ठोस चरण है। इस योजना ने आर्थिक, राजनैतिक, विचारों तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में सही दृष्टिकोण अपनाने तथा योग देने में तत्परता दिखलाई है[2] इस भव्य योजना मे, महती आर्थिक तथा टैक्नोलॉजी के विकास की बात की गई है। इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि उत्पादक श्रम और शिक्षा में गठबन्धन किया जाय।[3] सप्तवर्षीय योजना उद्योगशालाओं, कृषि, विज्ञान तथा संस्कृति के तीव्र विकास मे एक ठोस चरण है।[4]

जनता की शिक्षा, विज्ञान तथा संस्कृति में विकास करने के लिए सप्त-वर्षीय योजना निम्न प्रमुख बातें लेकर चली हैं।

(१) नगर तथा देहात में सामान्य माध्यमिक विद्यालयीय शिक्षा विकसित करना।

(२) उच्चतर तथा विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा विकास के लिए सायंकालीन शिक्षा तथा पत्र व्यवहारीय शिक्षा प्रारम्भ करना।

(३) बोर्डिंग-स्कूल व्यवस्था को और भी अधिक विकसित करना क्योंकि बच्चों के विकास मे इन विद्यालयों का बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य रहता है। चौदह गुनी संख्या बढ़ाई जायगी।

उपर्युक्त योजनाओं का होना इसलिए आवश्यक हो चला है क्योंकि १९६५ मे, प्राथमिक तथा सप्तवर्षीय तथा माध्यमिक विद्यालय मे ३०००००० विद्यार्थियों (१९५८) के स्थान पर ३८०००००००–४०००००००० विद्यार्थी (१९६५) हो जायेंगे।

इसीलिए सप्तवर्षीय सार्वभौमिक अनिवार्य शिक्षा के स्थान पर अष्टवर्षीय हो जायगी। इन अष्टवर्षीय विद्यालयों मे अध्ययन-कार्यशालाओं[5] को संगठित

---

1 N. S. Khruschov : Seven year Plan.
2 George H. Hanna (Ed.) : Outline History of the USSR, p. 368.
3 Galkin : Training of Scialists in the USSR.
4 G. H. Hanna : Outline History of the USSR.
5 Study Shops.

परिशिष्ट

पुस्तकें जिनसे सहायता ली गई

1. Counts Lodge : *I Want to be Like Stalin*, Newyork.
2. Counts G. S. : *Challenge of Russia.*
3. Clemens Dutt (Ed) : *Fundamentals of Marxism-Leninism, Manual*, Foreign Languages Publishing House, Moscow.
4. *Education Committee* (Kabir) *Trends in Russian Education*, Ministry of Education & Scientific Research, Govt. of India 1957.
5. Fediavsky, Vera : *Nursery School & Parent Education in Soviet Russia*, Newyork, P. Dutton & Co. 1936.
6. George H. Hanna (Tr.) : *Outline History of the USSR*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1960.
7. General Statistical Board of the USSR, Council of Ministers—*Forty years of Soviet Power in Facts & Figures*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1958.
8. Galkin, K. : *The Training of Scientists in the Soviet Union*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1959.
9. Henry Nelson B. (Ed.) : *Modern Philosophies and Education 54th year book*, Part I, The University of Chicago Press, Chicago, Illinois.

यही कारण है कि सप्तवर्षीय योजना के द्वितीय वर्ष में ही देश कहीं से कहीं आ चुका है। १९६० में स्नातकों तथा इंजीनियरों की संख्या क्रमशः ६८०००० तथा १००००० थी। फैक्टरी में प्रति सप्ताह कार्य अवधि ४१ घन्टे तथा खानों में ३६ घन्टे थी। स्वास्थ्य पर असर डालने वाले कामों के करने में १८ घन्टे थी। यद्यपि जनसंख्या के अनुसार विश्व का तेरहवां भाग इस देश मे रहता है परन्तु विश्व के तमाम डाक्टरों का चौथाई भाग भी यहीं उपलब्ध है। हर १०००० लोगों के लिए इंगलेंड में तथा फ्रान्स में ११, संयुक्त राष्ट्र में १२ तथा रूस में १८ डाक्टरों की सेवाएं प्राप्त हैं[1] इसी प्रकार देश में ४००००० पुस्तकालय हैं और उनमें १५ अरब से अधिक पुस्तकें विद्यमान है।[2]

इस उन्नत और सुन्दर देश के विषय में एक बाहर से आए प्रेक्षक ने अपने भावों को इस प्रकार व्यक्त किया—"At that time, addressing the Sovietland,—I wrote, I came out of the darkness and was dazzled by your greatness. I came in winter yet I found you dressed as though for spring. That is because the spring of humanity has risen in your land."[3]

देश के निर्माण में शिक्षा के योग को सरकार भली-भांति जानती है। इतिहास में प्रत्येक युग में शिक्षा का अपना विशिष्ट रूप रहा है। विज्ञान तथा टेक्नोलोजी के उच्च स्तरों के ही कारण रूस ने स्पूत्निक तथा रॉकेट छोड़कर अन्तरिक्ष अनुसन्धान किए। यह निश्चित है कि किन्डरगार्टन में १९५८ की विद्यार्थी संख्या २,२८०००० से ४२००००० हो जायगी। अतः

में इन कार्यों (कारखानों, मकानों, सांस्कृतिक संस्थानों, और सार्वजनिक सेवा प्रतिष्ठानों) पर कर ब-करीब उतना धन खर्च किया जायगा जितना पूरे सोवियत सत्ता काल में खर्च हुआ है" पृ० ७३।

1 E. Kasimovsky : The Seven Year Plan, Year two, Soviet Woman, No. 1, 1961 p. 6.

2 Ralph Parker : Do you know that, Cultural Treasure of Moscow, Soviet Woman, No. 2, 1961, p. 11.

3 Alfred Varela (Argentine writer, member of the World Peace Council) A Letter to My Son, Soviet Woman, No. 2, 1961, p. 3.

26 Lewis, John (Ed.) : *Christianity and the Social Revolution*, London, Victor Gollanz Ltd. 1936.

27 Marx, K. : *A Contribution to the Critique of Political Economy*

28 Moos Elizabeth : *The Educational System of Soviet Union*, New-york, National Council for American Soviet Friendship 1950.

29 Medinsky Y. N. : *Public Education in the USSR*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1953.

30 Marx, K. & Engels, F. : *Selected Works*, 2 Vols, Foreign Languages Publishing House, Moscow.

31 Makerenko, A.S. : *A Book for Parents*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1952.

32 Makerenko, A. S. : *Learning to Live*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1952.

33 Makerenko, A. S. : *The Road to Life*, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1952.

34 Nicholas Hans : *Comparative Education*, Routledge Kegan Paul, Ltd.

35 Nicholas Dewitt : *School & Society*, In. Summer, 1960. pp. 297-300.

36 *Official U. S. Educational Mission to USSR*, Soviet Commitment & Education U. S. Deptt. of Health, Education & Welfare, Office of Education, Bulletin No. 16, 1959.

37 Parker Ralph : *Do you know that*, Cultural Treasure of Moscow, Soviet Women, No. 2, 1961.

38 Potter Simeon : *Language in the Modern World*, Pelican Series, 1960.

39 Pinkevitch A. P. : *The New Education in the Soviet Republic*, New York, John Day & Co. Inc., 1929.

40 Stalin J. V. : *Economic Problems of Socialism in the USSR*, Newyork, International Press, 1952.

41 Struve M. : *USSR—Facts and Figures*, Foreign Languages Publishing House, Moscow 1957.

किया जायगा तथा आवश्यक उपादान जुटाए जायेंगे। आयु के अनुसार सामाजिक उपयोगी कार्य कराए जायेंगे और पॉलीटेक्नीकल शिक्षा प्रदान की जायगी।

दशवर्षीय विद्यालयों (माध्यमिक) का पुनर्गठन किया जायगा। कई तरह के ग्रामीण तथा नागरिक माध्यमिक श्रम विद्यालय खोले जायेंगे। सामूहिक फार्मों तथा विशिष्ट कार्यशालाओं में प्रशिक्षण तथा श्रम की समन्वित योजना रखी जायगी। ताकि उन जरूरतों के हल के बारे में भी वह सुरक्षित हो सकें जो उस क्षेत्र से सम्बन्ध रखती है।[2]

ऐसे नगर तथा ग्राम-विद्यालय भी आरम्भ किये जायेंगे जो कार्य करते हुए भी माध्यमिक विद्यालयीय शिक्षा दे सकें। इसी तरह राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था तथा संस्कृति-विकास के लिए उच्चतर तथा माध्यमिक विशिष्ट शिक्षा के साथ-साथ विशेषज्ञों के प्रशिक्षण को समुन्नत करना तथा विस्तृत करना भी है।

इस प्रकार राष्ट्र के विकास के लिए निम्न योजना अत्यन्त स्पष्ट है।

(१) अध्ययन तथा कार्य साथ-साथ रखते हुए इन्जीनियरों को प्रशिक्षित करना।

(२) कृषि-विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना।

(३) उच्चतर शिक्षा में गणित, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान का विशेष अध्ययन एवं अनुसन्धान करना।

(४) एग्रोनॉमी, पशु हस्बेन्ड्री तथा टेक्नोलाजी में शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।

(५) चिकित्सा विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के स्तर का ऊपर उठाना।

इस प्रकार के वातावरण में निस्संदेह शिक्षा फलेगी और फूलेगी। एक ऐसे वातावरण और संस्कृति की सृष्टि होगी जो विश्व की कृत्रिम सीमाओं को न मानकर सभी की सम्पत्ति होने का दावा कर सकेगा। विज्ञान और टेक्नोलॉजी अपनी असीम शक्ति से मानव को दूसरे ग्रहों पर भी सैर करा सकेंगे और विध्वंस का इतिहास मानव समाज से निकल जायगा। आज के निम्न शब्द कल के इतिहास होंगे, "Our world is full of beauty, new riches are being created by labour and by love, generation after generation adds fresh beauty to the world we live in and advances our science and our culture."[2]

---

1 N. S. Khrushchov : Seven Year Plan.
2 Lidiya Kosmodemyanskaya : May the New Year Bring Peace to Every one, Soviet Woman, No. 1, 1961, p. 3.

10 Jesperson Otto : *Mankind, Nation and the Individual*, Allen and Unwin, 1946.

11 Johnson Hewett : *The Scialist Sixth of the World*, Oriental Publishing House, Benaras, 1944.

12 Johnson, William H. E. : *Russia's Educational Heritage*, Pittsburgh, Carnegi Press, Carnegi Institute of Technology, 1950.

13 Kontaisoff, E : *Soviet Education*, Vol. III, Oct. (Reprint) Basic Blackwell, Oxford, 1951.

14 King Beatrice : *Russia Goes to School*, William Heineman Ltd. for The New Education Book Club (International)

15 Kandel I. L. : *The New Era in Education*, Houghton Miflin Company U. S. A.

16 Kosmodemyanskaya Lubov : *May the New year Bring Peace to Every One*, Soviet Women, No. 1, 1961.

17 Kasimovsky, E : *The Seven Year Plan—Year Two*, Soviet Women No. 1, pp. 6, 1961.

18 ख्रुश्चोव नि० स० संयुक्त अध्ययन से मैत्री दृढतर होगी, 'सोवियत भूमि' नं० २३, दिस० १९६० ।

19 कूस्काया न० क० : शिक्षा, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को, १९५९ ।

20 कालिनिन म० इ० : कम्यूनिस्त शिक्षा के बारे में, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को, १९५७ ।

21 कुनाएव दी० : *कजाखस्तान और सप्तवर्षीय योजना*, 'सोवियत भूमि' पुस्तिका, नई दिल्ली, १९६० ।

22 ख्रुश्चोव नि० स० : सोवियत जनता के मंगल कल्याण में, 'सोवियत भूमि' पुस्तिका, नई दिल्ली, १९६० ।

23 Khrushchov, N.S. : *New Soviet Seven Year Plan*, Information Department of the USSR Embassy in India, New Delhi.

...ин : *Family and School in the USSR*, 1959.

V. I. : *Selected Works*, 12 Vols, Foreign Languages ...shing House, Moscow,

42 SWEEZY, PAUL M : *The Theory of Capitalist Development*, Principles of Marxian Political Economy, Newyork, Oxford University Press, 1946.

43 VARELA ALFREDO : *A Letter to my Son*, Soviet Women, No. 2, 1961.

44 ZINAIDA ISTOMINA : *Child Psychology*, Soviet Women, No. 1, 1961.

45 ज्वेरेव ए० जी० : सोवियत मेहनतकश जनता को मजूरी के अलावा और क्या-क्या मिलता है, 'सोवियत भूमि' पुस्तिका, १९५९ ।